कौन जाने तेरा स्वभाव



श्याम लाल दर

सतीश दर

श्याम लाल दर

कश्मीर की संत कवयित्री रूपभवानी साहिबा की दार्शनिक विचारधारा कश्मीर के दर पंड़ितों के लिए सदैव प्रेरणादायी रही है। संत कवयित्री के 'वाख़' जिन्हें आज से पांच दशक पूर्व श्री अलख साहिबा ट्रस्ट ने 'रहस्योपदेश' के रूप में संकलित किया था, साधना के उन गूढ़ रहस्यों का अनावरण करते हैं जिन्हें आत्मसात करने के लिए माता रूपभवानी साहिबा के प्रति अगाध श्रद्धा और आस्था की आज आवश्यकता है।

माता रूपभवानी ने इन वाखों में ब्रह्म, जीव, जगत और माया के विषय में विस्तार से जिज्ञासुओं को दृष्टि दी है। गुरु की महिमा, योग से आत्मा-परमात्मा का मिलन, माता रूपभवानी के ज्ञान का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

हिंदी के पाठक और जिज्ञासू भक्तजन माता रूपभवानी की इस महिमा से वंचित रहे हैं। सोलहवी सदी की इस संत कवयित्री ने तत्कालीन हिन्दू तथा मुस्लिम समाज को अपनी वाणी से विशेष दिशा दी।

कश्मीर में माता रूपभवानी के काल में संस्कृत, उर्दू और फारसी भाषा का व्यापक प्रचलन था। रूपभवानी साहिबा को उनके शिष्य पंड़ित बालह दर ने फारसी में पत्र लिखा था। माता अलखेश्वरी का जवाब वासकुर से पंड़ित बालह दर को प्राप्त हुआ था। यह पत्र एक ऐसा अनमोल दस्तावेज़ है जिसकी ओर भवानी साहिबा के भक्तों का ध्यान बहुत कम गया है। पुस्तक में यह पत्र पहली बार अनुवाद सहित देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया गया है। इससे जिज्ञासुओं को यह पत्र पढ़ने का सुअवसर प्राप्त होगा।

इस महान संत कवयित्री से संबंधित अनछुए पहलुओं को पहली बार इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है।

कश्मीर के दर पंड़ितों की वंशावली सोलहवीं सदी से आज तक उपलब्ध है। दर पंड़ितों के पूर्वज कौन थे? वह कहां से कश्मीर आए? इसकी प्रामाणिक जानकारी भी इस पुस्तक में उपलब्ध है।

वास्तव में दर पंड़ितों की वंशावली संकलन का श्रम-साध्य कार्य पंड़ित बलकाक दर ने डेढ़ सौ वर्ष पूर्व उर्दू में किया था। लगभग डेढ़ सौ वर्ष के बाद इस क्रम को आज तक पूरा करने का प्रयास भी पहली बार किया गया है। संकलन में अधिकांश दर पंड़ित परिवारों की सोलहवीं पीढ़ी तक वंशावली उपलब्ध है।

कौन जाने तेरा स्वभाव

कौन जाने तेरा स्वभाव

श्याम लाल दर
सतीश दर

श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (रजि०)
जम्मू-कश्मीर

प्रकाशक : श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (पंजी॰)
जम्मू व कश्मीर, तीर्थ नगर, बोहरी
तालाब तिलो, जम्मू

प्रथम संस्करण : 2000

आवरण : स्व॰ हरि प्रकाश त्यागी

मूल्य : 160/- रुपये मात्र

मुद्रक : एस॰ एन॰ प्रिंटर्स
एम-72, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

KAUN JAANE TERA SWABHAV
Shyam Lal Dhar / Satish Dhar

Price : Rs. 160/-

कश्मीरी निर्गुण संत कवयित्री
रूपभवानी की दार्शनिक विचारधारा और
कश्मीरी दर पंडितों की
प्रामाणिक वंशावली

माता रूपभवानी साहिबा
को
जिसकी कृपा से
अंधे को आंखें मिलीं
अज्ञानी को ज्ञान

स्नेह, प्रेम और मातृत्व की मूर्त,
स्वर्गीय श्याम रानी
(गंगा जी) को,
जिसने परिवार को माता श्री
रूपभवानी साहिबा के प्रति
आस्था का पहला सबक सिखाया

विषय-सूची

आमुख

कश्मीर की संत परम्परा का अपना गौरवमयी इतिहास है। इस इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है—संत कवयित्री रूपभवानी का अवतरण। रूपभवानी सोलहवीं सदी में कश्मीर की पवित्र भूमि पर अवतरित हुई। इस महान् संत कवयित्री के 'वाखों' का प्रकाशन वर्ष 1951 में श्री अलखेश्वरी साहिबा ट्रस्ट, श्रीनगर द्वारा किया गया। वर्तमान परिस्थितियों में रूपभवानी के वाखों का संकलन प्राप्त करना भी कठिन हो गया था।

माता रूपभवानी के वाखों का भावानुवाद जिज्ञासुओं और पाठकों को इन वाखों के दार्शनिक पक्ष से अवगत कराने के लिए किया गया है। रूपभवानी के शिष्य पंड़ित बालह दर द्वारा दिल्ली से माता रूपभवानी को लिखे गए फारसी पत्र की व्याख्या और अनुवाद भी इस संकलन में पहली बार प्रस्तुत किया गया है।

रूपभवानी के अनुयायी हैं, दर पंड़ित। इस पुस्तक के दूसरे खंड 'रूपभवानी की विरासत' में दर पंड़ितों की वंशावली भी प्रस्तुत की गई है।

आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व जब पंडित बलकाक दर ने दर पंडितों की वंशावली उर्दू में प्रकाशित की थी, तब शायद इस बिरादरी को इस बात का आभास भी न था कि एक दिन हमें घाटी से बाहर ऐसे हालातों में निकलना पड़ेगा कि हम अपनी पहचान भी धीरे-धीरे खो देंगे। घाटी में रहते जिस प्यार और विश्वास से हम अपनी बिरादरी से जुड़े हुए थे, वह प्यार और विश्वास एकदम छितरा जाएगा, इसका आभास किसे था।

पंड़ित बलकाक दर ने जिस तरह से दर पंड़ितों की वंशावली संग्रहित कर एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ प्रस्तुत किया, निस्संदेह दर बिरादरी उनके इस उपकार के लिए सदैव ऋणी रहेगी। बलकाक दर ने अपने संकलन की प्रस्तावना में बिरादरी से वंशावली संग्रहण के कार्य को जारी रखने का अनुरोध किया था। इसी प्रेरणा से वंशावली कार्य को आगे बढ़ाने का बीड़ा हमने उठाया। लगभग पांच सौ से अधिक नाम इस शृंखला में जोड़े गए। डेढ़ सौ वर्ष के बाद इस क्रम को आगे बढ़ाने का कार्य श्रम-साध्य था। इस संदर्भ में सूचना एकत्रित करने के लिए जिन माध्यमों का प्रयोग किया गया, वह सभी माध्यम कारग़र साबित नहीं हुए। जैसे भी जो सूचना प्राप्त हुई उसकी प्रामाणिकता जांचने के बाद पुस्तक में शामिल कर लिया गया।

पत्र-व्यवहार के माध्यम से प्राप्त सूचना सर्वाधिक संतोषजनक रही। यह पुस्तक वंशावली संबंधी कोई अंतिम दस्तावेज नहीं है। वंशावली तैयार करने के इस क्रम में बिरादरी के बहुत से दर परिवारों का उल्लेख किया जाना अभी शेष है। जिसका प्रमुख कारण अधूरी जानकारी प्रेषित करना है। हमें पूर्ण विश्वास है बिरादरी के पास यह पुस्तक पहुंचने पर हमें वंशावली संबंधी और जानकारी प्राप्त होगी। पहले संस्करण में त्रुटियों के लिए क्षमा याचना सहित आगामी संस्करण के लिए सुझाव आमंत्रित हैं। यह कार्य अधूरा रहता यदि दर बिरादरी अपना सम्पूर्ण सहयोग न देती। जिन महानुभावों ने अपने वंश से संबंधित सूचना प्रेषित की है उनका उल्लेख आभार सहित संबंधित पृष्ठ पर कर दिया गया है।

हम आभारी हैं श्री अलख साहिबा ट्रस्ट (रजि.) के प्रबंधकों और सुधी विद्वान् सदस्यों के जिन्होंने हमारे इस प्रयास को सराहा तथा संकलन ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित करने पर सहमति व्यक्त की।

सहयोग और सुझावों के लिए विशेष रूप से आभारी हैं पत्रकार श्री मनमोहन शर्मा और अमरावती (महाराष्ट्र) के फारसी विद्वान् अलहाज-वली-उर-रहमान सिद्दीकी के जिनके सहयोग के बिना पुस्तक अधूरी ही नज़र आती। भाई संसार चंद शर्मा, मुद्रक, इस कार्य के परोक्ष रूप से प्रेरक भी रहे। उनका आभार व्यक्त किए बिना यह यज्ञ सम्पन्न नहीं माना जा सकता।

अंत में, सूचना एकत्र करने के इस लंबे सफर में हम अकेले जरूर निकले हैं पर इस आशा के साथ कि आगे की यात्रा में बिरादरी के और लोग जुड़ते जाएंगे और यह प्रयास समय के साथ और अधिक सार्थक व सदुपयोगी बन पाएगा।

माघ (कृष्ण पक्ष) सप्तमी, 2000

— श्याम लाल दर
— सतीश दर

2

रूपभवानी का संक्षिप्त जीवन-परिचय

श्री रूपभवानी का जन्म ईस्वी सन् 1621 को ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन पंडित माधव जू दर के यहां हुआ। पंडित माधव जू दर के घर इस कन्या का जन्म भी महामाया शारिका भगवती के वरदान स्वरूप हुआ था। किंवदंति है कि माधव जू दर प्रति दिन हारी पर्वत परिक्रमा के लिए जाया करते थे। माता शारिका ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर माधव जू दर को 'वर' मांगने के लिए कहा। माधव जू दर ने माता शारिका को अपने यहां जन्म लेने का विनम्र अनुरोध किया। जिसे देवी ने स्वीकार कर लिया। तदनुरूप पंड़ित माधव जू दर के यहां माता शारिका ने कन्या के रूप में जन्म लिया।

बाल्यकाल

पंडित माधव जू दर ने अपनी पुत्री का नाम 'रौफह' रखा जिसे कश्मीरी भाषा में 'चांदी' कहते हैं। रौफ बचपन से ही कुशाग्र बुद्धिवाली थी। हर काम को, जो छोटे बच्चों को उन दिनों करने को दिया जाता था वह बुद्धिमत्तापूर्वक सम्पन्न कर लेती। छोटी आयु में ही उसने संस्कृत, फारसी और कश्मीरी (शारदा) भाषाओं पर अधिकार पा लिया था। अपने पिता माधव जू दर के साथ वे संतों-महात्माओं के समागम में जाती रहीं। उन्होंने अपने पिता के निर्देशों के अनुरूप तीन वर्ष की आयु मे ही 'ओम नमः शिवाय' का जाप करना शुरू कर दिया था। 'रौफह' ही आगे चलकर रूप भवानी के नाम से विख्यात हुई।

विवाह

तत्कालीन परम्पराओं के अनुरूप श्री रूपभवानी साहिबा का विवाह छोटी उम्र में ही हब्बाकदल के समीप सप्रू परिवार के हीरानंद सप्रू से कर दिया गया। पारिवारिक बंधनों में रूपभवानी अधिक देर तक नहीं रही। अन्ततः पिता का घर तथा ससुराल छोड़कर रूपभवानी साहिबा ने विभिन्न स्थानों पर घोर तपस्या की। चश्मा साहिबी, वोतशन (मनिग्राम), लार, वासकुरा तथा श्रीनगर वह पवित्र स्थल हैं जहां रूपभवानी साहिबा ने अपनी साधना यात्रा सम्पन्न की।

ईस्वी सन् 1721 तदनुरूप विक्रमी संवत् 1777 के माघ महीने की कृष्ण पक्ष सप्तमी को रूपभवानी साहिबा ने अपने जन्म स्थान देदूय मअ़र (ख़ान काई शोक्ता) में शरीर त्याग दिया।

3

रहस्योपदेश के विषय में

माता रूपभवानी के 'वाख़' शारदा लिपि में श्रेष्ठ तथा दीक्षित, आर्थिक रूप से सम्पन्न दर परिवारों के पास ही थे। इन वाखों को रहस्य के रूप में पढ़ा जाता रहा है। इनका सर्वप्रथम प्रकाशन 'देवी पूजा' नाम से वर्ष 1927 में पंडित केशव भट्ट द्वारा 'दर रूपभवानी वाक्य मंजरी' में किया गया था।[1]

रहस्योपदेश माता रूपभवानी के जन्म दिवस और माघ सप्तमी को वार्षिक श्राद्ध पर हर वर्ष पढ़ा जाता है। 1934 में श्री अलख साहिबा ट्रस्ट अस्तित्व में आया। इस ट्रस्ट ने माता रूपभवानी के साधना-स्थलों के रख-रखाव तथा अन्य संबंधित कार्यों को अपने हाथ में लिया। इसमें पंडित सतलाल जू दर पुत्र श्री प्रसाद जू दर, स्व. पंडित रघुनाथ दर पुत्र श्री नाथ जू दर, स्व. पंडित केशव जू दर, स्व. श्याम सुन्दर दर पुत्र ईश्वर जू दर, प्रसाद जू दर (रैनावारी निवासी), पृथ्वीनाथ दर पुत्र लक्ष्मण जू दर, लक्ष्मण जू दर पुत्र श्री शिवकाक दर, तारा चंद मत्तू पुत्र श्री अमरचंद मत्तू ने वर्ष 1934 के बाद माता रूप भवानी से संबंधित उपलब्ध पाण्डुलिपियों को संग्रहित करने का कार्य किया।

यह दल सर्वप्रथम मट्टन (मार्त्तंड) गया और वहां पंडितों [2] से मौलिक आलेख एकत्र कर, बड़गाम में स्वामी नंदलाल से दूसरा आलेख प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त 'सत्थू' के पंडित गोविन्द जू हुक्कू से तथा वासकुरा के प्रसाद जू मत्तू से भी इस दल ने रूपभवानी के वाखों के मौलिक आलेख प्राप्त किए। रूपभवानी साहिबा के वाख कश्टवाड़ में श्रीकृष्ण दर सुपुत्र श्री हरिराम दर के पास भी थे। वासुदेव पिंगलेना ने भी वाखों का आलेख ट्रस्ट को सौंपा था।

राय बहादुर श्याम सुन्दर दर व इलाहाबाद हाई कोर्ट के माननीय न्यायाधीश इकबाल कृष्ण दर परिवार से भी इस संदर्भ में सामग्री प्राप्त कर ट्रस्ट ने हरभट्ट शास्त्री को संशोधित करने का अधिकार दिया। इसके बाद पुरातत्त्व विभाग के तत्कालीन अध्यक्ष पंडित मधुसूदन कौल साहिब (मलयार निवासी) तथा पंडित महेश्वरनाथ गुर्टू राज़दान (बडयार निवासी) के पास उपलब्ध पांडुलिपियों को भी ट्रस्ट ने प्राप्त किया। तत्पश्चात् ट्रस्ट के तत्कालीन सदस्यों तथा माता रूप

---

1. सन्दर्भ : डाटअर्स आफ़ वितस्ता : प्रेमनाथ बज़ाज़
2. इन पंडितो में निरंजन जू खर, गोविन्द जू काचरू और अमरनाथ सिद्धा प्रमुख थे।

भवानी के विद्वान भक्तजनों ने मिलकर हरभट्ट शास्त्री के सहयोग से अंतिम पांडुलिपि तैयार की जिसे वर्ष 1951 में अलख साहिबा ट्रस्ट के तत्वावधान में डॉ॰ शिवनाथ शर्मा ने सम्पादित कर प्रकाशित करवाया। यह पुस्तक देवनागरी लिपि में मुद्रित करवाई गई। ट्रस्ट की हार्दिक इच्छा थी कि इन 'वाखों' का हिंदी अनुवाद भी किया जा सके, दुर्भाग्यवश पंडित हरभट्ट शास्त्री के निधन से यह कार्य संभव न हो पाया।[1]

●

1. यह सूचना डॉ॰ जानकीनाथ दर महा प्रबंधक तथा संस्थापक सदस्य श्री अलख साहिबा ट्रस्ट, जम्मू ने एक विशेष भेंट-वार्ता में प्रदान की है।

4

रहस्योपदेश से

रहस्योपदेश श्री रूपभवानी साहिबा के गुरुक्रम में दिए गए उपदेशों का संकलन है जिसे आज से पांच दशक पूर्व श्री अलखेश्वरी साहिबा ट्रस्ट, नवाक़दल, श्रीनगर (कश्मीर) ने संकलित कर प्रकाशित करवाया था। इन पद्यों में रूपभवानी साहिबा ने कर्म, उपासना और ज्ञान का सदुपदेश दिया है। इस रहस्योपदेश का यथा संभव भावानुवाद भक्तजनों के लाभार्थ प्रस्तुत है।

रहस्योपदेश का सार

1. ज्ञान प्रदान करने वाले गुरु का नाम परम बह्म के समान है।
2. ब्रह्म ज्ञान से भौतिक संसार स्वतः अदृश्य हो जाता है।
3. ईश्वर का नूर हर मोती में चमकता है।
4. ईश्वर ही सत्य तत्त्व है, जिसने पंचभूतों को मिलाकर जीव का निर्माण किया।
5. माया से मन को मुक्त रख कर ही आत्मज्ञान प्राप्त हो सकता है।

ओ३म्

निर्वाण दशश्लोकी

श्री गुरवे नमो नमः।

सहस्र सर्वत्र व्यापी स्वहृथ् विचार्यम्
बहुबल संबाहु एकतं स्वयंबू परमाकारी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम्गती ॥1॥

अनंत, सर्वत्र विराजमान, स्वयं देदीप्यमान, सर्वशक्तिमान, एक मात्र व्यापक आकार वाले ईश्वर की रचना अपार है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी मिलती है।

शुद्ध युक्त-मूलादारी क्वण्डली मण्डली गौरी।
स्यद्द अर्थ सूक्ष्मू सुष्वप्ती चक्र विरक्त शान्तादारी।
ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ॥2॥

शुद्धता का प्रतीक मूलाधार है। जिसके नीचे कुंड़िलिनी है। कुंड़िलनी के मध्य गौरी विराजमान है। सूक्ष्म सुष्वप्ती का सीधा अर्थ अलौकिक शांति है। ईश्वरीय तुर्यातीत स्थिति परम आनंद स्वरूप है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परम गति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी मिलती है।

तद् रूपमयी तत्परमगती स्थानी प्रवाही।
गति गट् पूरनी छूचदा देह् तृपितं
समर्थ् स्वामी परमार्थ् निदानम्।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम्गती ॥3॥

उस स्वरूप से ही परमगति प्राप्त हो सकती है। इस गति के प्रवाह से पूर्णमासी की रौशनी की तरह अन्धकार दूर हो सकता है। समर्थ स्वामी और परमार्थ निदान कर सकता है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी मिलती है।

उपनिषद् पारिजाता अख्य्य् फल् एक्
अर्थी सद्ग्वूर योगी अदेहो पुरानम्।
बहु तीजुवानी सुशीतल् सुदर्शन्
निनायु अग्रायु परम् दीफ् प्रसन्नो ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम्गती ॥4॥

उपनिषदों का ज्ञान पारिजात वृक्ष के अलौकिक फल की भांति परम आनंद प्रदान करने वाला है। यह अत्यंत देदीप्यमान, संतोषदायी तथा तेज प्रदान करने वाला है। इससे परम आनंद, दीर्घायु और सम्पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होती है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी भी मिलती है।

पवित्र नेत्र पश्यत मुखी अन्तर्
बाहो बहु-दनाडी असंख्य कांमू कर्त्।
यिहुय् राज़-यूगी दाता पिता सुय,
सर्व कांख्या सु अर्थ पूरनी
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य्-तती परम् गती ॥5॥

पवित्र नेत्रों से अन्तर्मन का सुख देखा जा सकता है। षट्चक्र सिद्धी असंख्य कार्य करवा सकती है। वही राजयोगी है, दाता और परम पिता भी वही है। 'वह' सभी इच्छाएं पूर्ण करने वाला तथा फल प्रदान करने वाला परम पिता है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी भी मिलती है।

निर्लज्जा रमनू परिरूफ् निदारा
सृष्ट थ्यथ् संहारी प्रलय च्यथ्।
अदृष्टो अग्रन्थो निज़ानो प्रसन्नो
आदिदीव तथ् निहानो निष्कल थ्यररूफ ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम्गती ॥6॥

लज्जाबीज के बिना जीवन की गतिशीलता, भौतिक सुखों से मुक्ति का साधन है। सृष्टि का सृजक, पालक और संहारक तथा प्रलयकारी ईश्वर अदृष्ट, अग्रन्थी, मूक प्रसन्नता देने वाला है। आदि देव अनंत है तथा कोई भी साकार रूप ले सकता है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी भी मिलती है।

लुत्र वित्र न आसा न गुत्री न बाशी
न कुली न कृत्यं महानन्दरूम्।
शयुम्-थान् वासी आदि सर्वमध्यं
जिता संन्यासी ब्यन्-बिन्दु-नादी
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥7॥

न सगे-संबंधी हैं, न गात्र, न किसी कुल से संबंध है। उसके लिए किसी कार्य की आवश्यकता नहीं। वह महा आनंद स्वरूप है। उसका स्थान षट्चक्र के मध्य है। नाद-बिन्दु के परिक्षेत्र से बाहिर विजयी सन्यासी है।

भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी भी मिलती है।

न जाया न जन्मी दग्द्कर्मकाण्डी
यथा शान्तबस्मी अरूपा स्वरूपम्।
सूह सर्वत्र-सुखी अदेहो समादि
अमोहसावदानं तथ निष्कल निराकार ॥
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परमगती ॥8॥

न पैदा हुई, न विवाह हुआ, सभी कर्म-परिणामों को स्वाह कर दिया। शांत भस्म की भांति स्वरूप अरूप सा है। वही सर्वत्र सुखी है जो शरीर की कल्पना किए बिना समाधिस्थ है। ईश्वर के निराकार रूप का मोह त्याग कर सावधानी पूर्वक भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी भी मिलती है।

अहंत्व-ममता गलिथ् थ्यथ् प्रलय ना आसे
थियु न आसि-मीलिथ् कवलदल् जलबिन्दु।
मध्य् आकाशी कदाचित् ब्रछ् ना आसे
लगि न-त क्या वाचि़ फला रस ग्वनी।
शिला ज़ल सग् अग्न दाह बस्मो
साद् ताय् पसमु सर्व-अन्तर्-सृष्टी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम गती ॥9॥

अहं—"मैं" समाप्त करके कोई प्रलय नहीं होता। जिस तरह से कमल पर जल-बिन्दु नहीं रूकते और मध्य आकाश में वृक्ष नहीं बढ़ सकता, और रस युक्त फल नहीं हो सकते शिला से जल नहीं सोखा जा सकता और भस्माग्नि प्रज्ज्वलित हो सकती हैं तथा तप और साधना से सर्व अन्त-र्सृष्टि का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है और निर्वाण के रहस्य की जानकारी मिलती है।

वेदवाख-अर्था अमृतनदी संप्रीता
अनेक प्रवाही समनय् षोडशचन्द्र कल्।
स पण्डिता समदर्शगनी अर्चनीदीव्
सु-निर्मल तोत्री सथ् तव पाठि्।
सर्वत्र जगद् ग्वरु सेवा अन्नतपूजनी एक
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान रहस्य् तती परमगती ॥10॥

वेदमंत्रों का अर्थ है—अमृत रस का पान। विभिन्न प्रवाह चन्द्रमा की सोलह कलाओं के समान है। पंडित वास्तव में वह है जो सभी को समान दृष्टि से देखता है। वही पूज्यनीय और सर्वत्र जगतगुरु है जो स्त्रोत का पाठ करता है तथा अन्नत भाव से सेवा करता है। भीतर मन पर दृष्टि डालने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है तथा निर्वाण के रहस्य की जानकारी मिलती है।

॥ निर्वाण दशश्लोकी समाप्त ॥

वाक्य-मंजरी

ओम् ग्वर अन्तर् तथ् निर्मलम्
शद्धं अत्यन्त विद्याधरम्।
लल्-नाम लल् परमा ग्वरम्
शिव-माधव नाहं परं ब्रह्म सोहम् ॥1॥

ओम! गुरु नाम पवित्रता और शुद्धता का सार है। लल्लेश्वरी का नाम परम गुरु लल्लेश्वरी से भी अधिक महत्त्व का है। परम शिव और गुरु माधव का नाम एक समान है। मैं नहीं हूं—जो सर्वोच्च है वह परमब्रह्म है, वही मैं हूं।

कृपा करे सर्व रूगा हरे
ज्ञानी छ़ाल फिरे तान-तान व्यसरे।
समादि-देह समरे सयि अग्नवतूरू
अखंड यज्ञ करे अग्न प्रज्वाले।
गीता पडे ब्वय् चे़ने कपाल मूचे़।
गूपाल जी नाट्य करे गूपी-सहाय् ॥2॥

ईश्वर कृपा सब रोग हर लेती है। ज्ञानी, ज्ञान अर्जित कर तन की निढ़ालता महसूस करे। देह समाधिस्थ कर अंग-अंग यज्ञ में होम करे। अखंड यज्ञ कर अग्नि प्रज्ज्वलित करे। गीता पढ़कर सर्वस्व न्यौछावर करे कुछ इस तरह जैसे गोपाल जी (श्रीकृष्ण) गोपियों के साथ नृत्य करते हैं।

युस हुमसूय् मदुरस ग्ययि कनि दिये
कन्द् हुहे खंड हुमि पननु दीह।
श्रीफल ज़ाफल् सुफ़ल ह्यये
मूरिथ शेर नैवेद्यस् ज़य् ॥3॥

जो यज्ञ-अग्नि में घी के स्थान पर जीवन की सरसता होम करे, मिश्री और चीनी की जगह अपना शरीर, नारियल और 'बेलफल' के स्थान पर अपना सिर अर्पित करे, वास्तव में वह शेर प्रसाद के रूप में पूर्ण विजय-श्री हासिल करता है।

समिव् त्र्याकरन् कि-न् अकुय् ब्वय्
पान-ति ब्वयि केंह् यिहुय् अकुय्।
यज्ञस् ब्यह्ये-त्त बस्म कियवे
अंग न ब्वयि-केंह् आंगन् द्राव् ॥4॥

तीन कारण (ब्रह्मा, विष्णु और महेश) इकट्ठे हुए हैं या एक मैं ही हूं। स्वयं भी मैं ही हूं या वही एक हैं। यज्ञ में बैठे और स्वयं को भस्म करे। अंगों के भस्म करने से मुक्ति की राह प्रशस्त हो जाती है।

पाता-छ़ाल फीरिथ् ताँ खाडुम्
म्यचि़-त कज़्न मन्जि़ अनुम् पय।
अद नद् वुदुम्-त गल-मद प्यवम्
प्रबातुं साथ स्वथु प्रज़ालु-ताँ ना किंह् ॥5॥

आकाश पाताल छान कर मैंने उसे ढूंढ़ा। मिट्टी तथा पत्थर के बीच से उसका पता ले आई। दैनिक पूजा अर्चना करती रही और मुझे अमृत रस पीने को मिला। प्रभात के सूर्य के समान सत्य चमकता है—इसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

हिज़ि अनि पाताल गगन गमे
मूरत् ना मूरत् पाँच तत्त्व्।
चीतन मले शून्य तिह् गले
शन वूनिय सा छयस सत् ॥6॥

धीरे-धीरे (साधक) पाताल से गगन की ओर पहुंच जाता है। मूर्त और अमूर्त पांच तत्वों से ऊपर। चेतनावस्था भी शून्य के समन्दर में विलीन हो जाती है। चेतना की छः दशाएं भी वस्तुतः परम सत्य है।

आसे ब्वये न–आसे पान्
नासे ग्रास करे पवन्।
रस् कासे ना किंह् फासे
ना सीर काँह् आँ सीर ब्वय् ॥7॥

मैं ही हूंगा या स्वयं नहीं हूंगा। न तो पवन ग्रास कर सकती है ना ही कोई कारण पकड़ सकता है अथवा फांस सकता है। और कोई रहस्य नहीं है असली रहस्य तो मैं ही हूं।

द्रायस्-त् न्येरवंनु आवह्यम् ज़ंगे
च़य न-त् कारुन् मंगे कस्।
रङ्गा रङ्गी गुल् फ्वलिह्यम् अङ्गे
म्य न-त ब्यय च्यत्थ् च़यङ्गे कस् ॥8॥

घर से निकली तो शुभ मुहूर्त की तरह मेरे स्वागत के लिए आया। यदि तू नहीं है तो किससे क्या मांगूं। मेरे अंग रंग-बिरंगे फूलों से खिलने लगे। मुझे नहीं तो और किसको इससे प्रसन्नता हो सकती है।

पदवी विना मा त्राव् पांदू
        वादा पूरख् आद् छु वासा।
ब्रकनुं नाबद् ग्रकन् खासिय्
        परम् पदय् परमानन्द् हासिल् छुह् ॥9॥

पदवी (सत्त, चित्त, आनंद) को प्राप्त किए बगैर आगे न बढ़। परम पिता परमेश्वर का वास वहीं है। यही वास्तव में मीठे प्रसाद स्वरूप है। इसी से परम पवित्र परमानन्द की प्राप्ति हो सकती है।

रूपाय् ता यिह आयिय् वरा
        नरा निरालम्बा रूफ्।
कृपा पर आनन्द जान् वरा
        अवतार रूम-रूम-रूफ् ॥10॥

रूप (भवानी साहिबा) उससे ब्याही गई जिसका निरालम्ब रूप है। इस सान्निध्य से आनन्द स्वरूप की कृपा प्राप्त हुई और यह अवतार रोम-रोम में नज़र आया।

स मुद्र प्याल्-त मदुर वासन्
अवय क्या सन् मङ्ग तय्।
ज्ञान रूप्-त शून्या आसन्
आसुन् न-आसुन सूतिय् छुह् ॥11॥

प्याला तो मधुर मिठास से भरपूर है। इसी कारण तो मांग रही हूं। ज्ञान रूप तथा शून्य का आभास वस्तुतः 'नहीं होना' अथवा 'होना' है। नहीं होना भी होने के समान है।

यवय् ध्यान बकूचिश् करे
तवय् ज्ञान आदरे पान्।
यवय प्याल बसूमूय करे
तवय लय सुमारे स्मरे पान् ॥12॥

जब ईश्वरीय ध्यान प्रदान होगा, तभी शरीर ज्ञान का वरण कर सकता है। जब स्वयं को भस्म करेगा तभी सुधार होगा व अपना आप सवरेगा।

युस तौरव् त्रावि-त मोख् मिलावे
प्रयना प्रयम लागे प्रए्।
वथरि ज्ञान-त पान् तलाडे
शून्यस शून्या सूत्य मिलावे ॥ 13 ॥

जो इच्छाओं को छोड़कर मोक्ष की ओर बढ़े और ईश्वर कृपा की अत्यंत प्रेम और स्नेह से प्रतीक्षा करे, शरीर को संयमित कर ज्ञान को अंगीकृत करे, वही 'शून्य' को 'शून्य' के साथ मिलाए।

स्वर रंत्रावि-त त्रहा ना मङ्गे
तीर् लायि-त-त्रावे सङ्न।
शेरे गङ्ग-त् न्यथूय नावे
द्रह् पाथि-त अर्जुम ब्रोंह् ॥ 14 ॥

स्वर छोड़ कर पानी नहीं मांगता। तीर चलाने के बाद साथ छोड़ दे। गंगा-जल शारीरिक शुद्धि का साधन है। दोनों तरफ से ही आगे बढ़ने का भ्रम है।

शून्याह अंशा आयाम् अथे
गंज् सुमारुम् तवय् सूत्य
यव-सूत्य ज़न् व्यपदावुम्
तियू ठहरावुम् मनस्-सूत्य ॥ 15 ॥

शून्य का एक अंश मेरे हाथ में आ गया। उससे मैंने खजाना इकट्ठा किया। उस शून्य से जो पैदा हुआ उसे मन के भीतर ठहरा दिया।

ग्वारिथ समूरिथ् शून्या खांडुम
पारुद मारुम तवय्-सूत्यय्।
पंच-अग्ना लाल चड़ावुम्
ग्वाश् प्रज़ालुम तवय-सूत्य ॥ 16 ॥

सोच समझ कर मैंने 'शून्य' खोज निकाला। इसी के साथ मैंने चंचलता को भी समाप्त कर दिया है। पंच-अग्नि प्रज्ज्वलित कर मैंने प्रकाश फैला दिया।

न क़ुरुम रुत् न यंछ ज़ानुम
जि़ रुतुय न-त रुतू किंह क़ुरुम नाव।
मूद मुतुय दीह् संदारुम
न-त् ज़ीवन्तु मारु माव् ॥ 17 ॥

न कुछ अच्छा किया न ही इच्छाओं के बारे में जाना। मैंने मृतात्मा में प्राण फूंक दिए और हम जिसे जीवित मानते हैं मैंने उसे मार दिया है।

आगर्-फीरिथ् ताय् ग्रज़ोम्
वुगवात्र् डूरुय सगावु माव्।
ओरय् कृपा तिह् आलम् बरुम्
योड् किंह् न स्वरुमाव् ॥ 18 ॥

ईश्वर साधना की तेज़ बहती धारा के कारण स्रोत के पास पहुंच कर वह परिवर्तित हो गया। उसकी कृपा से आलम भरा पूरा हो गया। इस ओर से कुछ भी योगदान नहीं हुआ।

प्रबा ती-ज़य व्वन्दि आदरुम्
रूम-रूम ज्योथ् तरूमांव।
कृष्णा रूपी ब्रह्मा स्वरिथ्
स्मरिथ् विष्णु महेश्वरा ॥ 19 ॥

दिव्य-ज्योति से भीतर मन प्रज्ज्वलित किया। रोम-रोम ज्योति से जगा दिया। कृष्ण रूपी ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर का भी पूजन किया।

ग्वर-म्वंखि ध्याना ध्यियिरे
चरणा ह्रदय कमल।
तुल पवन् मूल शून्या
ऊर्ध्वमुखी गगन् मण्डल् ॥20॥

गुरु के शब्दों का ध्यान करें। उनके चरण ह्रदय कमल में रखें। शहतूत के वृक्ष को हवा और जड़ को शून्य सम्भालता है। उपर रहस्य खोलने के लिए गगन मंडल है।

नाना-रंग शाख़ च़तुर्वीद्
पानुय् मान् तह् नद् सग़वान्
नाना-प्रकार ध्यानुक् थाना
ज्ञाना नामा अनीक दन् थाना।
पूरक् मनय् स्मरे निराकार् ॥21॥

चारों वेदों की शाखाएं विभिन्न रंग प्रदान करती हैं। स्वयं 'ध्यान' से ज्ञान-सरिता प्राप्त की जा सकती है। विभिन्न तरीकों से ध्यान लगाकर असीम ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। निराकार का स्मरण 'पूरक' प्रक्रिया से किया जा सकता है।

सारिथ् गंट्ठ त्राविथ ग्वाशेस् चायस्
मारिथ सारि इम् च्यानि पांछ़ इन्दय्।
तवय् सहज़कलि यूग् सादिथ्
सर्ववादि ज़ानिम् ज्ञान-पानस् ह्युहु ॥22॥

सारा अन्धकार छोड़कर रौशनी में आई। पांचों इन्द्रियों को मैंने समाप्त कर दिया। तभी सहज योग सिद्ध किया। सर्वमुखी ज्ञान को अपने जैसा ही पाया।

दरनी प्रावूम्-त् स्वरने प्यंयस्
हरा व्वञ् चूय् बर् वुसरुम्।
दिम् कोसुम् ज़रि ता आसुम् चूयि
आस् करूथम-तय् खास् बरम् ॥23॥

धरती पर पहुंच कर मैं उधेड़ बुन में पड़ गई। हे ईश्वर मैं तेरा दरवाज़ा खटखटा रही हूं। मेरा गूंगा-बहरापन तूने ही समाप्त किया। मुझे भी विशेष मान ताकि मेरी आशाएं पूर्ण हो सकें।

सहज् सिपर् पूरिथ् द्रायस्
दितिनम् ज़ूह् पर् शाही-त् शाह्।
हिश् छयस् सहजस् लागिथ् बाहज़न्
ह्यति वाह-ज़न् तोतन-त हार्य गिन्दिम् ॥24॥

सज-धज कर जब निकली उसने पंखों के साथ, शान और वैभव भी दिया। जिसके कारण मैं शेर की तरह निड़र घूमने लगी। वह तोतों और मैना की तरह खेलने लगी।

पूरिथ सहज़ सिपर-तय्
तुरगस् ज़ीना लगू रव्।
पोशनूलन् तय वीना वज़े
करानी शंख-शब्द तय्।
गंटा वायान् क्रियनद् बुज़े
दिवान् छयस् शंकरस गंडु ॥25॥

उस में पूर्ण विश्वास सौंप कर सूर्य के घोड़े पर दौड़ने लगी। नीलकंठ पक्षी वीणा वादन कर रहा है। शंख और घंटियों के शब्द नाद के साथ शंकर को जल समर्पित कर रही हूं।

हाल् मलि तय ज़ाल् वहारे
प्रान् लाडे मारे मीन्।
रूग् गालि-तय यूग् संदारे
बूग आहारि करे शरीर ॥26॥

अपना हाल देखने के बाद जल में जाल बिछाए, 'प्राण' की छड़ी से मछली मारे। योग, रोग को समाप्त कर शरीर को वैसे ही सुधारता है जैसे बिना आहार के शरीर हो।

सूर गौवु सु फ्वलि अंग् मेलने
अंग् सवारे बंग् निवारे
यिह् न फले तिय वले
जन्तुर्-तन्तुर् अनाहत् अनामय् अक्षय् ॥27॥

अंगों के मेल के साथ वह भस्म हो गया। अंगों के संवरने के साथ आत्मा खिलने लगी। जो फलीभूत नहीं हुआ—वही मिला—जन्तर, तन्त्र, अनाहत, अनामय और अक्षय रूप में।

सावदान् खेले अंग् नचावान् रहे
अंग् प्रज़लान् थ्यर वासन् दारान्।
अटल सावदान् वह आप् भगवान्
ब्वह् शिव-गथ् तय चूह शिव पान् ॥28॥

सावधानी से खेलता हुआ अंगों को नचाता रहे। अंगों को प्रज्ज्वलित कर विचारों को व्यवस्थित करे। अटल सावधान वही आप भगवान है। मैं शिव का रूप हूं तो तू स्वयं शिव है।

वर् दियि–त ब्वह नेरय–वासा
भूमि पाद् गमे रसा रसा।
ख़सान्–त् शब्द शुनुम आहंग
सारंग् राग वीना–त च्यंग् ॥29॥

वर मिलने के बाद ही मैं आगे भूमि पर पांव रख पाऊंगी। राग-सारंग, वीणा तथा चेंयूग-वाद्य यंत्रों के नाद की भांति ही मैं आध शब्द नाद सुन सकती हूं।

युसुय सहाय सुय पान् आसान्
अथवासा शिव-ता शून्या कस्।
युसु व्यह् गाले त्यह् न्यवारे
सुह् शरीर थावे पानस् ब्रोंह् ॥ 30 ॥

जो सहायक है वह स्वयं है। सभी ओर 'शिव' है तो शून्य कहां है? जो अनिश्चितता और अस्थिरता को समाप्त कर दे वही 'शरीर' को अपने से आगे रखता है।

पऱ् वहारे सार्था तारे
दुयी ब्वह़् गाले आसे तस्
ज्ञानी दर्शन् दियि यख़लासे
तस् पान् पानय् कल्पन् कासे ॥ 31 ॥

पंख फैलाकर सार्थक रूप में पार लगाए। स्वयं को जिसने शून्य के समान बना दिया हो, ज्ञानी उसे एक बार में ही दर्शन दे देते हैं और वह चिंताओं और दुष्कर्मों से मुक्त हो जाता है।

नाव् तारा वाव् सवारं
ना-रंग ना वर्न त् न गूथर्।
ब्रोंह अन् न्यन्दय् पत् करि वारय्
क-हन्दूय् दार-त् कस् च़ारे ॥ 32 ॥

किश्ती पार लगाए, हवा संवारे, न रंग, न वर्ण और न गोत्र सबसे पहले अपने खेतों की निंदाई कर जंगली घास उखाड़ फैंकें। किसकी देनदारियां है और कौन चुकता करेगा।

दियि अस्य-ति तारा त्रीय औतारि
युसु ग़ारान् सुह सूतिय छुह।
ब्रोंह ब्रोह पकि-त द्वह् माव् लोसे
न्यथ्य् पोशि-त सुय छुय् साथ् ॥ 33 ॥

वह त्रि-जगत का अवतार, हमें भी भव साग़र से पार लगा दे। आगे-आगे चलेगा तो दिन खत्म नहीं होगा। वही पूरी तरह से तेरे साथ है।

यिथिस् वावस् थरू मा खोरे
मुच़ रोज़ि तह् क्याह् छुस ज़ाफ्।
च्यथ् बाज़िरिथ ज़ाथ माव् सोरे
छिविश-त थुरिज़े कति क्या रूफ् ॥ 34 ॥

ऐसी दरिद्रता दोषहीन है। दरिद्र रहने पर भी ईश्वर ध्यान आवश्यक है। दुनियावी मोह से परलोक नहीं सुधरता। इस प्रकार सच्चाई से दूर नहीं भागा जा सकता है।

युस् मंनि ध्यये ध्यान-त् पानस् तोले
कुँह न गेलि-न्त कैंसि न गेले।
ज़ागि हरस्-न्त लाग्यस बेले
पानय् पानस् सूत्य मेले ॥ 35 ॥

जो मन में ध्यान कर स्वयं का मूल्यांकन करता है। किसी से वैर अथवा द्वेष नहीं रखता। सदैव जागरूक रह कर ईश्वर ध्यान करता है वह स्वयं को स्वयं से मिला पाता है।

संतोश समाद् एक आसन् पर
मैं यूँ लगाया प्रयम का पथ्।
दृढ़ किया वालवाशी आँखियों का
ज्योती स्वरूपा क्या करूं मेरे से तेरे का।
सूक्ष्म् रूप दिखाया तुम्हारी आज्ञा से
तुम्हारे चरण हृदय में बसाया ॥ 36 ॥

शांतिपूर्वक समाधिस्थ एक आसन पर बैठ मैंने प्रेम पथ अपनाया। चंचल अंखियों को दृढ़ किया। ज्योति स्वरूप स्वयं को तुझ में कैसे लीन करूं। तुम्हारी आज्ञा से सूक्ष्म रूप देख पाया। तुम्हारे चरणों में हृदय को रख पाया।

अपने घरं आया आप साँई
    जो कुछ मैं था सो अब नाहीं।
यह बोध आया गुरु की बड़ाई
    जिन गुरु ने दिया सत का तत्त्व बतांई ॥ 37 ॥

स्वयं पिता परमेश्वर मुझ में समा कर अपने अलौकिक गृह में प्रविष्ट हुए। परिणामतः इस परिणति से मेरा स्वरूप बदल गया। इससे गुरु के बड़प्पन और सत्य-तत्व का बोध भी हुआ।

यव तूड़् च़लिय् तिमय् वल अंबर
    यव ब्वछि च़लिय् आसख तृफ्थ्।
तिमय आहार बुख्त युक्त यूग् कर्
    रूग् गलिय् त आसख़ म्वखत्।
तेलिय् निष्कल् तुष्टीय् विशेषा
    खेल् मीलिथ्–तय आनन्द च्यनु ॥ 38 ॥

जिन वस्त्रों से ठंड़ दूर हो जाए ऐसे वस्त्र पहन। ऐसा भोजन करो जिससे तृप्ति हो। वही आहार युक्त अथवा आहार के बिना योग कर जिससे 'रोग' समाप्त हो मोती समान हो जाए। तभी तुष्टि विशेष मिलेगी तथा पूर्ण आनन्द की प्राप्ति होगी।

बाग़ चायिस् बागे आयस्
परमा-सरस् नारस् त् नरस्।
शरने आयस लल्लीश्वरस
श्री सत ग्वरस माधवा शिवस्।
सीवादीवस साकारस् निराकारस्
अन्त्तरकिस् सत्-सूय व्रतस् ॥ 39 ॥

बाग़ में प्रविष्ट हुई और बाग़ में से ही आई। इस उद्यान में अलौकिक झील, अग्नि और नर है। मैं लल्लेश्वरी की शरण में आई हूं साथ ही सतगुरु माधव और शिव के भी। साकार और निराकार भगवान के द्वार पर भीतर का सत्य ही सही व्रत है।

अहम् पदव् सदा माधव्,
शिव रव् हंसा अनुम्।
म्य-दांव् प्याल् बरिम् मा मदकिय्
म्य-दांव् हाल प्यवीम्-सु-दांव् ॥ 40 ॥

माधव का नाम अहम पद है। शिव नाम के साथ सूर्य और हंसा अलौकिक शब्द हैं। मुझे वह प्याला दे जो अहम से भरा न हो। मुझे वह प्याला दिला जिसमें अलौकिक खुशबू हो।

दीह आनन्द नद़ मया
लूच़न प्याला मुच़र।
साकय़ पिलाओ हुहू-हा
ब्वहू ब्वहा हांहा मतुवाला ॥ 41 ॥

देह आनन्दित हो चुकी है ईश्वरीस रस से। उन आंखों को खोल जो इस मद से भरपूर हैं। साक़ी! मुझे पिलाते जा-हो! हा! मैं वाह वाह! पूर्ण रूप से मतवाला हो गया हूं।

आगर ग्रज़ि तय् नद् सांज़ी
बाऩ बरिथ् ताय् फिरिथ् खासि।
ख्यन् कमा-त्तय व्वपा नर
बरि़ बरि ताय् पीव यख़्लास् ॥ 42 ॥

दरिया की धारा परिपूर्ण है और वेग इच्छानुकूल है। बर्तन और प्याले भरे हुए हैं। खा और कमाई कर ऐ नर! भरे-भरे इन प्यालों को बेझिझक पी।

आग़र ग्रज़वून्‌ अमृतूच्य नदा
रज़वून प्रज़लान सुदा-बूथ्‌।
तीलिथ्‌-त लद़वून त्रिन्‌ बुवनन्‌ कदा
मीलिथ-त़ समुद्रूच्‌ पदवी ब्यय्‌ ॥ 43 ॥

दरिया की धारा अमृत से परिपूर्ण है। अनश्वर ईश्वर तेज़ से देदीप्यमान है। वस्तुतः 'वह' त्रिभुवन का वासी है और उससे मिलकर मैं समन्दर का रूप प्राप्त कर लेती हूं।

होश्‌ मेले-ता पोश फ्वलानी
गोश्‌ खिलानी सादू-संग।
गंज्‌ ज्ञानी अव़-रूप़ ध्यानी
कृपा च्याज़ी बहु-वानी रंग ॥ 44 ॥

होश प्राप्त होने पर पुष्प खिलता है। साधुओं की संगत में आत्मा प्रफुल्लित होती है। ज्ञानी और ध्यानी खजाने स्वरूप हैं। तेरी कृपा से संसार के बहुविध रंग दिखाई देते हैं।

सुह माह शमाह प्रज़लानी
तमाह्-ब्यन् ज़लानी ब्वह्।
अव-रूप् प्रयम छुय मेलानी
यिमय् पद कैंसि मलानी क्याह् ॥ 45 ॥

'सो-अहम' की शमा प्रज्ज्वलित हुई है। पूरी इच्छा से मैं उसे जला रही हूं। इसी रूप में प्रेम-तत्व प्राप्त होता है। यह पदवी तो किसी-किसी को ही प्राप्त होती है।

मथुरा पथ ब्रोंह सत-रूप्
मेलुयौ सथ-गथ् त् तत्त्व्।
तेलुयौ रोय-रगे हर्-रंग
मेलुयौ आत्म-संग-रव् ॥ 46 ॥

मथुरा के इर्द-गिर्द सत्य रूप ही है। वहां पहुंचने पर तुम्हें सद्गति और तत्त्व ही प्राप्त होगा। वहां ही से सब रंग प्राप्त किए है। आत्मा का मेल परमात्मा से तभी संभव है।

अवल करेयिम क्वहन् अट
लट्-दिववनु हावुनम् ध्यान्।
शमर्याम् देह द्यव अवय् वट
छ़ट् फेरवनु अवय म्यानु पान् ॥
तुष्टम् त कासूनम नीत्रन् गट
ज़न् चाटस ग्वरी वख़नुम् ज्ञान् ॥ 47 ॥

सर्वप्रथम अचानक मैंने 'भार' उठाने का पूर्ण प्रयत्न किया लेकिन 'भार' उठा नहीं पाई। धीरे-धीरे 'ध्यान' का ज्ञान होने लगा इसी कारण देह शर्माने लगी। इस पर तुष्टि हुई तथा नेत्रों का अन्धकार दूर हुआ मानो गौरी अपने शिष्यों को ज्ञान दे रही हो।

युसुह ग्वर पिता सुय् छुह मोल्
सुह इह् प्रबल् दीप-प्रकाश्।
सुह इह सर्व क्वलस उदार रावुन्
सुह इह ईश्वर् सुह छुह ग्वर् ॥ 48 ॥

जो गुरू-पिता है, वही पिता है। वही वास्तव में प्रबल दीप-प्रकाश है। वही कुल का उद्धार करने वाला है। वही ईश्वर है, वही गुरू है।

क्वह यिद् दज़न् व्यह् ह्ययि बारे
ब्वय् ह्ययि हाह्न अच्यस ग्रख्।
क्रूह त्रावे वुध्यस स्वबावे
शहले चन्दन-दारे क्राय् ॥ 49 ॥

जब पहाड़ जलेंगे उसकी आग चारों तरफ़ फैलेगी और जैसे ही इसका उबाल चढ़ेगा अलौकिक क्रन्दन का अर्थ समझ आएगा। इससे स्वभाव में परिवर्तन होगा। चंदन की ठंड़क से शरीर शीतल होगा।

युस ब्वह तां ब्ययि व्यचारे
इन्दय् मारे ज़न्-म्वंगर्।
स्यद्ध तां सादू लगि अथि हुनरे
कैंसिए लंगु-त बारे क्याह् ॥ 50 ॥

जो अपने अथवा 'दुनिया' के बारे में विचार करे वही इन्द्रियों का दमन करे! सिद्ध और साधु इसी हुनर में लगे रहे। कईयों ने तो प्राप्त कर लिया औरों के बारे में क्या कह सकते हैं।

द्राव वुफे–वाव–रूपी गुर्
ग्वर ईश्वर् आव् अविनाशी।
पान् मशे तां घ्याना तोशे
स्वमन् परमानन्द वांतु तथ्-राशी ॥ 51 ॥

हवाई घोड़े अकेले उड़ान पर है। अविनाशी गुरु ईश्वर आए हैं। स्वयं को भुला कर ध्यान प्राप्त करे। इसी मन में परमानंद की प्राप्ति होती है तथा ईश्वर आशीर्वाद देता है।

सुह वा अन्दर न्यबर प्रथ् दीशन्
कंघ्व दीशन् ग्वारान् लूस्तुय द्दह्
च्यथ् थव् मडिस अंदर छुय निशान्
दुशन वांलिथ–त दितस छ्वह ॥ 52 ॥

वह अन्दर-बाहिर सभी दिशाओं में विद्यमान है। लेकिन उसे सभी दिशाओं में ढूंढ़ते हुए शाम हो गई। इसका ध्यान रख, उसका निशान भीतर में है। भीतर मनन से उसे प्राप्त किया जा सकता है।

कैत्यन् कृपा करूथ् पान् स्रवगान्
यिमन् मन् लगान् पानस सूंत्य।
इह व्यूह त्राविथ सु देह-साधन्
वातिथ् वानस लाल-रत्न् कथ बानस् कुसु ॥ 53 ॥

कईयों पर कृपा करी तूने सहस्र कृपाधारी। उनका मन तेरे साथ लगता है। मैं—तू छोड़कर जो देह साधना करता है वह ऐसी दूकान पर जा पहुंचता है जहां लाल-रत्न हैं, किस बर्त्तन में कौन सा है?

नव् पाठ् ज़ानस तव पाठ् पड
नव् ज़प जान् सुह माल् फिर।
स मुद्रा हाव–तं यव मदुरु प्याला च्यम्
नद नाल् रट् ब्ययिनय जय-रत्न् माल ॥ 54 ॥

नया पाठ जान कर उसी पाठ को पढ़। नया जाप जान कर उसी की माला फेर। वह मुद्रा दिखा ताकि मैं मधुर रस पान कर सकूं। दरिया को पकड़ कर रत्नों की माला का जाप कर सकूं।

नव् पाठ् ज़ानस् तव पाठ् पड
सुह पाठ पानय् मने वातु।
ज़पान् आत्म त दपान् वानी
पीव् मदु-रस बाज़ि बरिथ्-तां छिव् ॥ 55 ॥

नया पाठ जान कर उसी पाठ को पढ़। वही पाठ स्वयं भक्त के मन में पहुंच जाता है। आत्मा और वाणी से एक समान जप़ हो वही जप़ है, उसी से मधुर रस का पान हो सकता है जो वास्तव में परिपूर्ण है।

तिथु ध्याना ह्यत यिथु ज़ानस् अन्त
तिथु संहज़ दि-त यिथु पानस् म्य च़ह्-त।
तिथु व्यय् च़ह् लाग्-त थियु बहुत शंकर-बखूच्
यिथु पानस मंचूरावनस न कुँह ॥ 56 ॥

ऐसा ध्यान दे जिसे अन्तिम ही समझूं। ऐसा सहज़ ज्ञान दे जिसे स्वयं को निचोड़ सकूं। ऐसे मैं और तू रहें ताकि शंकर भगवान की अपार कृपा हो सके। ऐसे स्वयं को किसी के समक्ष व्यक्त भी नहीं कर पाती।

इह्वयं कुल मूल-तु श्वह तुल्
यवा शाख पन-ता फूल्।
दात पप्यव् स मुद्रा पान
रसे सवाद तु नन्यस् बोय् ॥ 57 ॥

यही वृक्ष की जड़ है और यही शहतूत का वृक्ष। यही शाखाएं है और यही फूल है। रस पड़ जाने पर फल मीठा हो जाता है। रस से ही प्रकृति के स्वाद का पता चलता है।

मन्द् स-मुदुर् दोनु सांनी
छ्वकु समाद् नाद-विन्द चूट्।
दान अखंड मिलायो मख्रन
सादिकारिस द्रायाम् ग्यव् ॥ 58 ॥

समन्दर मंथन का अमृत प्राप्त करो। मंथन से नाद-बिन्दु प्राप्त होता है। अखंड दान, साधक मक्खन को मिलाकर घी प्राप्त कर लेता है।

तव् रूप यज्ञा हूमस करिथ्
आहुत दिचूस् अंगन् हूँज़् ।
ज्योत् पर्ज़ाने कारन् च्याने
माने अतूर-न्त नन्यस् ब्यय् ॥ 59 ॥

तब यज्ञ और हवन का रूप धारण कर अंगों की आहुति दे दे। तेरे कारण ज्योति प्रज्ज्वलित करे अन्तर को यदि मानने लगे तो मेरे विषय में ही जानकारी मिलेगी।

बान् फ्बटरि-त् पानय थुरे
कुसु मरि-ता कस् लगि द्वख् ।
पानय नहावे पानय् पूरे
कुसु सोरि-त् कस यियि ट्वख ॥ 60 ॥

बर्तन तोड़ कर स्वयं उन्हें गढ़े। कौन मरे और किसे दुख होगा। स्वयं नहाए और स्वयं पूर्ण करे। कौन संवारे और किसे दुख पहुंचेगा।

प्रथ जिन्सस अंशा थवुन्
अथ्य कैंसि-न चीतन् थवुन।
तति ज़न् अनुन्-त पूँछ़ा फीरिथ ता
न्यायुन ब्यय् मिलावुन् गंजन् सूत्य ॥ 61 ॥

प्रत्येक जीव में अंश रखा हुआ है। ऐसे कोई भी चेतनावस्था में नहीं है। वहां से लेकर आना और फिर पुनः उसी रास्ते पर चलना यह उसी ईश्वर का खेल है।

यिवान् पान-त ज्यवान् पान्,
रिवान् पान-त निवान् टूख।
नाना प्रकार गिन्दान् पान्,
रिन्दान् पान्-त ह्यवान पत्थ् ॥ 62 ॥

स्वयं आकर-स्वयं जन्म लेता है पूर्ण-मिल जाता है और फिर भाग जाता है। स्वयं कई प्रकार के खेल खेलता है। खुद ही खेलने के बाद पीछे हो जाता है।

प्ययान् स्वादस त यिवान् नादस्
वादस अथ चास छुन् च्यारय्
पीवान प्याल--त छिवान् पान्
ब्वान पान--त चवान टख् ॥ 63 ॥

स्वाद समाप्त होने पर स्वयं निमंत्रण आता है। इस वायदे के बाद कोई चारा नहीं है। प्याला पीकर शरीर गद्‌गद् हो उठता है। खुद ही अभि वृद्धि कर स्वयं भाग जाते हैं।

रंगिथ वय द्रायिस संग-कुय्
म्वक्त म्वरव्‌चू ज्ञान अकुय।
ब्वय बखचू-रूफ ग़ारान ना किंह
वय न कूंह ब्वय--तां ना कूंह ब्वह् ॥ 64 ॥

विभिन्न रंगों का वरण कर मैं बाहिर निकली। मोक्ष और मोक्ष का ज्ञान एक ही है। मुझे ही यह ज्ञान दे मैं और कुछ नहीं मांगती। मैं किसी और का वरण नहीं करूंगी क्योंकि तेरे सिवाय और कोई नहीं है।

ध्यान आसरव् आस–त् चूय्
ज्ञान ग्वाश–त् ग्वाह आसख चूय।
विज्ञाना ला-शक मंशख चूय
आसख् चूय ता ब्वह ना कुँह् ॥ 65 ॥

ध्यान भी तू ही है और पूर्ण आशा भी तेरे पर है। ज्ञान की रौशनी भी तू ही है और साक्षी भी तू ही है। तू ही सब कुछ है मैं कुछ भी नहीं।

मंड्ड युसु ज़ाले नारय्
दंड्ड नौव इह संसारूय्।
दड्ड सु–ज़ियि न-ता मरे
रच़ड्ड युसु गाले सांरी आंर ॥ 66 ॥

जो शरीर को आग़ से जलाता है और इस संसार में आता है। जो सारे सांसारिक सुखों को धीरे-धीरे समाप्त करता है वही इस संसार में जी सकता है अन्यथा मर जाता है।

सारी बूग्-आहारे निराहार्
न निन्द्रे आसि न हुसि आर
रहिथ सोरे कर्म न्यथ् बेकार्
रुम रुम् आयि अवतार् ॥ 67 ॥

सारे सांसारिक भोग आहार-निराहार सम्पन्न करता है न नींद में होता है न जागा हुआ होता है। सारे कर्म पूर्ण करे नहीं तो सब बेकार है। उसके रोम-रोम में ईश्वर अवतार धारण करता है।

ध्यानस् म्य चूह्–त पानय् ब्वह चूह
अथि ज्ञानय् च्य म्य नमस्कार।
पानय् पान् पर्ज़ानि–त पानय व्यचे
न–त अन् ज़ानस् व्यचिय् ज़ानिथ कूँह ॥ 68 ॥

मेरे 'ध्यान' में तू है, स्वयं मैं तू हूं। तेरे इस ज्ञान को मेरा नमस्कार। स्वयं को खुद समझने और स्वयं व्याख्या करे नहीं तो अन्जान कुछ भी नहीं जान पाएगा।

छुह शाह–त़ गदा सुय्–तते
पानय् दात्,ख़सान् पूरि रव।
कुनि गौव् रय्पय् कुनि गौव् वूरे
फल्-कुलिनूय मूरे रव् ॥ 69 ॥

वही शाह है और वही भिखारी। उसकी कृपा से सूरज की पूरी रौशनी है। कहीं फसल पूरी नहीं पकती। कहीं सूर्य की रौशनी बर्बाद होती है। कहीं पेड़ पर फल भी पूरी तरह नहीं होता।

कुनि तमाहे कुनि तकांबूरे
शमा युथ् होरे पूरे रव्।
पव् पव् पलि तय़ तस् ना मूरे
वांतित् वात्यस् पूरे रव् ॥ 70 ॥

कई लोभवश, कई घमंड स्वरूप समझते हैं शमा ने पूर्ण रौशनी दे दी है। धीरे-धीरे ही पूर्णता प्राप्त होती है, सम्पूर्ण प्रकाश प्राप्त होता है।

कृपा-त् कारुन् युस पानय् ज़ाने
मनूय माने दिन्--तय् राथ
सर्वरूप्-ध्याना युस् पज़ाने
माने मनि--त् नन्यस् ज़ाथ् ॥ 71 ॥

कृपा करने पर जो स्वयं पहचाने, मन ही मन दिन और रात को माने। ध्यान में सर्व रूप माने। स्वीकार करने पर ही अपनी 'जात' का पता लग सकता है।

युस रूप तारि--त दीफ् संदारे
नाथ सुह् नृप् व्यचारे मन्।
किंह मूदि्--त किंह् बेमारे
कैंसि ज्ञानु्--खूरे तारे नाव् ॥ 72 ॥

जो भव सागर से पार करे और ज्ञान-दीप प्रज्ज्वलित करे--भाई वही राजा मन में बसता है। कई समाप्त हो गए तथा कई मरणासन्न हैं। किसी को ज्ञान ही कष्टों से पार लगा रहा है।

माता रूपी स म्वदुर दाम त पीव्
तथ् तपासिय् मद म्वदुर पीव्।
दड़ा चडे तथ् रूपी
रव्–रूपी त्रिबाविन् ॥ 73 ॥

माता रूप अमृत रस समान है, उसका पान कर। इस रस में अलौकिक नशा है। उस रूप पर शरीर न्यौछावर कर। इस वेग में त्रिभुवन स्थित है।

अन्दुर त्रुंखि–त, न्यबूर-स्यदि
वुदिख् नाग् त ज़ागुख् तथि
किंह बेमारि रस्तिय् मूदी
किंच़न विदु-नत रूदिय तंत्य् ॥ 74 ॥

भीतर से कठिन लेकिन बाहर से सौम्य। झरना बहने पर निंद्रा टूटी। कई बीमार रास्ते में ही ख़त्म हो गए। कुछ वहां रूक गए तथा कुछ वहां से चले गए।

ना नमुस् न कदाचित् नमंनु
निथ् मनु यम्य सदा सर्वदा
आकाश-रूप ज़गि-अन्तर् रमंनु
तथि नमुस् तथा सुह् नमंनु ॥ 75 ॥

ना ही मैं नतमस्तक हुआ और ना ही नतमस्तक हूंगा। अपने मन में सर्वदा 'उसका' ख्याल रखें। अन्तर्मन में आकाश रूप का स्मरण कर, उसी को नतमस्तक हो वही नतमस्तक होने योग्य है।

पद् ह्ययि-त पाद् छुह् मंगान्
अंगन् अंगन् श्रप्योम रूफ्।
अग्न-कुड् यिथु रूफ् संदारे
अमृत् दारे पीवान् दीह् ॥ 76 ॥

पदवी ग्रहण कर चरण स्पर्श मांगता है। अंग-अंग में उसी का रूप बसा है। अग्नि-कुंड वैसा हो जैसा 'वह' संवारे। उस द्वारा प्रदत्त अमृत देह पी रही है।

पान् सुह मानि–त ब्ययन् सवारे
निश काठस् तारे चन्दन् बोय्।
काठ् यिथ् बोय ह्ययि चन्दन-दारे
सहज़ूय गारि–त नन्यस् जाथ् ॥ 77 ॥

स्वयं छिपकर दूसरों को संवारता है। चंदन के साथ 'काठ' भी तैर जाता है। काठ बीज़ कर चन्दन मांगे, वैसे ही सहज ज्ञान प्राप्त करने पर भीतर मन का पता चल जाता है।

दाथ् चालि–त क्याह व्यचारे
पान् मरे तय संदारे ब्यय्
व्यह् गालि-त अमृत् तारे
तिथुयय् रूप चय वरिय क्याह् ॥ 78 ॥

धातु समाप्त हो जाए तो क्या विचार करना है। स्वयं ख़त्म होकर पुनः प्रकट हो। विचार समाप्त होने पर अमृत पार लगाए। ऐसे रूप का एहसास कैसे हो पाएगा।

अर्पाविथ् जन्म चिदानन्द्
हंसद्वार रव–रग् ता रूम्।
कृपा ज्ञान कारुन कर्म्
दर्म् सूत्य निरालम्बा रूफ् ॥ 79 ॥

चिदानन्द को अपना जन्म अर्पित कर सभी प्रक्रियाएं शांति द्वार तक पहुंचती हैं। कृपा, ज्ञान, कारण, कर्म और धर्म सब निरालम्ब रूप है।

यति कुनि वुछयन् तति पानय्
सर्वद्यानूय् रटुमस् रूफ्।
दीप प्रकाश तीज़ रव् पानय्
म्य ज़ान्यौव सुह् ज़ि म्याने छुह् ॥ 80 ॥

जहां कहीं भी देखा वहां तू स्वयं था। सभी रूपों में मैंने उसकी पूजा की। दीप, प्रकाश व तेज वह स्वयं है। मैंने निश्चित रूप से यह समझ लिया कि वह मुझ में ही है।

ज्ञान आकाश् वांनी निर्वानी
मनि सहाय थान्-थानय् छुह्।
आ राम ही राम् बोलो पवन्
ब्वह् ब्वय–तां म्यानिय छयुयह् ॥ 81 ॥

ज्ञान, आकाश, वाणी, निर्वाणी, पूर्ण मन सहित सभी स्थानों पर है। एक 'राम' ही का नाम हवा में बिखेरो, मैं और मेरे से ही सम्भव है।

शये आसख् शये छुयस्
लये पानु ब्वयिय् छुयस।
नीरिथ्– तु, गछान तेलिथ–तु, यिवान्
मीलिथ् पानु, तोत्य दयुय् छुस् ॥ 82 ॥

षट्-चक्र में होगा, मैं भी 'छः' में हूं। स्वयं खुद उसमें विलीन हूं। निकलने के पश्चात भी वापिस आ सकती हूं। आत्मीय विलय के बाद भी मैं दो रूपों में हूं।

नादुय् बिन्द पदुय् परम
मदुय मारि–फतुकुय् छुयस्।
विष्णु-ब्रह्मा महेश्वरा
कृष्ण ब्यय् श्याम-सुन्दर् छुस् ॥ 83 ॥

नाद-बिन्दु परम स्थिति है। यह मादकता ईश्वरीय मिलन से ही प्राप्त हो सकती है। वही ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर, कृष्ण और श्याम सुन्दर है।

गोम औवतार सुह् महादीव्
सुह् वा सुह वा सुयय् छ्युस्।
पूरा तोले रामा बोले
ब्रह्म-स्वामी मन्दोरि छुस्।
यिह् किंह काँछि तिह–किंह् दिये
दुकान् त्रपित समुद्रुय छस् ॥ 84 ॥

जो अवतार दिखाई दिया वही महादेव का था। वही था–वही था–वही है। पूरा तोल कर राम का नाम लो। भगवान ब्रह्मा उदारमना है, जो उसकी 'इच्छा' होती है उसी हिसाब से वह बांटता है। उसकी दुकान पूरी तरह भरी है जैसे समन्दर में पानी।

दिशान्-त, दीशन हैरान गयिस्
निशान् म्य-अनुमस् शुन्यालय्।
छल, लदु चर्कस-त कल् आयि मशान्
यिमन् शन् मानि द्वशान् ब्वय ॥ 85 ॥

चारों दिशाओं में देखा तो दिशाओं ने हैरान कर दिया। उसका चिह्न मैं 'शून्य' जगत से ढूंढ कर लाई। 'छल' जैसे ही 'चक्र' में डाला गया, सुधर गया। इन छः अवस्थाओं का आन्नद तो मैंने ही लिया है।

छु-न कुने छु-ना कुने
वुछह ओर् न योड् न कुने।
दिय् फश तेले मूल न कुने
छिवय् चीतन त स्वरि-तोन् कुने ॥ 86 ॥

वह है-और नहीं भी है-वह है और नहीं भी है। इस ओर देखूं जो उस ओर नहीं है। यदि ख़त्म कर दे तो 'जड़' का भी पता नहीं लगता। यदि चेतन है तो उसकी पूजा करो।

ओर् ति ज़ीवा योर् ति ज़ीवा
जीवस् जीवा रस् ख्यावान् ।
युसु छ्युह् नाना-रंग रुवुनु
छुह प्रथ् कुने वात्वनु
च्यांनु-म्यांनु ल्वांनु बिनु बिनु तय्
न-त् रानु सानुय् अकुय् तय् ॥ 87 ॥

इस ओर भी जीव है और उस ओर भी जीव है। जीव ही जीव को रस पिला रहा है। वह जो नाना रंग दिखाता है सभी जगह पहुंचने वाला है। तेरा-मेरा करने के बाद भी किस्मत अलग-अलग है। लेकिन ईश्वर हमारा एक है।

न पृथ्वी न प्यठ्ठी न पातांली
न तली न पांरी नापारी च्वपांरी ज़यथ् ।
अन्तरा शुद्दम् सुशान्तम्
निर्मलम् सर्व तथ् दीवा दीव् ॥ 88 ॥

न पृथ्वी पर, न उसके उपर और न पाताल पर। न नीचे और न इधर-उधर चारों ओर वह पैदा हुआ है। अन्तर्शुद्धि शांति प्रदाय है। स्वच्छ एवं देवों के देव समान है।

कौन् मरे–ता कौन् प्यतारे
सुमुद्रस सारे तारे थाह।
मदु-रस गड्डु–ता शशि औतारे
पानस् पान् पुशारे गाह् ॥ 89 ॥

कौन मरे और कौन बचाए। समन्दर को पूरा खोजने के बाद भी कोई थाह नहीं मिल पाती। मीठे रस की लुटिया से ईश्वर की सेवा करे और चन्द्रमा के अवतार पर अपने आपको अर्पित कर दे।

ह्यमालय् शूञ् यवय् ल्युख पांवुम्
तवय पाँछ् स्मारुम् एका अन्त्।
न दाह दिये ना केंछ् प्राव
ठह्रावे न त स्निहनावे ॥ 90 ॥

हिमालय के एकांत में ज्ञान प्राप्त किया। तभी पांच इन्द्रियों पर शक्ति प्राप्त कर सकी। न तो कुछ दिया और न कुछ प्राप्त किया या तो ठहराव आया या शांति सह पर अग्रसर हुआ।

कांक्षि पूरे अकांक्षित् वाने
पानय् दाता बुख़ता आसे।
वासंजि गाले ब्राँथा त्रावे
नाना-रंग सीर् नाथा बावे ॥ 91 ॥

इच्छाएं क्या इच्छा करने से ही पूर्ण हो सकती है। स्वयं दाता और स्वयं ही भोक्ता है। मोह त्याग करे और झूठी आशाएं छोड़ दे। ईश्वर विभिन्न रहस्यों की जानकारी देता है।

माता पिता त ब्राता पानय्
प्रथ थानय् न कथ् नये।
निराकार रूप लागिथ् पानय
सथ् पानय –त कथ सन नये ॥ 92 ॥

माता-पिता तथा भाई वह स्वयं है। स्वयं का निराकार रूप बनाकर 'वह' सभी जगह है कौन-सी जगह नहीं है। वह सत्य भी स्वयं है और इसके बाद और क्या जानना शेष है।

कौन जाने तेरा स्वभाव
प्रभाव परमानन्दा जी।
जो स्मरे हृदय में पावे
जैसी प्रभा भास्करा जी ॥93॥

हे परम आनन्द स्वरूप ईश्वर तेरा स्वभाव व प्रभाव कौन जान पाया है। जिसने तुम्हारा स्मरण किया है उसके हृदय में प्रातःकालीन सूर्य के समान तुम्हारी ज्योति वास करती है।

सारी तत्त्व् आहारिम ग़ार चापुम
ब्रमवांवुम् अखंड मण्डल तां पाताल्।
हा-हू सूतिन् ग्यव् व्यगलांवुम्
अङ्ग नावुम् विशेषा गंग् ॥94॥

सारे तत्व आहार समझ कर ग्रहण कर लिए। अखंड मंडल और पाताल को सिद्ध किया। दिव्य-अग्नि से 'घी' पिघला दिया। विशेष गंगा से अंगों को नहलाया।

च्यथय् लगिय-त् पर्दुय पान् ज़ान्।
च्यत्थय लगिय् पर्ज़ान् पान्।
च्यत्थय लगिय् ल्यटु छुयय्-त् पर्ज़ान्
ल्यटु ज़ान् म्यूठ-त् श्वद् ज़ान् पान् ॥95॥

ध्यान लग जाए तो अपना शरीर ही समझ। ध्यान लग जाए तो स्वयं को पहचान सकता है। ध्यान का स्वाद् कड़ुवा है तब भी पहचान। कड़ुवे को मीठा जान और अपने शरीर को शुद्ध मान।

वाव् रठ् द्वादशान्त रव् संगटे
मायाय् तृष्णाय् मारे मन्।
ब्रांथ त्राव् नाथ छुय् पन्न्ने गरे
साथ् रठ सुय-त् ज्ञान दीह ॥96॥

सारा वर्ष प्राणायाम से हवा का वेग रोका जा सकता है। इससे माया और तृष्णा से मन को बचाया जा सकता है। भ्रम छोड़ दे ईश्वर अपने घर ही है। वही मुहूर्त ले और देह को ज्ञान प्रदान करे।

बाव् ब्यन् ब्यन्-तु नाव् छुस् क्रेठान्
ऐठन् अंगन् अकुय् पय्।
लय् पवनस् म्वय छ्युय् बानस्
मानुन्-तु पानस् निश छुयय् दय् ॥97॥

भाव भिन्न-भिन्न हैं लेकिन नाम एक ही है। आठ अंगों का एक ही स्रोत है। पवन की ओर एकाग्रता रहे तो बर्तनों में मादकता भरी होगी। मान ले तो अपने पास ही ईश्वर है।

मूर्थाह् करिथ्–तु अमूरथ् पचीय्
खाख् छय–ताय् क्याह् पचे।
पँछ महाबूत् करिन् फचे
ह्यच् माया तय् करि-ना बुत् ॥98॥

मूर्त रूप के बाद अमूर्त रूप क्या दिखाई देगा। धूल ही है–तो और क्या होगा। पंच महाभूतों को पा लिया है। 'माया' रूप को हमने स्वीकार कर लिया है जो हमें समाप्त कर देगा।

मनि गालि त्, पानय् व्यचे
अहं गारि-त्, क्याह सन् यछे
ब्ययन् ठडि डालि-त्, पानय नचे
वाह्-वाह गुलि फ्वलि-ना तुल्-ना मूल् ॥99॥

स्वयं का मन मारकर विश्लेषण उसे प्रसन्नचित्त करेगा। अहम् समाप्त करके वह और क्या चाहेगा। अन्यों को भ्रम में डालकर वह नृत्य करेगा। वाह! वाह! जड़ों सहित 'फूल' खिलकर 'फलों' में भी परिवर्तित हो गए है।

गंड़िथ्-त्, डेंटोन् द्रायाय् ब्वह् तस्
क्याह् लबाव् तस् आसन जाय्।
न ब्वयि पाफ् तस् न पुञ् ख्वय् तस्
आसान् ब्वय् तस् न आसान्-जाय् ॥100॥

बाध्य हो कर मैं उसे तलाशने निकली हूं। मैं उसके होने की जगह की क्या तलाश करूंगी। न तो पाप को बढ़ाता है और न पुण्य उसे छू पाता हैं। मैं ही हो सकती हूं—उसका होना तो सम्भव नहीं।

संबूर–एंरू वातान् ब्वह् तस्
तंबूर–साज़य् गूँ यस् ब्वय्।
शशि दारि लव दिमहा ब्वह् तस्
गंबूर–तोतस् क्य ह् बोल्याह् ॥101॥

उससे मेरा संबंध संबूर की लय सा है। तंबूर साज़ पर मैं गूढ़ रहस्य की तान निकालती हूं। शशि-धारा का छिड़काव मैं उस पर करती। मूढ़ रहस्यमयी तोते को क्या बोलूं!

अनेकु नंजू मेज्यांम् दर्याव्
अवय् स्वबाव आव् स्वरूफ्।
ना किंह थवु-त ना किंह त्राव्
बहु दीप आव नह छिपा रूफ् ॥102॥

अनेक नदियों के बीच में से निकला और स्वभाव व स्वरूप ग्रहण किया। कुछ ना रख और न कुछ छोड़। विभिन्न दीपों की सूरत में आया कुछ भी छिपा कर नहीं।

आकाशु सुह मदुर वछम दार्
तवय-तार् रटुमस् पव्।
दीपा शशि-रव् रूप औतारे
बहु-आकार न-तु निराकार ॥103॥

आकाश से मीठी धार बहती देखी। तभी उसकी तार पकड़ कर रखी। 'दीप' के रूप में सूर्य और चन्द्रमा प्रकट हुए। विभिन्न आकार का अन्यथा निराकार रूप।

युस्-सा कन्दि बस्मा करे
पसमंद्र तिहन्दु शून्या-रूफ्।
शास्तर्-शस्तर् क्याह मूचरे
लुहार्-अग्न् सुह मार्यस दीह्।
किंह-नु सुह मंगे क्याह नु स्मरे
ध्यान् सुह वरे बिय-तु पान् ॥104॥

जो स्वयं को भस्म करे और अन्ततः शुन्य रूप धारण करे। शस्त्र-शास्त्र इस रहस्य को क्या खोलेंगे। लोहार की अग्नि की भांति देह को समाप्त करे। वह कुछ भी नहीं मांगता, कुछ भी सुमिरन नहीं करता। 'ध्यान' का वरण कर लेता है और शरीर ईश्वर को समर्पित कर देता है।

अनाहत् शब्द मना गंड़िथ्
पान मंड़िथ रिशीयस।
हाकै बान्, बरिथ्–त् पान्,
साकै वाकय् आसि दानिस्त ॥105॥

'अनाहत' शब्द को मन में बांध लिया। शरीर पूर्णतः प्रभू के हवाले कर दिया है। सभी बर्तन पकवानों से भरे हैं—स्वयं भी। साक़ी वास्तव में 'दानिश्त' है।

दूर च़ल तह् हुरुय काँछयह्
पूरे ख़सि ह्यम् आयित्
सुय् शन् आयीन् क्वरुनय
न शीतल् शीतल् माह ब्व ख् ॥106॥

दूर चला जाएगा तो कोई भी तेरा मुकाबला नहीं कर सकता। पूरी तरह से स्वयं को समझ लेगा। वहही छः दर्पण में से देख लेगा। इससे शीतल विचार और कोई नहीं।

दर्याव-अन्दर अंशाह आव्
ज़ाव् म्यच्य-त ज़ायिस म्यचू।
म्यच्यय् बूग-त, न्यामचू ख्याव्
म्यचिय् करुस पारिज़ान्
अवय म्यचि बञ्योव् म्यह चूह्
पतोह श्रपिथ म्यचिय् गव् ॥107॥

दरिया के भीतर अंश रूप में आया। अंश रूप से आकर मिट्टी में उत्पन्न हुआ। इस मिट्टी को भोग कर स्वादिष्ट पदार्थ खिलाता है। मिट्टी से संबंध स्थापित हुए और इसी मिट्टी से 'मैं' और 'तू' बने और अन्त में मिट्टी में विलीन हो गया।

आयाव् वर् ह्यथ् यति स्वर् रहुस् -ना
समुरुन् म्यचे पाञु त वाव।
अग्न आव्-त, वाहं वाह रंग प्यव्
नचान् त्रचान् सपुनुस् नाव्।
आज्ञा आयि-त, चलु हा चूर-ज़न्
वाव् आसु व्वदन्यत् क्यथ-सन प्यव् ॥108॥

'वर' ले कर यहां आया था और यहां पहुंच कर सुध खो बैठा और मिट्टी, पवन, शरीर आदि को पूजने लगा वैसे ही 'अग्नि' विभिन्न रंगों में दिखाई दी और वनों में डगमगाते हुए नाचने लगे। आज्ञा आई तो चारों की तरह भाग गया जैसे तूफान वेग वर था और यह सब कैसे हो गया।

रहे निशाना ईश्वर–सुन्दु नावा
कति आयाव्–त, कतु–सन गव्।
समरिथ्–त सादिथ् तमि कज़ाव्
दीव ह्यत मुख़ी त सीव करहास् ॥109॥

ईश्वर का नाम ही स्थायी निशानी रह जाती है। मनुष्य कहां से आया है और कहां चला जाता है। सिमरन और सिद्धी से सूत्र मिला तो है। देव को सदैव पास रखकर मैं उसकी सेवा करती रहूं।

छुननस् लूब क्रद काम् मूह मद अहंकार
चाव् संसारस त अमल् कर्यस्।
पतोह आमाल् अमल् होरने गाव्
प्वंछ आयाव–त, क्वछ क्या नियै ॥110॥

लोभ, क्रोध, काम, मोह, मद, अहंकार लेकर इस संसार में कर्म करने आया। फिर अमल करने के बाद उनका फल भोगने लगा। मेहमान के रूप में आता तो कोई क्या ले जाता।

ईश्वरी वाद् ह्यथ् य्वत् कजाव्
यति आव्-त् आसु मनुष्या-रूफ् ।
युसुह देव स्वरि मनस्-त् बाब प्रथ जुवस्
तिम् जूह सीव् कस् मालि अथे आय् ॥111॥

ईश्वरीय कार्य का वादा लेकर उसे इस राह से गुज़ारा था। यहां पहुंचा तो मात्र मनुष्य रूप था। जो 'देव' का मन से सुमिरन करता है, सभी जीवों का आदर करता है। ऐसे जीव प्रिय किसी के हाथ में नहीं आते।

तिमय् छिय् मनुष्य न-त् किंह्र द्राय गुपन्
यिमन् आदन् सुह पान् मशिथ् गव् ।
प्ययख् बुड़िथ् चीतन् सु-दन् सोर्यख्
छ्यञि बान् कति मालि दरकार् यिये ॥112॥

वही मनुष्य हैं, नहीं तो बाकी पशु ही निकले। जिन आदमियों को 'वह' भूल गया। बूढ़ा हो जाएगा तो वह सब याद आएगा। खाली बर्तन बता ऐ दोस्त किस काम आएगा।

सहज–त् आनन्द् रह हा दारिथ्
पानय् पान् संदारिथ् क्यथ्।
कृपाय च्याजे गछ़-हा तरिथ्
ईश्वर–रूफ् स्वरिथ तह क्यथ् ॥113॥

सहज और आनंद बराबर प्रदान करता रहा। अपना आप कैसे संवारती। तेरी कृपा से भव सागर पार कर लेती। ईश्वर का रूप वरण कर ही कृपा प्राप्त होगी।

सहज़–त् ज्ञान् रज्यम् परमानन्द
अव-रूप् सानन्द आसियू कोई।
आत्मा रज़्यय् वांचू मा स नद्
मदु सा सुह् नद वहं वज़ी ॥114॥

सहज और ज्ञान को एक सूत्र में बांध परम आनंद प्राप्त किया है। इस रूप से अधिक आनंद और कोई नहीं। आत्मा के लिए इससे बढ़कर कोई संगीत नहीं। इस नाद में इससे बढ़कर मिठास नहीं।

स्वानुभवोल्लास दशकम्

ओं श्री गुरवे नमः।

बू यो न बीजम् तोया न तीज़म्
वायु नाकाशम् अवां ताह सर्वम्।
न ज़ि ब्रह्माण्डम् नच़ खात्म-आत्मम्
शक्ति स्वरूपम परं ब्रह्म सोहम् ॥1॥

न पृथ्वी न बीज न जल न बीजारोपण न प्रकाश, न आकाश न वायु न ही ब्रह्मांड, न ही स्वयं खोजी आत्मा। शक्तिरूप में परम ब्रह्म मैं ही हूं।

पुरुषो न पुरुषात् विमर्शो न मर्शात्
वर्ना-तीज़ो शान्तं अन्तर आकाशम्।
सूक्ष्मो न विस्तार न परं व्यापारम्
न अन्तदारम् परं ब्रह्म सोहम् ॥2॥

न ही पुरूष, न पुरूषार्थ, न विमर्श न उद्भावना, अन्तर्आकाश से मात्र शांतमयी प्रकाश। न ही सूक्ष्म न ही विस्तार और न कोई परम कार्य। अन्तर्धारण किए हुए परम ब्रह्म मैं ही हूं।

थावर् न जंगम नह् च़तुर्वर्णम्
ज़ग् न च़राच़र तथ् परमाकारम् ।
सथ् ना असंतु अछिन्नदारम्
सूक्ष्मो समादि परं ब्रह्म सोहम् ॥3॥

न स्थिर है और न गतिशील न ही चतुर्वणीय है। न सत्य है न असत्य और न अबाध धारा है। सूक्ष्म समाधिस्थ रूप में परमब्रह्म मैं ही हूं।

जोगो जुगान्तर् संन्यास-वर्णम्
तुरीया-अतीता तथ प्रसिन्दोऽहम्
अचिन्त्यरूपं परमाकारम्
थ्यर् केवलोऽहम् परं ब्रह्म सोहम् ॥4॥

योग तथा योगानुभूति से सन्यास का वरण कर तुरीय अवस्था में मैं प्रसन्नचित्त हूं। अंतिम रूप जो परमाकारी है। मैं ही, केवल मात्र मैं ही अंत में विद्यमान हूं और परमब्रह्म मैं ही हूं।

माता न पिता ब्राता न बन्दु
वार्ता स वेदम् एको केवलोहम्।
ग्वरू न चेला मन्त्रो न लीला
तथ युस् अकेला परं ब्रह्म सोहम् ॥5॥

न माता न पिता न भ्राता न बन्धु, वेदों की वार्ता केवल मात्र मैं ही हूं। अकेला जो है, मैं ही वही परमब्रह्म हूं।

मोहो न ब्वदि नच वैराग्यम्
नच राग-दोषम् निर्वैरशान्तिः।
स्वपून् न ज़ाग्रथ् तथ् शुद्दबोदम्
सूक्ष्मो स्वयम्बू पर ब्रह्म सोहम् ॥6॥

न मोह और न बुद्धि न वैराग्य न अलौकिक शांति, न स्वप्नावस्था, न जागृत अवस्था फिर भी शुद्ध बोध। स्वयम्भू सूक्ष्म रूप में जो है मैं ही वह परमब्रह्म हूं।

पादू न बीजम् चतुर्बुजाकरम्
न त्रि-ज़ग चराचर् अनन्तरूपम।
सहस्रनामम् निरादारम्
शुद्ध-स्वरूपम् परं ब्रह्म सोहम् ॥7॥

न मूल और न बीज और न चतुर्भुज आकार वाला। न ही त्रिजगत न ही चराचर अन्नत रूप वाला। बिना आधार के हजारों नाम वाला। शुद्ध रूप में मैं ही परम ब्रह्म हूं।

स्यदू न स्यजू विद्या न गति
रिद् न परीक्षा आकाश-रूपम्।
खगाकाश् उल्लंगिथ् नच् राज़योगम्
नु लम्ब् न निरालंब परं ब्रह्म सोहम् ॥8॥

न सिद्ध और न सिद्धी, न विद्या, और न गति न रिद्धी न परीक्षा। मात्र आकाश रूप, न आकाश और न धरती न ही राजयोग न लंबी (पराश्रयी) और न निरालंबी (स्वतंत्र) मैं ही वह परमब्रह्म हूं।

रूपं न रस् न् स्पर्श् गन्द् न देहो
दुयी दयस् न छुस् केवलोहम्
ज़ीवो जीवता न वर्ता न वार्ता
कर्ता सहोकार् परं ब्रह्म सोहम् ॥9॥

न रूप न रस, न स्पर्श न गंध, न देह, न वास, केवल मात्र मैं ही हूं। न जीव और न जैविक क्रियावाला, न वार्ता न वार्ताकार, न कर्त्ता न अकर्त्ता। समस्त कारकों सहित रूप में मैं ही परमब्रह्म हूं।

इडा न पिंङ्गला नच ब्रह्मनाड़ी
स्वयिय् सुषुम्ना पायाहमेव।
अनाहत् अनामय तुरायाऽवस्था
आनन्दरूपंद् परं ब्रह्म सोहम् ॥10॥

न इड़ा न पिंगला, न ही ब्रह्मनाड़ी सुषुम्ना से प्राप्त शक्ति, अनाहत, अनामय, तुरायवस्था हूं। आनन्द रूप में परम ब्रह्म मैं ही हूं।

॥ इति स्वानुभवोल्लास दशकम् ॥

तथ् अन्तर दृष्टि संबावुम्
यिह् म्य त्रावुम् तिह आवुम् नये।
लल्ल् माधव शिव् ईकावुम्
ब्येकावुम् दीह् म्य पानये।
च्यत्थ अन्तर मन्ज़लि सावुम्
ललावुम-त् म्य बावुम् नये।
पूर-विचार प्रागित् आवुम्।
यिह् म्य त्रावुम् तिह आवुम्-नये ॥2॥

उस अन्तर्दृष्टि को मैंने स्थिर कर दिया। जो मैंने त्याग दिया वह नये रूप में प्राप्त किया। लल्लेश्वरी, माधव और शिव को एक रूप में पाया। अपनी देह को भी एक बनाया। चित्त को मैंने अन्तर्आत्मा के झूले में सुला दिया है। पूरा विचार तब प्रकट हुआ है। जो मैंने त्याग दिया वह नये रूप में प्राप्त किया।

यमि तराज़ि दीह् संबावुम्
मावु आवुम सुय् पानये।
मन सथ-असथ् सिरावुम्
लानु त्रावुम-त् कुस म्वल् दिये।
व्वन्र् म्यानु सारुय तवय् छुस सावुय्
यिह् म्य त्रावुम् तिह आवुम-नये ॥3॥

जिस तराजू से देह को तोला उसी से 'उस' (ईश्वर) को भी तोला। मन में सत्य-असत्य का विचार किया। दुनियावी मसलों को मैंने छोड़ दिया है। इसका मूल्य कौन देगा? अब सब मेरा है तभी मैं 'वह' हूं। जो मैंने त्याग दिया वह नये रूप में प्राप्त किया।

दीह-अन्तर सुषुप्त् सांवुम्
जागांवुम तुरीया आये।
अनाहत् आनन्द खिलांवुम्
मिलावुम् अनामय् च्यये।
तद्-रूप म्य-पान ललांवुम
ब्वह् छयस् सावु-त, किंह् रावुम्-नये ॥4॥

अंतर्देह को सुषुप्ता अवस्था में ले आई। जागने पर तुरीय अवस्था आई। अनाहत, आनन्दमय स्थिति में अनामय से जा मिली। माता रूप में मैंने शरीर को खिलाया। मैं वही हूं और कुछ भी खोया नहीं।

कलि-कलि मिलवावुम्
ललावुव् रूफ पानये।
तब अन्त्र्र दीह नावुम्
पीवावुम् रस् पानये
तव तुष्टि निदाना प्रांवुम्
ब्वह छयस् सावु-त, किंह् रावुम्-नये ॥5॥

एक-एक करके मैंने स्वयं को विलीन कर दिया तब अन्तर्देह को शुद्ध किया और स्वयं ही अमृत रसपान किया। उस आधार पर मैंने तुष्टि से निदान प्राप्त किया। मैं वही हूं और कुछ भी खोया नहीं।

ब्वद् ख्ययूम च्ययम् प्रखूटेयम्
च्योम् वैराग्य अक्षय् दाम् ।
द्वन् गूच़र व्यचार सावुम्
निनावु रिशियस् तवय् ।
आदि श्रुथ आचारावुम्
ब्वह छयस् सावु-त, किंह रावुम्-नये ॥6॥

मैंने बुद्धि गवां दी पर इसका लाभ नहीं। वैराग्य पी कर मैं अक्षय धाम में पहुंच गई। गोचर और विचार को बीच में छोड़ दिया। ऋषियों को सुनाए मंत्रों को समझाना चाहा। यही विचार में अपने आचार में लाना चाहती थी। मैं वही हूं और कुछ भी खोया नहीं है।

न खूच़स् न कूँह लज्जुम्
व्वपजु तिय् पानय् आनुम् ।
न म्य करु-त न सांपनु
रंजु सहज़ हीत् अवय् ।
रीच़-तीच़-त, प्रीच़ निबावुम्
ब्वह छयस् सावु-त, किंह् रावुम् नये ॥7॥

न मैं भयभीत हुई और न लज्जाई। जो भी उत्पन्न हुआ स्वयं लेकर आई। न कोई कार्य हुआ और न गति। राजस के साथ सहज प्रकट हुआ। मैंने रीति, कर्त्तव्य और प्रीत सब निभाए। मैं वही हूं और कुछ भी खोया नहीं।

तत्व प्रसंदिथ् दय् प्रावुम्
अङ्ग गालिथ् ज़ग् मा म्वये
ना ख़ोच् नाल्वन् करि-जे
प्रज़ि न्यर्मल् श्वद्द शिवय् ॥
दिन प्रलय् तक् एकावुम्
ब्वह छयस् सावु किंह् रावुमं नये ॥8॥

'तत्त्वों' को प्रसन्न कर ईश्वर को प्राप्त कर लिया। अंगों के गलने से संसार मरता नहीं। बिना भय से उसे अंगीकृत करें। इस पवित्रता से शिव के दर्शन होंगे। प्रलय तक एकत्त्व का दिन प्राप्त होगा। मैं वही हूं—कुछ भी खोया नहीं।

एकतु परमबूद्द सदानन्द्
तसि विदीह समाद यस स्वर आसे।
रिदू स्यजू विद्या युसु आदरु असि
तत्पदवी रसे बिय् क्याह आसे ॥9॥

एकत्त्व में परमबोध हैं जिसे सदा आन्नदित रहा जा सकता है। विदेह-समाधि में जिस के पास स्वर है, ऋद्धि, विद्या और समृद्धि, उसे सभी प्राप्त है। उसे यह पदवी मिल सकती है और क्या चाहिए।

रिद्द-स्यद्द-विद्या ग्रज़ि आगरय्
तसि गर्य व्यबव् सागरय् ग्वाह्।
करि सूर्य उदय च़लि गटकारूय्
सहज़ विचार तथ सारबूद ॥10॥

सिद्धी, कौशल, समृद्धता और ज्ञान का बहाव सागर से होता है। यही सूर्य उदय करता है जिससे अन्धकार दूर होता है। यह सहज़ विचार सार बोध है।

व्रत सथ तत्त्वबूद श्वद्धि आचारा
इय व्यवहारा वीद--ता यूग्।
च़ह कुस ब्वह् कुस कूँह व्चारा
अछिन्न्-दारा सुय चे़न रूफ ॥11॥

व्रत, सत्य, तत्त्वबोध एवं शुद्ध आचार ही वेद और योग का प्रमुख आधार है। तू कौन और मैं कौन का विचार, यही अछिन्न धारा, यही रूप है।

यिह रूफ़् सुह रूफ़् पर–रूफ़् वले
आव कले निरंजना रूफ़्।
यिह शूब लूबस ज़ान्-वेगवले
अज़रामर आसे श्वद्द-दीह ॥12॥

इस रूप को–उस रूप को और अन्य रूप को इकट्ठे ओढ़कर निरंजन रूप मिलता है। इससे सौभाग्य और शुभ प्राप्ति होती है। शुद्ध देह-अज़र और अमर होती है।

ओं तत्सत् ॥ आदितः श्लोकाः 146 ॥

5

रहस्योपदेश का दार्शनिक पक्ष

दर्शन शब्द के अनेक अर्थ हैं, जिस दृशिर धातु से दर्शन शब्द बना है उसका अर्थ देखना है। इसी अर्थ के अनुसार नैयायिकों ने निश्चय किया है कि किसी पदार्थ को देखने का साधन ही दर्शन पद वाच्य है। निष्कर्ष यह कि जड़, चेतन के प्रत्येक सूक्ष्म तत्व का विश्लेषण, जिससे उसका भीतरी रहस्य बतलाया जा सकता हो उसी का नाम 'दर्शन' है। ये तत्व यद्यपि संख्या में अनन्त हैं परन्तु उनमें से ईश्वर, आत्मा, विश्व और परलोक मुख्यतः चार हैं। अतः विशेष रूप से इन चार तत्वों के गूढ़तम रहस्य का जिससे ज्ञान हो उसे ही 'दर्शन' कहना उपयुक्त होगा।

यजुर्वेद के पुरुष सूक्त आदि को देखने से मालूम होता है कि जिस समय समस्त संसार में केवल वन्य जीव रहा करते थे उसी समय आर्य जाति दर्शन शास्त्र के अखंड, अनंत और विपुल ज्ञानमय ब्रह्म तत्व का असीम धैर्य और गाम्भीर्य के साथ मनन तथा अनुभव किया करती थी। अतः मानना पड़ेगा कि हमारे यहां दार्शनिक विचारों की उत्पत्ति अनंत काल से है।

संतों की साधना का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान, भक्ति और योग के माध्यम से ब्रह्म से साक्षात्कार रहा है। ब्रह्म जो एक रहस्य है। इस रहस्य की प्राप्ति के लिए साधक ज्ञान का सहारा लेता है और भक्ति द्वारा श्रद्धा और विश्वास के साथ 'ब्रह्म' के समक्ष आत्म-समर्पण कर देता है।

ब्रह्म शब्द में विस्तार निहित है। बड़ा होने के कारण परमतत्व को ब्रह्म कहते हैं। शंकराचार्य के अनुसार "ब्रह्म शब्दस्यहि अत्पादयमनास्य नित्यशुद्धत्वाद्योऽर्थ वृहते धातोरर्थानुगमात् (ब्रह्मसूत्र भाष्य 1/1/1)। ब्रह्म शब्द 'बृह' धातु से व्युत्पन्न हुआ है। उन्होंने इसे नित्य शुद्ध आदि अर्थ से लिया है। जगत की परिवर्तनशीलता ने ही भारतीय तत्व-ज्ञानियों को व्यग्र कर उसे मौलिक तत्व 'ईश्वर' के अन्वेषण में अग्रसर किया। भारतीय तत्व चिन्तकों ने अपनी दिव्य-दृष्टि से देखा कि जगत् के परिवर्तन के परे एक अपरिवर्तनीय परम-तत्व है। भारतीय तत्व-ज्ञानी इसी अपरिवर्तनीय तत्व को 'ब्रह्म' या 'ईश्वर' के नाम से संबोधित करते हैं। ब्रह्म अद्वैत है। वह स्वयंभू है। उसे किसी के बुद्धि-बल की अपेक्षा नहीं। उसने अपनी प्रज्ञाशक्ति से इन विश्व ब्रह्मांडों की रचना की है। रचियता होने से उसे सम्पूर्ण ब्रह्मांड का साक्षात्कार है। ब्रह्मांड का साक्षात्कार होने से वह सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ होने से वह सर्वव्यापक है और सर्वव्यापक होने से सर्वशक्तिमान।

ब्रह्म का निरूपण

जीव कैसे पैदा होता है, जन्म के बाद कैसे जीवन व्यतीत करता है और अन्ततोगत्वा मृत्यु को कैसे प्राप्त होता है—यही ज्ञान 'ब्रह्म' है। ब्रह्म एक और अनादि है उसमें सीमा और परिणाम नहीं। वह अलख और माया से मुक्त और स्वतंत्र है। वह जल, थल सभी में पूर्ण रूप से परिव्याप्त है, कोई स्थान उसकी सत्ता से वंचित नहीं है। वह सर्वव्यापक है, किसी स्थान में उसके अस्तित्व का अभाव नहीं। जिस प्रकार फूल के भीतर सुगन्धि है, काष्ठ में आग है, दूध में घी और महावर में लाली छिपी है, उसी प्रकार ब्रह्म सर्वज्ञ अदृश्य रूप से परिव्याप्त है। तिल भर भी कोई जगह ऐसी नहीं जहां उसकी सत्ता वर्तमान नहीं। वह अविनाशी है, अविगत है, अभंग और अदेह है। ब्रह्म, परम ज्योतिस्वरूप है। ब्रह्म के साक्षात्कार का साधन केवल मात्र अनुभव ही है।

माता रूपभवानी ने ज्ञान, भक्ति और योग की स्वानुभूत त्रिवेणी पर ब्रह्म के जिस स्वरूप का निरूपण किया है, वह निश्चित रूप से 'ब्रह्म' के संत कवियों द्वारा निरूपित स्वरूप से साम्य रखता है। यह निर्विवाद सत्य है कि रूपभवानी साहिबा एक महान संत थीं। कबीर के अनुसार माया को जीतने वाले को संत कहा जाता है। शंकर के विचार से जीव और ब्रह्म अभेद हैं। भेद तो अविद्या के कारण हैं। उसका नाश होने पर जीव अविनाशी परमात्मा के साथ एकता प्राप्त करता है। रूप भवानी ने पंच विकारों को त्याग कर ही माया को जीतने को मार्ग बतलाया है। जब माया विद्या के प्रकाश में तिरोहित हो जाती है, तब साक्षात् ब्रह्म का दर्शन होता है। अतः जीव ब्रह्म का साक्षात्कार करता है।

रूपभवानी ने ब्रह्म का ही अंश जीव को माना है। जीव भी उतना ही सत्य है, जितना ब्रह्म। वास्तव में जीव और ब्रह्म एक ही हैं क्योंकि ब्रह्म जीव का उपादान कारण भी है। जीवात्मा परमात्मा का प्रतिबिंब नहीं है उसका अंश है। रूपभवानी भी निर्गुण ब्रह्म को स्वीकार करती है, जिसका न रंग है, न वर्ण और न गोत्र, वह आनन्द स्वरूप है, उसके न पांव है, न शरीर है और न अन्य अंग। वह त्रिजगत में वास करने वाला भी नहीं है। वह स्वयं ही माता-पिता और भ्राता है। प्रत्येक स्थान पर वह व्याप्त है परन्तु निराकार है। वह अनंत है, सर्वत्र विराजमान है, स्वयं देदीप्यमान है तथा सर्वशक्तिमान है। वह महाआनंद स्वरूप है तथा उसका स्थान षट्चक्र के मध्य है। उसका स्वरूप जानने से ही परमगति प्राप्त हो सकती है। इस गति के प्रवाह से पूर्णमासी की रौशनी की तरह अंधकार दूर हो सकता है। अन्य संतों की भांति रूपभवानी की ज्ञान, भक्ति और योग का मात्र उद्देश्य ब्रह्म से साक्षात्कार रहा है। ब्रह्म जो एक रहस्य है। रूपभवानी के अनुसार शरीर के अंदर षट्चक्र है। षट्चक्र वेधन के बाद ही साधक अपने लक्ष्य की वांछित प्राप्ति कर सकता है।

रूपभवानी के 'वाखों' में ब्रह्मात्यैक्य स्थिति ज्ञान की पूर्णावस्था विद्यमान है। यहां ब्रह्म की सत्ता है जो न स्थिर है न गतिशील है। जहां सूक्ष्म समाधिस्थ रूप में परम ब्रह्म[1] विराजमान है।

---

1. थावर् न जंगम नह् चतुर्वर्णम्
ज़ग् न चराचर तथ परमाकारम्।
सथ् ना असतु अछिन्नदारम्
सूक्ष्मो समादि परं ब्रह्म सोहम्॥

यह न पृथ्वी है, न बीज है न जल है न प्रकाश, न वायु है और न ब्रह्मांड और न ही स्वयं खोजी आत्मा है। यही वास्तव में शक्तिरूप में परम ब्रह्म है![1] वह न ईड़ा हैं न पिङ्गला और न ही ब्रह्मनाड़ी है। सुषुम्ना से प्राप्त शक्ति, अनाहत, अनामय, तुर्रायवस्था है। वह आनन्द रूप में ब्रह्म है।[2] इस ब्रह्म का स्वभाव और प्रभाव कोई नहीं जान पाया है। इसके स्मरण मात्र से ही ह्दय में प्रातःकालीन सूर्य के समान 'ब्रह्म' वास करने लगता है।[3] ब्रह्म का स्वरूप जानने से परमगति का रहस्य दृष्टांत होता है तथा निर्वाण के रहस्य की भी जानकारी मिलती है।[4]

माया

भारतीय अध्यात्म जगत में माया का सिद्धान्त अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। भारतीय दर्शन में माया के दो रूप मिलते हैं—विशुद्ध सत्य प्रधान और अविशुद्ध सत्य प्रधान। विशुद्ध सत्य प्रधान माया को 'ब्रह्म की शक्ति' माना गया तथा इसे विद्या माया की संज्ञा प्राप्त हुई। अविशुद्ध सत्य प्रधान माया को 'अविद्या' का नाम दिया गया। इस माया के हस्तक्षेप से ही मूर्ख जीव ईश्वर से अलग हो जाता है। माया एक ऐसी शक्ति है जो विकारवान प्रकृति को उत्पन्न करती है। यह शक्ति है अथवा ईश्वर की क्रियाशीलता है अथवा आत्माविभूति है जो आत्म-परिमण की शक्ति है। इन्हीं अर्थो में ईश्वर और माया परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं और दोनों अनादि हैं। गीता में सर्वोपरि ब्रह्म की इस शक्ति को माया कहा गया है। जब साधक साधना कर ज्ञान प्राप्त कर लेता है और पंच विकारों से ऊपर उठ जाता है तब माया तिरोहित हो जाती है और साधक ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेता है।

अन्य संत कवियों की भांति रूपभवानी ने भी ब्रह्म की प्राप्ति के लिए माया को अवरोधक माना है। उनके अनुसार मोह-माया को त्याग कर ही सत्य वस्तुतः 'शून्य' को शून्य से मिला सकता है।[5] माया से अलग होकर यदि साधक देह में ज्ञान की अग्नि प्रज्ज्वलित करता है, निस्संदेह वह माया का परित्याग कर देता है। रूपभवानी ने ब्रह्म के निर्गुण रूप को सगुण दिखाई देने का कारण पंचमहाभूतों में माया का मिश्रण कहा है।[6] रूपभवानी ने माया से मन को मुक्त रखने का उपदेश दिया है। उन्होंने कहा है कि आत्मज्ञान तभी प्राप्त हो सकता है अन्यथा मोक्ष की राह अत्यंत दुष्कर है।

---

1. बू यो न बीजम् तोया न तीज़म्
   वायु नाकाशम् अवां ताह सर्वम्।
   न ज़ि ब्रह्माण्डम् नच़ खात्म-आत्मम्
   शक्ति स्वरूपम् परं ब्रह्म सोह्म् ॥
2. इडा न पिङ्गला न च ब्रह्मनाडी
   स्वयियु सुषुम्ना पायाहमेव।
   अनाहत्, अनामय, तुरायाऽवस्था
   आनन्दरूपदं परं ब्रह्म सोहम् ॥
3. कौन जाने तेरा स्वभाव
   प्रभाव परमानन्दा जी।
   जो स्मरे ह्दय में पावे
   जैसी प्रभा भास्करा जी। (93)
4. अन्तर्मुखी दृष्टि निर्वाण-रहस्य
   तत परमगती।
5. युस तौख् त्रावि—त मोख् मिलावे
   प्रयना प्रयम् लागे प्रार्
   वथरि ज्ञान-त पान् तलाड़े
   शून्यस शून्या सूत्य मिलावे ॥ 13 ॥
6. मूर्थाह् करिथ-त अमूरथ् पचीय्
   खाख छय-ताय् क्याह पच़े
   पँछ महाबूत करिन् फचे
   ह्यूच् माया तय् करिन ना बुत् ॥98॥

जीव

रूपभवानी के वाखों में भी 'जीव' बहुचर्चित रहा है। आचार्य रामानुज तथा निम्बार्क की भांति रूपभवानी ने जीव को ब्रह्म का ही अंश माना है। यह जीव नदी के अंश की भांति है। इसी अंश रूप में आकर वह मिट्टी से उत्पन्न हुआ। रूपभवानी के अनुसार भ्रमवश अज्ञान के कारण ही जीव इधर-उधर भटकता रहता है। जीव, विषय-वासना, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार में फंसा रहता है। इस संसार में वह अतिथि रूप में आता है और अपने कर्मों का फल भोग कर अदृश्य हो जाता है।

रूपभवानी ने 'जीव' की व्याख्या भी की है। जो जीव समस्त भोग भोग कर भी निराहरी रहे। निंद्रावस्था में भी जागृत रहे, सर्व कर्म करके भी निष्क्रिय रहे, वही वास्तव में उच्च कोटि का जीव है। शंकराचार्य की भांति रूपभवानी ने जीव को ही ब्रह्म माना है। जीव को ब्रह्म के सामने झुकना पड़ता है। वह ब्रह्म शुन्य रूप में ब्रह्मांड में व्याप्त है। संसार में जीवों का भाग्य भिन्न-भिन्न है परन्तु उनका निर्माता ब्रह्म एक है। रूपभवानी के अनुसार मानव शरीर में जीव रहकर अपने अलौकिक गुणों से हीन हो जाता है और जब शारीरिक गुणों को त्यागता है तो परम तत्त्व से संबंधित हो कर ब्रह्ममय हो जाता है। इन शारीरिक गुणों को त्यागने के लिए उन्होंने सर्वस्व होम करने का उपदेश दिया है।

जगत्

संत लोगों ने एक स्वर से जगत् को झूठा और नश्वर कहा है। कबीर ने इस संसार को स्वप्न के समान माना है। उन्होंने जगत् को नल की बूंद की तरह क्षणभंगुर भी कहा है। बौद्धों और वेदान्तियों ने भी जगत् को नश्वर और क्षणिक बताया है। रूपभवानी के अनुसार इस क्षणिक संसार में जीव केवल अपनी वासना को समाप्त करके ही रह सकता है।[1]

सृष्टि या जगत पांच तत्वों से बना है। इन पांव तत्वों का स्वामी महत्तत्व है, जिसमें यह पांचों तत्व विद्यमान रहते है। काल पाकर यह महत्तत्व फैलने लगता है। महत्तत्व के इसी फैलाव को हम जगत् अथवा सृष्टि का जन्म, रचना या विकास कहते हैं। रूपभवानी ने इसी सृष्टि को न स्थावर माना है और न जंगम। रूपभवानी के अनुसार साधक को इस जगत् में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार के रहते हुए भी सर्वोपकारी कार्य करने पड़ते हैं क्योंकि उसे अपने कृत्यों का जवाब ईश्वर को देना होता है।[2]

योग

आत्मा से परमात्मा का साक्षात्कार करने के लिए योग सन्तों द्वारा सर्वोत्तम साधन माना गया है।

---

1. मडु युसु ज़ाले नारय
   दडु नौव इह संसारूय
   दडु सु-जियि न-ता मरे
   रचडु युसु गाले सारी आर। (66)

2. छुननस् लूब, क्रूद, मूह, मद् अहंकार
   चाव् संसारस त अमूल कर्यस।
   पतोह आमाल अमल होरने गांव
   प्वछ आयाव-त क्वछ क्या निये ॥

माता रूपभवानी ने निर्वाण दशश्लोकी और वाक्य मंजरी में योग के सहजतम तरीकों की व्याख्या की है। भवानी साहिबा ने राजयोग को सर्वोच्च योग माना है।[1] इस राजयोग में ज्ञान और भक्ति का समावेश है, पीड़ादायी हठयोग नहीं। यह राजयोग कश्मीर के शैव-दर्शन का पोषण करता है। कीचड़ में रहकर कमल की तरह पवित्र रहने का रहस्य ही राजयोग है। रूपभवानी ने अपने वाखों में कुंडिलिनी योग का भी उल्लेख किया है। यहां मूलाधार चक्र शुद्धता का प्रतीक है। जिसके नीचे कुंडलिनी है। ईश्वर प्राप्ति में तुर्यातीत अवस्था आन्नददायी है।[2] षट्चक्र सिद्धी असंख्य कार्य करवा सकती है। ईश्वर महानंद स्वरूप है और उसका स्थान षट्टचक्र के मध्य है।[3] रूपभवानी के अनुसार योगसिद्धी और सिमरन से देव को प्राप्त किया जा सकता है।[4] भवानी साहिबा के अनुसार व्रत, सत्य, तत्वबोध एवं शुद्ध आचार ही वेद और योग का प्रमुख आधार है।

साधना पक्ष

कश्मीरी संतों का साहित्य गुरु की महिमा से भरा पड़ा है। रूपभवानी साहिबा ने भी अपने पूर्ववर्ती संतों की भांति गुरु को प्रमुख माना है। माता रूपभवानी के गुरु लल्लेश्वरी सहित पिता माधव जू दर थे। रूपभवानी गुरु को ज्ञान का प्रबल प्रकाश देने वाला मानती है। वही कुल का उद्धार करने वाला भी है, वही ब्रह्म है, वही गुरु है।[5] रूपभवानी के लिए गुरु का नाम अन्तर्मन से पवित्र और शुद्ध है। गुरु चाहे लल्लेश्वरी हो, शिव अथवा माधव हो, सभी एक समान हैं और परम ब्रह्म स्वरूप हैं।[6] भवानी साहिबा के अनुसार ईश्वर स्वयं आकर गुरु का महत्व समझा जाते हैं। इसी से गुरु की महानता का बोध होता है। इसी गुरु की कृपा से सत्य के तत्त्व ज्ञान की

---

1. पवित्र नेत्र पश्यत मुखी अन्तर्
बाहो बहु-दनाड़ी असंख्य कांमू कर्त्।
यिहुय् राज़-यूगी दाता पिता सुय।
सर्व कांख्या सु अर्थ पूरनी
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य तती परमगती ॥
रहस्योपदेश : पृष्ठ 4 (5)

2. शुद्ध युक्त-मूलादारी क्वण्डली मण्डली गौरी।
स्यद्द अर्थ सूक्ष्मू सुष्वप्ती चक्र विरक्त शान्तादारी
ईश्वरी तुर्यातीत परमानन्दी।
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य् तती परम .गती ॥
रहस्योपदेश : पृष्ठ 2 (2)

3. शयुम्-थान् वासी सर्वमध्यं
जिता सन्यासी ब्यन-बिन्दु-नांदी
अन्तर्मुखी दृष्टी निर्वान-रहस्य तती परमगती।
रहस्योपदेश पृष्ठ 4(7)

4. रहे निशाना ईश्वर-सुन्दु नावा
कति आयाव्–तु कतु-सन् गव्।
समरिथ्–त सादिथ् तमि कज़ाव
दीव ह्यत मुख़ी त सीव् करहास्।
रहस्योपदेशपृष्ठ 41 (109)

5. युसुह ग्वर पिता सुय् छुह मोल्
सुह् इह् प्रबल् दीप-प्रकाश।
सुह् इह् सर्व क्वलस उदार् रवुन्
सुह् इह ईश्वर सुह छुह ग्वर् ॥
रहस्योपदेश : पृष्ठ 22 (48)

6. ओम ग्वर अन्तर् तथ निर्मलम्
शद्धं अत्यन्त विद्याधरम्।
लल्-नाम लल् परमा ग्वरम्
शिव-माधव नाहं परं ब्रह्म सोहम् ॥
रहस्योपदेश: पृष्ठ 6 (1)

जानकारी मिलती है।[1] गुरु ही ज्ञान के माध्यम से शिष्य के अन्तर्मन को जागृत करता है और तब ईश्वर के साकार-निराकार रूप, लल्लेश्वरी, माधव और शिव की शरण में आना शिष्य जरूरी समझता है।[2] रूपभवानी के अनुसार भवसागर से पार करने वाला और ज्ञान दीप प्रज्ज्वलित करने वाला ही साधक के मन में आ बसता है।

बाह्य आडम्बरों का विरोध

रूपभवानी ने भी अन्य संतों की भांति साधना के बाह्याडम्बरों का विरोध किया है। उनके अनुसार जप पूजा और पाठ व्यर्थ है। मन, आत्मा और वाणी द्वारा एक होकर प्रभु ध्यान ही वास्तविक जप है और उसी से परमानन्द की प्राप्ति हो सकती है।[3]

वास्तव में मनुष्य को सदैव ईश्वर को याद रखना चाहिए। ईश्वर को याद न रखने वाला पशु के समान है।[4]

●

---

1. अपने घर आया आप सांई
जो कुछ मैं था सो अब नाहीं।
यह बोध आया गुरू की बडाई
जिन गुरु ने दिया सत्त का तत्त्व बताई।
रहस्योपदेश : पृष्ठ 18(37)

2. बाग चायिस् बागे आयस्
परमा सरस् नारस् त नरस्
शरने आयस लल्लीश्वरस
श्री सत ग्वरस माधवा शिवस्
सीवादीवस साकारस् निराकारस्
अन्तर किस सत-सूय व्रतस्।
रहस्योपदेश पृष्ठ 19 (39)

3. नव् पाठ् जानस् तव पाठ् पड
सुह पाठ पानय् मने वातु।
ज़पान् आत्म त दपान् वांनी
पीव मदु-रस बाजि बरिथ-तो छिव ॥55॥

4. तिमय छिय् मनुष्य न-त किंह द्राय गुपन्
यिमन आदन् सुह पान मशिथ गव।
प्ययख बुड़िथ् चीतन् सु-दन सोर्यरव्
छयजि बान कति माल दरकार् यिये ॥2॥

6

पंडित बालह दर का फारसी पत्र

पंडित बालह दर का फारसी में माता रूपभवानी को दिल्ली से लिखा गया पत्र रूपभवानी के उपलब्ध साहित्य का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ है। इस पत्र में पंडित बालह दर ने सांसारिक बंधनों से मुक्ति के लिए माता रूपभवानी से प्रार्थना की है। मुक्ति की राह में आने वाली कठिनाईयों का पंडित बालह दर ने अपने पत्र में बड़ी विनम्रता से वर्णन किया है।

पंडित बालह दर का दिल्ली के मुग़ल दरबार में 'मीर मुंशी' का पद ग्रहण करना भी स्वयं में एक चमत्कार रहा है। वास्तव में वासकुर प्रवास के दौरान माता रूपभवानी की अध्यात्मिक शक्ति की चर्चा श्रीनगर में फैल गई थी। रूपभवानी के भाई पंडित लालह दर अपने पुत्र बालह दर की अनपढ़ता और बेकारी के कारण परेशान थे। इसलिए वे भी अपने पुत्र सहित अपनी बहन रूपभवानी की शरण में आए। माता रूपभवानी के पास रह कर बालह दर ने उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। माता रूपभवानी ने अपने चमत्कार से बालह दर को ज्ञान प्रदान किया तथा उसे नौकरी के लिए दिल्ली दरबार में आवेदन भेजने का निर्देश दिया। यह देखकर सभी आश्चर्य चकित रह गए कि बालह दर बहुत ही अच्छी तरह दिल्ली दरबार के लिए आवेदन लिख कर लाया था। माता रूपभवानी की अपार कृपा से कुछ ही दिनों के बाद बालह दर को दिल्ली दरबार में मीर मुंशी का स्थायी पद हासिल हुआ था। अपने पिता लालह दर और बुआ रूपभवानी के निर्देशानुसार उन्होंने मीर मुंशी का पद स्वीकार तो कर लिया लेकिन माता रूपभवानी के दरबार से अलग होने का दुख उन्हें सदैव रहा। मुगल दरबार की शानो-शौकत में वे कुछ समय तो खोए रहे लेकिन बाद में उन्हें महसूस हुआ कि यह सब सुख तो क्षणिक हैं, असली आनन्द तो ईश्वर प्राप्ति में ही है।

मुरीद (बालह दर) का पत्र मौलाना जल्लालुद्दीन रूमी की मसनवी बैहर में है और इसी बैहर में पीर (रूपभवानी साहिबा) का जवाब भी है। मौलाना जल्लालुद्दीन की मसनवी में 'सग' का रूपक प्रयुक्त हुआ है। पंडित बालह दर ने 'ब्रह्म' प्राप्ति के रास्ते में 'माया' के रूप में आने वाले व्यवधानों को जिन रूपकों के माध्यम से दर्शाया है, वे रूपक स्वयं में मुरीद के माध्यम से पीर को ब्रह्म, जीव, जगत और माया का विस्तार से व्याख्या करने को प्रेरित करते हैं। कुत्ते, पहलवान, शैतान, अय्यार, कुंआ ऐसे प्रतीक हैं जिन्हें माया का ही रूप माना जा सकता है। यह ऐसे कुत्ते

नहीं जो रोटी का एक टुकड़ा हासिल करने के बाद अपने मालिक के प्रति वफादारी निभाते रहते हैं। इन कुत्तों की तुलना पंडित बालह दर ने उन शेर और भेड़ियों जैसे जानवरों से की है जो आदमी को समाप्त करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इन कुत्तों से बचना आदमी के लिए बहुत मुश्किल है। यह कुत्ते इस राह में तब प्रकट होते हैं जब साधक मंजिल के बिल्कुल नज़दीक होता है। ईश्वर प्राप्ति की यह मंजिल उस ऊंचे किले के समान है, जहां पहुंचने के लिए संकरी गली से होकर गुज़रना पड़ता है। इस गली में हवा भी प्रवेश नहीं कर सकती। इस रास्ते पर जाने से पहले ऐसा महसूस होता है जैसे मंजिल स्वयं साधक की ओर आ रही हो। इस राह में ऐसे कुएं भी हैं, जिनमें छिपे भूतनुमा अय्यार आदमी को गुमराह करते हैं। भटकाव की इस स्थिति में ईश्वर की अपार कृपा ही काम आती है।

ईश्वर की यह कृपा प्राप्त होती है 'ख्वाज़ा खिज़्र' के माध्यम से जो मोहमाया के जंगल में भटकते राहियों को राह दिखलाते हैं। यह ख्वाज़ा खिज़्र मूसा पैगम्बर को भी मिले थे। ख्वाज़ा खिज़्र आज भी जिन्दा हैं जो जंगल में भटकने वालों को रास्ता दिखलाते हैं। यह अलौकिक चरित्र ख्वाज़ा खिज़्र ज्ञान का प्रकाश फैलाकर भटकते राहियों को अज्ञान रूपी अन्धकार से बाहर निकालते हैं। साधक को इन झंझटों से मुक्ति केवल मात्र गुरू ही दिलवा सकते हैं। पंडित बालह दर के लिए गुरु माता रूपभवानी ही है। इसलिए बालह दर स्वयं को उनकी दरग़ाह का बन्दा मानते हैं और माता रूपभवानी से उन्हें उनकी ग़फलतों को भूलाकर अपनी दरग़ाह में जग़ह देने का अनुरोध करते हैं।

अलखेश्वरी साहिबा माता रूपभवानी को अपने भक्त का हाल तो पहले से ही मालूम था लेकिन जब उन्हें बालह दर का ख़त पढ़कर सुनाया गया (यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि बुजुर्गों और पीरों के दरबार की शान थी कि बाहर से आने वाली किसी भी चीज को बादशाह, उमराह या पीर खुद कबूल नहीं करते थे। इस कार्य के लिए वरिष्ठ शिष्य रखा जाता था जो कि काफी पढ़ा-लिखा होता था। उसकी आवाज़ भी खुशग़वार होती थी ताकि वे ख़त के हाव-भाव हुबहू पीर को बता सके।) तो उन्हें लगा कि मुग़ल दरबार में पहुंचकर बालह दर में अहंकार सा आ गया है।

रूपभवानी अपने भाई से अगाध स्नेह रखती थी। शिष्य के रूप में भी बालह दर को रूप भवानी साहिबा प्रथम पंक्ति में रखती थीं। इसी कारण रूपभवानी ने प्रत्युत्तर में उन्हें ईश्वर की महिमा, संत के चरित्र और दुनियावी मोहमाया से मुक्ति के लिए आत्मा की सर्वव्यापकता के विषय में विस्तार से बताया। रूपभवानी ने बालह दर को बताया कि अहम् जीव को ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य से विमुख कर देता है। रूपभवानी ईश्वर की आभा को अमूल्य हीरों की तरह मानती हैं। ईश्वर का ही रूप हर जीव के शरीर, रंग और रूप में समाया हुआ है।

ईश्वर के नूर का एहसास केवल उसे ही होता है जो उसका मुश्ताक होता है। रूपभवानी खुदपरस्ती को दर किनार कर ईश्वर से मिलने का सबक़ देती हैं। आत्मा की अनश्वरता जीवन का मूल रहस्य है।

मूल पत्र[1]

बालह पंडित जू दर का प्रश्न पत्र देहली से जहां वो उस समय मुग़ल हुकुमत में मीर मुंशी थे।

अज देहली

अर्ज़हाले सरगुज़शतम बिशनवेद
लाइलाज़म चार साजेमंन शवेद
बूदम अज़ गफलते दर अयामे शबाब
रोज़वशब मशगूल फिक्रो खुर्दोख्वाब
हमज पाए कारग़ाफिल हमज़सर
बूदम अज़ असले ख़बर बेख़बर
लेक़ फैज़े आमतु शुद्ध खासे मन
या फतम बादे खबाबश दर ज़मन
कद्रेआं दौलत बसे निषना ख़तम
खुद बदवाआ रास्ती कज़बाख्तम
मुद्दते बूदमज़ अलताफ़े कमाल
बहरमनंद अज़ दौलते कुरबे वसाल
वाए बरमन जुर्मीग़फ़लत करदह अम
सर बसर तक़सीर खिदमत करदह अम
चूं चुनीं जुरमे जमन गश्तह ज़हूर
बर किनार उफतादम अज़ दरियाए नूर
बाज रवे अज़ काहिली बरताफतहम
बरदरे रहमत सरागी या फतहम
रफत दर पाए दिलम ख़ार तलब
दमबदम शुद गरम बाजारे तलब
सद ब्यांबा दूरमांदम जांअ जनाब
खानाए हर आं शवद यारब खराब
पयेन बुरदम सुए यीन दह चंदगाह
दूर मांदम जां दरे आलम पनाह
ताकि रोज़े वक्त खिज़रम शुद दो चार
गोज राहे तलफतम शुद दस्ते यार
चूंकि पीरदम जरह चन्दीन क़दमं
नागहां गश्तह सगे सदेरहम
सग़बयक़ लुकमे वफ़ादारी कुनअद
ईन सग़अज़ खुरदन जफ़ाकारी कुनअद
जिईन सग़ दरिन्दाह यारान अलहज़र
अलहज़र ऐजिरकांन करदम ख़बर
आन न संग हम संग गुरगो शेरबूद

1. साभार : श्री अलखेश्वरी साहिबा ट्रस्ट, श्रीनगर। मूल फारसी पत्र देवनागरी लिपि में।

वहशश अजआलम जां में रबूद
चूं सगे बदखुई दामनगीर शुद
पसबपाए रफतमम जंजीर शुद
अज कशाकश हाए आन सग दमबदम
सद दिलासा करद रफतम यक् क़दम
किलह दीदम चूं रफतनम चंदगाम
बुअद दर रफ़त बसेए आली मुक़ाम
जानिबे खुद नागहां दीदम दवा
अज़ निगहबान आं दह पहलवान
हरयके दीदम अय्यारो राहज़ने
दर राहे यजदां शुदह अहरे मने
चुह आसतम राहे दरों रफतन हमेह
ताबहे खलवतह गाहेऊह पयेह बरह दमेह
हरयकहे राहे बचाए हे में नमूद
हरइके गुमह रही गवलम शुदाह
दर अय्यारी दस्तगाहे मीनंमूद
सिद्दे राह दर राहे मकबूलम शुदाह
बसखे बाआहां नदीदम कस हरीफ़
अज़ गरीबी आफतम खुद राह नहीफ़
जज़बऐ तौफिक् शुद चूं दस्तयार
याफतम पस बरदरेआं क़लाबार
कुचाए दीदम बसेह तारीखो तंग
बाद नतवांनद ज़दन दरवे शनंग
नाग हानम जज्बएआं खिज़्रे राह
अज कशाकश हा आंहां शुदपनाह
राहे कूचा दर हरीमे खास बुर्द
रहनमोनश जज्बए अखलासबुर्द
यीं शुदह हरगह सआदत राहबर
बरसरेआं कुचाहमीं करदम गुज़र
नेक राह दरखलवत खासम कुजाअस्त
गोनुमाई राहे आखलवत बजाहस्त
जांके अज़ दिल बन्दाए आहं दरगहम
जजबाए फरमाईएआं खिज़्रैह रहम
बरसरेआं कूचाहस्तम खाक्सार
ताबेह बिनम नक्शपाए आं निग़ार
दीदहअंम खुद मन बसे रिन्दाने हिन्द
लेख कमतरअ अज़ मुरीदां ने तुअनद
दाअशतम हदेअदब चूं दर नज़र
[illegible] मुखतासर

सतगुरु श्री अलखेश्वरी जी अन्नग्रहे पत्र मौजाए वासकुरा तहसीले गान्दर बल से बालह पंडित जी के नाम

जवाब अज़ वासकुरा

दिल पसन्द अफज़ल हके यारे तुबाद
दर हरीमे खासे दिल बारेह तुबाद
मेहरबां पैबस्ता अहले दिल बतुह
कामे दिल बादाह हमांह हासिल बतुह
गोशकरदंम जुमला शरहेनमाहअ़त
खुश बयांबादनाअ जबाने खामहअत
गोबसूरत दूरी अज़ हिज्रम मनाल
लेकदर माने बमॉ दारद विसाल
नूरेमन बींगगर विहरसू जलवगर
आमदर हैवान नुखासाह हर बशर
नूरे पाक़म दरगिरफ़्ति अफाकरा
लक दानदहर केशुद मुश्ताकेमा
हेच दूरी नेस्त अजमताबहतू
दरमियां गर हस्त मंजिल हअबेहतू
राहबर मुश्ताकेमा बालाह तरस्त
हरके शुद मुश्ताकेमा नेक अखतरस
नूरमन ताबन्दहअज़ माहोव खुरअस्त
नूरमन रक्षन्दअहर अज गौहरअस्त
दर हक़ीकत गश्त अज़माह नामवर
इस्मे जिस्मो रंगरोए हर बश़र
खुदपरस्ती हस्त आज़ारे ग्रां बाबईं बाजारनेस्त
खुद फरोशां राह दरईं रह बारनेस्त
हस्तीए खुद भीमूबूद बाराए गरांह
खुदपरस्ती हस्त आज़ारे ग्रां
दर हरीम नेस्त बारे खुदपरस्त
वसले सा याबदचगोना खुदपरस्त
शेवाए मरदांने हक़ नबबद खुदी
अज़ खुदी बुदग़जर दिमां वासील शुदी
बे निशान आमद निशाने बेखुदां
सर बनेह बरआस्तांने बेखुदां
बेखुदां हस्तनद वालाहा दस्तगाह
शाहे वक्तो वसाहबे ताजो कलाह
बेखुदां खुद मुजहरे खासे हक़द
बेखुदां खुद महवजाते मुतलकंद

वाश फरमां बख्श शहरे बेखुदी
आशिनाए बरोह बैरहे बेखुदी
बसकेअज़ तासीरे उलफ़त हायेमाह
दरदितलअत असरार शरफां करदाज़ा
वाकीफे खुद अज़रमोजे फैज वसलह
अज़ फराह पैरी बरीह जो सुए असल
दरहक़ीकत हरची गुफतम हैरफीक़
याद दां इं बूज दर शर्ते तरीख
अज सदानंदे दुआगोएक़दीम
कुस्त बरअ दरग़ाह अखलासियत मुक़ीम
अज शश जहात दायम मज़ारज़ शहजहांत
ताबूद कायम करारे कायनात
सददुआ बादा बैरह वालत शमूल
जाकि मीं बाशद दुआएओ कबूल
बाश अज अलताफेमांह हज़ाने जाने-जान
कामरानी हीं जहांनो आन जहान।

हिंदी अनुवाद

बालह पंडित जू दर का प्रश्न पत्र देहली से जहां वह उस समय मुग़ल हुकूमत में मीर मुंशी थे।

स्थान : देहली

मेरी व्यथा-कथा सुन लिजिए
मेरे लाईलाज़ मर्ज का ईलाज़ कर लिजिए
जवानी के दिनों में मैं गल्तियां करता रहा
दिन-रात खाने और सोने का फिक्र भरता रहा
अपने उद्देश्य के बारे में मैं अनभिज्ञ था
वास्तव में पूरी तरह बेख़बर था
जब कृपा आपकी अपार मुझ पर हुई
तब महसूस मुझे यह हुआ
दुनिया क्षण भंगुर और नश्वर है
मगर मैंने इस हकीकत को भी स्वीकारा नहीं
मैं सच्चाई का बार-बार दावा करता रहा
लेकिन असत्य की राह पर बढ़ता रहा
यद्यपि आपने मुझ पर करम किया नवाज़िश की
तथापि मैं इस दौलत और [illegible] का अन्दाज़ा न लगा सका

मैं इसको नज़रअन्दाज करने की लापरवाही करता रहा
मैंने आपकी सेवा करने में कोताही की
जब मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ
तब मैंने महसूस किया कि मैं रौशनी के दरिया के किनारे हूं
इसके बाद मैंने आपकी रहमत को तलाशना शुरू किया
मेरे दिल में आपको ढूंढ़ने का जज्बा पैदा हुआ
इसके बाद मैं आपकी तलाश में बेक़रार रहा
मैं आपकी दर-दौलत से काफी दूर रहा
ऐ खुदा मुझे गुमराह करने वालों का घर बरबाद हो जाए
मैं अपने हक़ीकी मंजिल की जानिब चंद क़दम भी न चल सका
मैं दुनिया भर को पनाह देने वाले के दरवाज़े से काफी दूर रहा
एक दिन मेरी ख्वाजा खिज्र से मुलाकात हुई
उन्होंने मुझे मेरी असली मंजिल पर चलने की राह दी
मैं अभी मंजिल की ओर चला ही था
अचानक एक कुत्ता मेरे रास्ते की रूकावट बन गया
हालांकि आम तौर पर कुत्ता एक कौर के कारण
मालिक का वफादार होता है
मगर ये बदबख्त कुत्ता
असली मालिक के हजूर में जाने में रूकावट डालता है
हक़ीकी खालिक से दूर करने वाले इस कुत्ते से
दोस्तो दूर रहो
मैं अक्लमंद दोस्तों को इस खतरे से आग़ाह करता हूं
यह कुत्ता नहीं बल्कि दरिंदा शेर और एक भेडिये की मानिंद है
इस कुत्ते से जो खौफ़जदा हो जाए
वो हक़ीकी माबूद के हुजूर में जाने से वंचित हो जाता है
जब इस बदगवार कुत्ते ने मेरा दामन थामा तो
मेरे पैरों में जंजीर पड़ गई
इस कुत्ते ने ऐसा परेशान किया कि
हज़ार कोशिशों के बाद बड़ी मुश्किल से मैं एक क़दम
चल सकता था
इस कुत्ते से छुटकारा पाने पर मैंने किसी तरह से
इस रास्ते पर कदम बढ़ाए
तो मुझे एक किला नज़र आया
जो कि एक ऊंचे मुकाम पर स्थित था
पर मुझे महसूस हुआ कि
मंजिल खुद-ब-खुद मेरी ओर बढ़ रही है

अचानक मैंने देखा कि दस पहलवान
मेरी तरफ़ दौड़ रहे हैं
मेरे रास्ते में जो भी आए वो धोखेबाज़ और राहजन थे
खुदा के रास्ते में शैतान हमेशा रूकावट बनता है
मैं इस किले के भीतर जाने का रास्ता तलाशता रहा
ताकि उस खलवतग़ाह तक पहुंच सकूं
रास्ते में कई कुएं मौजूद थे
जिनकी जानिब
अय्यार मुझे ले जाने की कोशिश कर रहे थे
मैंने गलती की और इनमें से कुछ को
अपना दोस्त मान लिया
मैं अपनी कमग़फली के दम से कमज़ोर होता गया
इस पड़ाव पर खुदा की रहमत ने मेरी मदद की
और मैं इस आली मुकाम किले के दरवाजे तक
किसी तरह पहुंच गया
मुझे एक तंग और संकरी गली नज़र आई
इस गली में हवा भी दाखिल नहीं हो सकती थी
मैं बेहद परेशान और हैरान था
इस मुकांम पर खुद ख्वाजा खिज्र दोबारा नज़र आए
और उन्होंने मेरी रहनुमाई की
उसने मुझे उस खास महल का रास्ता दिखलाया
मुझे कुचाए यार की राह मिली
मग़र मैं रहबर के बगैर
उस परवरदिग़ार के हज़ूर में हाजिर नहीं हो सकता
मैं दिल से आपकी दरगाह का बन्दा हूं
मैं आपकी दरगाह की गली में मिट्टी की तरह पड़ा हूं
ताकि अपने प्रिय गुरु के चरण छू सकूं
मैंने हिन्दुस्तान में बड़े-बड़े पीर और गुरु देखे हैं
लेकिन वह सब आपके शिष्यों से बहुत कम ज्ञानवान थे
आपके दरबार में ज्यादा बोलना बेअदबी है
इसलिए संक्षेप में अपना हाल बयान कर दिया है।

सतगुरु श्री अलखेश्वरी जी अन्नग्रहे पत्र मौजाए वासकुरा तहसीले गान्दरबल से बालह पंडित जी के नाम

(वासकुरा)

मेरे दिल को पसंद
आला दर्जे के खुश... दोस्त

तेरी याद सलामत रहे
खुदा करे तू उसके दिल में हमेशा आबाद रहे
दिल वाले तुम पर हमेशा मेहरबान रहे
तेरे दिल की हर ख्वाहिश खुदा पूरी करे
मैंने तेरा ख़त पूरी ध्यान से सुना है
तुमने खुश ब्यानी से अपना सारा हाल ब्यान किया है।
तुम ख्वाह मुझ से बज़ाहिर दूर हो
लेकिन दर हक़ीकत तुम मेरे दिल के गोशा में मौजूद हो
खुदा का नूर हर तरफ है
उससे हरदोह जहां रौशन है
उसका नूर ही हर इन्सां और हैवान में समाया हुआ है
अगरचे नूर हर तरफ़ फैला हुआ है
मगर उसे वही महसूस करता है
जो कि उसका मुश्ताक हो
मेरे और तेरे बीच कोई फासला हाईल नहीं है
और इसमें ही तेरी मंजिल का रास्ता मौजूद है
खुदा का मर्तबा बहुत बुलंद है
उसका नूर बेशकीमती हीरे की मानिंद है
जो कि उसका मुश्ताक़ हो
वह बेहद खुशनसीब है
खुदा की रौशनी से चांद और सूरज चमकता है
उसका नूर हर मोती और जवाहर में मौजूद है
उसके नाम से ही हर एक नामबर है
उसका वजूद ही हर बशर के जिस्म, रंग, रूप में
समाया हुआ है
इस बाजार में मगरूर और खुदगर्ज़ के लिए
कोई जगह नहीं है
जो खुद को दुनियावी ऐय्याशों के हाथ बेच देता है
उसके लिए हमारे बाज़ार में कोई जग़ह नहीं है
मगरूरी एक भारी बोझ है
और खुदगर्ज खुदनफ़ज एक मर्ज है
हमारे हुजूर में किसी ःरीफ और नफ़सपरस्त और
मगरूर को आने की ईजाजत नहीं
नाही ऐसे लोग हमसे मिल सकते हैं
गरूर अलाह के बन्दो का शिवाह नहीं है
इसलिए खुदपरस्ती को दर किनार करके हमसे मिल जा

क्योंकि यकीनन हम भी उस आलाह ज़ात का लाज़िम
हिस्सा हैं
जो लोग खुदी को मिटा कर उसमें मिल जाते हैं
ऐसे मुरशीद अलमा की आस्ताने की खाक पर
अपना सिर रखो
उसकी ज़ात में समाने वालो के सामने
वक्त ताजदार और हकुमूत वालों की कोई हैसियत नहीं
जो खुद को मिटा देते हैं वही अलाह वाले हैं
वही इस ज़ात मुतलक में खुद को फनाह करते हैं
तुम भी उसी मुलक की बादशाहत हासिल करो
और बेखुदी के जमीन व समन्दर में हमेशा के लिए खो जाओ
ऐसे ही लोगों की मोहब्बत की तासीर से
तेरे दिल में अराफ़त के राज़ जाहिर होंगे
यही लाफ़ानी जिन्दग़ी का राज़ है
उसकी ज़ात में समा जाना ही असली वसल है और
उसके कर्म का अज़हार है
इसी में दायिमी सकून है
इसी शाख से दरख्त की
असली जड़ का पता चलता है
हे दोस्त मैंने जो कुछ कहा है
वही दायिमीनज़ात और उसके
रास्ता में खुद को फनाह करने की असली शर्त्त है
इसी से बशर की हस्ती ख़ुदा में समाई है
जो कि लाफानी है और जिसका कोई आदि और अंत नहीं है।
ये तुम को कदीमी दुआगो की जानिब से
जो कि हमेशा तेरा आन्नद चाहता है
ये सदा आन्नद तेरे में ही पनाह है
और तू उसे अपने अंदर ही पा सकता है
जब तक ये दुनिया क़ायम है और क़ायनात बरकरार है
मेरी सैकड़ों दुआएं तेरे साथ रहें
और मेरी दुआ खुदा कबूल करे
हे मेरे अजीज हमारे कर्म फरमां
इस दुनिया और अगली दुनिया में तेरे को कामरानी मिले।

●

रूपभवानी की विरासत

(कश्मीरी दर पंडितों की वंशावली)

7

रूपभवानी की विरासत

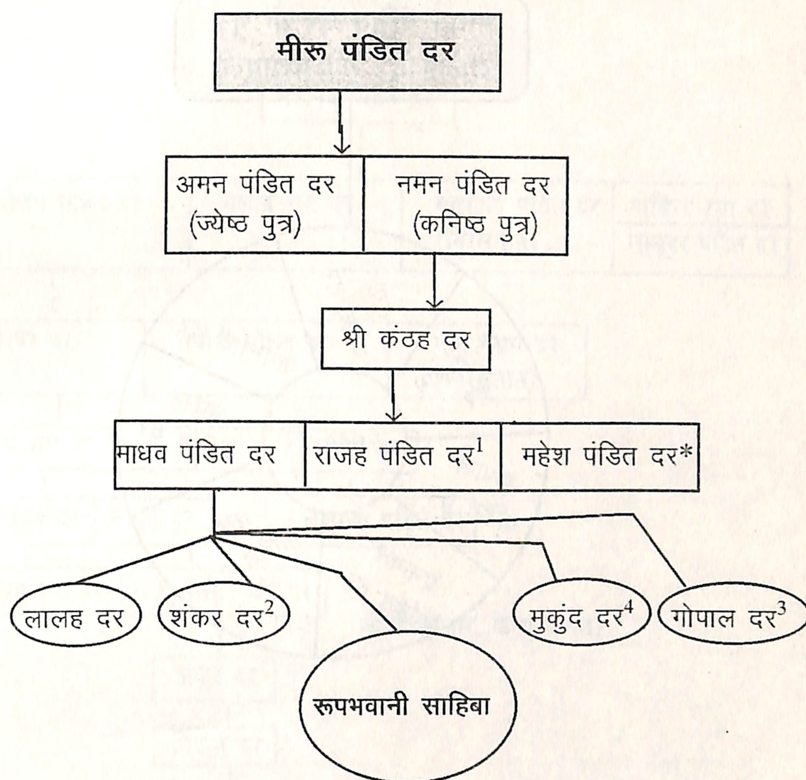
रूपभवानी साहिबा के पिता का नाम माधव जू दर था। रूपभवानी के पितामह श्री कण्ठह पंडित दर थे जो नमन पंडित के पुत्र थे। नमन पंडित, मीरू पंडित के पुत्र थे। रूपभवानी साहिबा के चार भाई लालह दर, शंकर दर, मुकुंद दर और गोपाल दर थे।

मीरू पंडित कौन थे?

मीरू पंड़ित के पूर्वज़ सुल्तान सिकंदर (1389 ई. से 1413 ई.) के शासनकाल में कश्मीर छोड़कर भारत के दक्षिण प्रदेश में चले गए थे। इन्ही पूर्वजों की एक संतान थी मीरू पंड़ित जो दक्षिण में गोलकुंडा के दुर्ग का एक सैनिक उच्चाधिकारी था। फिरोजशाह और जहांगीर की सेना में युद्ध के दौरान मीरू पंडित ने फिरोजशाह को विजय दिलवाई थी और गोलकुंडा किले की रक्षा की थी। दूसरी बार युद्ध में फिरोजशाह ने जहांगीर के समक्ष समर्पण कर दिया तथा मीरू पंडित को किला जहांगीर को सौंपने का निर्देश दिया। विवश होकर मीरू पंडित इलियचपुर से वापिस दिल्ली आ गए। वहां वे अपने मित्र शिराज के हकीम अब्दुल फतेह से मिले। अपने मित्र की सहायता से उन्हें नूरजहां के नेतृत्व में 600 पैदल सेना के कमांडर के रूप में नियुक्त किया गया। इसके बाद जब जहांगीर ने काबुल जाने की सोची तो काबुल के सूबेदार महाबत खान, जहांगीर के स्वागत के बहाने सात हजार सैनिकों सहित झेहलम नदी के किनारे पहुंच गए। महाबत खान ने सेवा-सुश्रुआ के बहाने जहांगीर को बंदी बना लिया। यह समाचार जंगल की आग की तरह दिल्ली में फैल गया। जैसा ही नूरजहां ने यह समाचार सुना वह दल-बल सहित झेहलम पहुंच गई। उन्होंने बहादुरी से महाबत खान का मुकाबला किया तथा उसे बंदी बना लिया। जहांगीर और नूरजहां इकट्ठे धूमधाम से दिल्ली वापिस आ गए। कुछ दिनों के बाद जहांगीर और नूरजहां ने पुनः कश्मीर जाने का इरादा बनाया। उन्होंने मीरू पंडित को भी अपने साथ चलने को कहा। मीरू पंडित ने महाबत खान को हराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। अतः उसे साथ ले जाना बादशाह और बेग़म ने उचित समझा। बादशाह ने मीरू पंडित को बुलाकर कहा 'मीरू पंडित! हम जानते हैं कि तुम कश्मीर के रहने वाले हो, निस्संदेह कश्मीर के लोगों के साथ तुम्हारा सम्पर्क अधिक होगा।' मीरू पंडित द्वारा हामी भरने के बाद बादशाह ने कहा "जैसे कि कश्मीर तुम्हारी पितृ-भूमि है, हमारी इच्छा है कि तुम शेष जीवन कश्मीर में व्यतीत करो। हम तुम्हारे पुत्र को जागीर दे देंगे और तुम्हें कामराज प्रांत के किले का प्रबंध कार्य सौंप देंगे। तुम सोपोर, श्रावपोर

तथा बारामुला में किले बना सकोगे तथा लोलाब, वुतर, खव तथा मुजफर्राबाद से रक्षक नियुक्त कर सकोगे। इसके लिए जागीर के रूप में मिलने वाले गांवों का भी तुम स्वयं चयन कर सकोगे।"

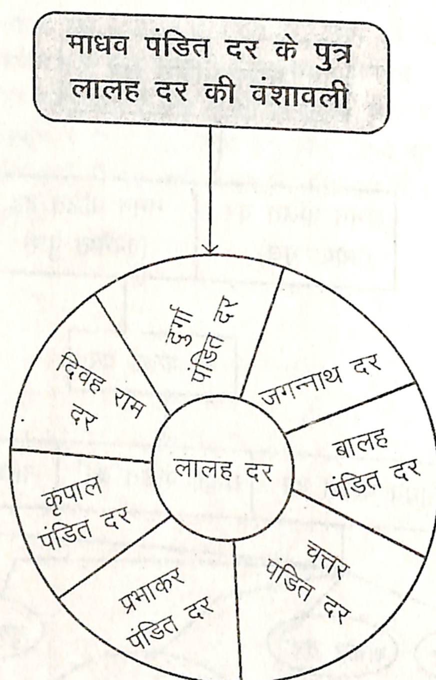
मीरू पंडित ने बादशाह के इस विचार पर मनन करने के लिए एक दिन की मोहलत मांगी। अगले दिन सुबह मीरू पंडित ने जहांगीर को जागीर स्वरूप दिए जाने वाले गांवों की सूची प्रस्तुत की। शाही हस्ताक्षरों सहित एक सनद मीरू पंडित को प्रदान की गई। मीरू पंडित को रामोह गांव की जमीन तथा कामराज में यंबरजलवारी दिया गया। ईलाचपुर से प्रस्थान कर मीरू पंडित अपने परिवार सहित चार मास और नौ दिन में कश्मीर पहुंचे। वे जागीर में मिली जमीन में खेती बाड़ी तथा किलों के निर्माण व उनके रख-रखाव तथा सेना आदि की भर्ती का कार्य करते रहे। अपने समस्त जीवन काल में वे सीमांत क्षेत्रों के प्रभारी अधिकारी रहे। इन्हीं मीरू पंडित के वंशज हैं—कश्मीर के दर पंडित।



1. राजह पडित दर की वंशावली पृष्ठ 135 पर है।
2. मुकुन्द दर और शंकर दर की वंशावली पृष्ठ 130 पर है।
3. गोपाल दर की वंशावली पृष्ठ 132-134 पर है।

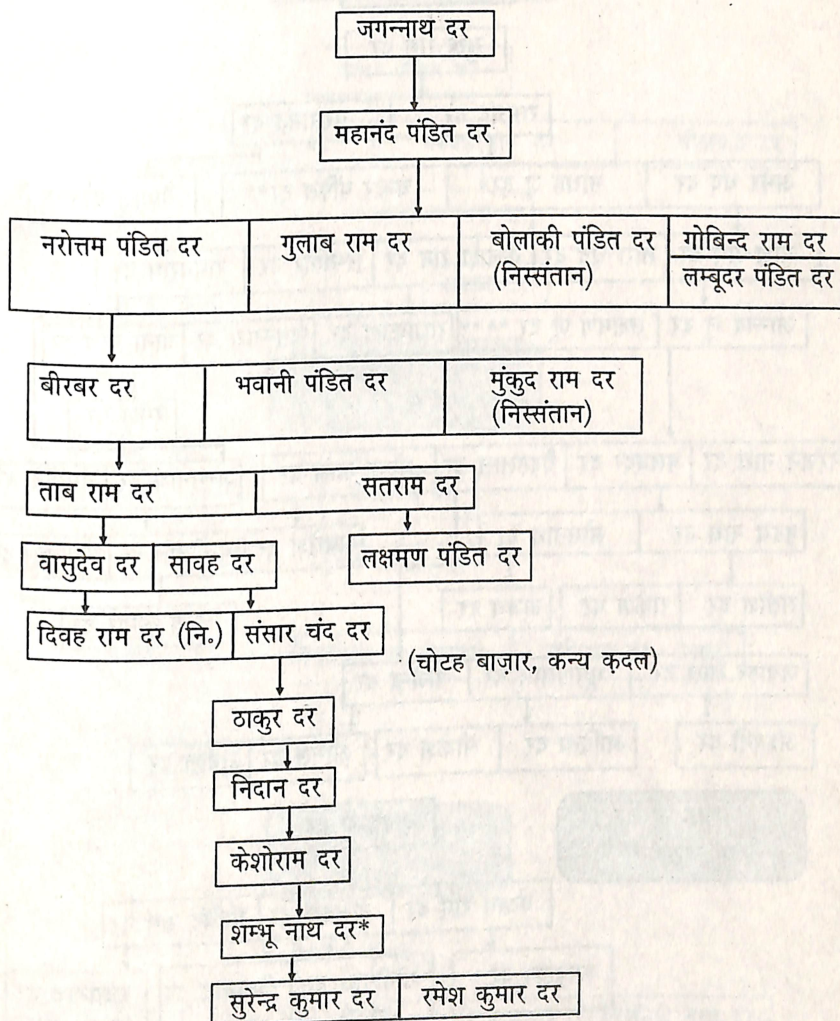
* कुछ एक ग्रन्थों में श्री कंठह दर के दो ही पुत्रों का उल्लेख किया गया है। माधव पंडित दर और राजह पंडित दर की वंशावली उपलब्ध है जबकि महेश पंडित दर का उल्लेख केवल पंडित बलकाक दर के संकलन तथा पंडित कृष्ण जू दर की पांडुलिपि में ही आया है। कंठह दर के इस तीसरे पुत्र की वंशावली भी उपलब्ध नहीं है।

नमन पंडित दर की वंशावली



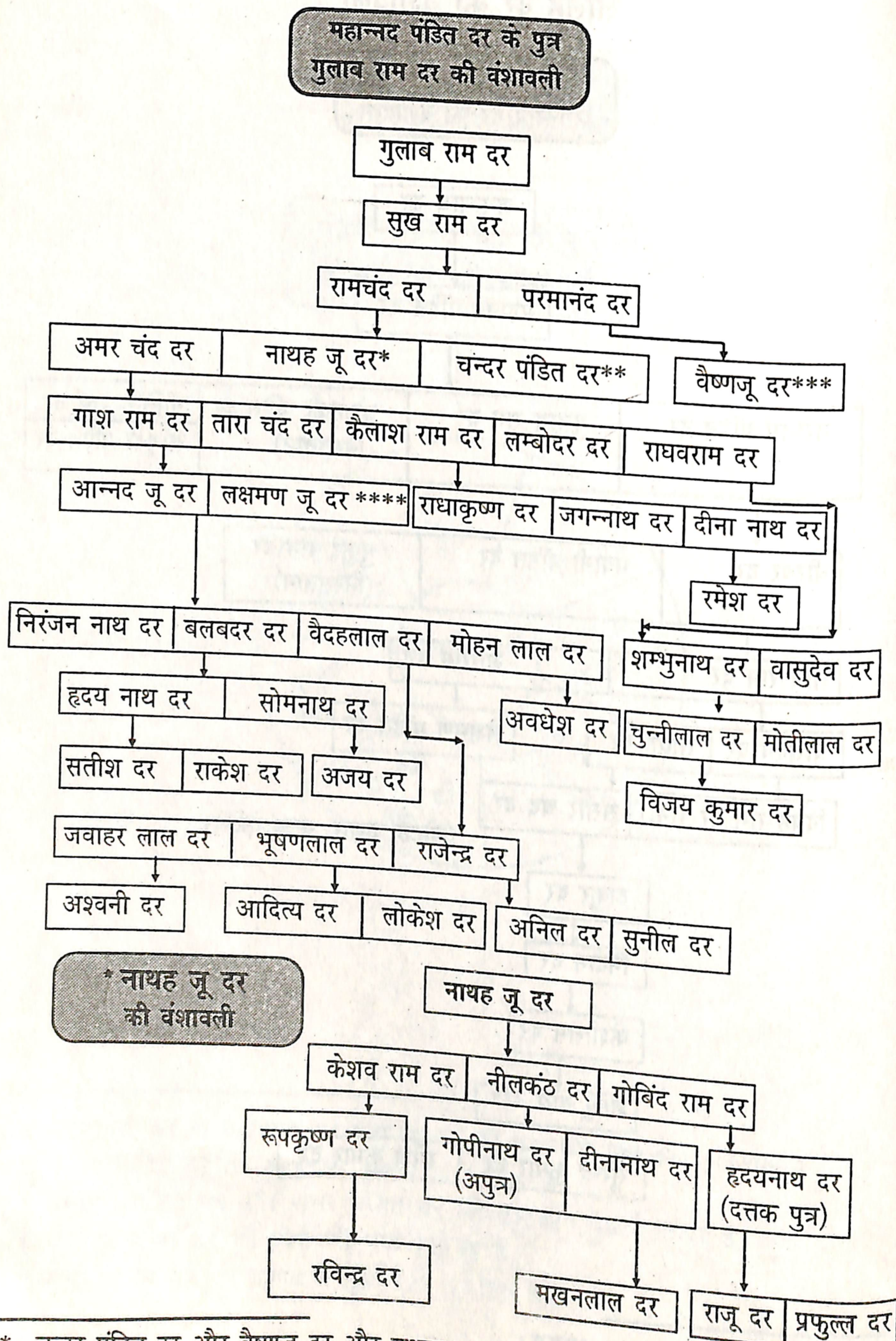
1. जगन्नाथ दर के एकमात्र पुत्र महानंद दर की वंशावली पृष्ठ 113-115 तक है
2. बालह पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 116-124 तक है।
3. प्रभाकर पंडित दर और चत्तर पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 128 पर है।
4. कृपाल पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 129 पर है।
5. दुर्गा पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 126-127 तक है।

लालह दर की वंशावली....



स्रोत-साभार : * शम्भूनाथ दर, आगरा।

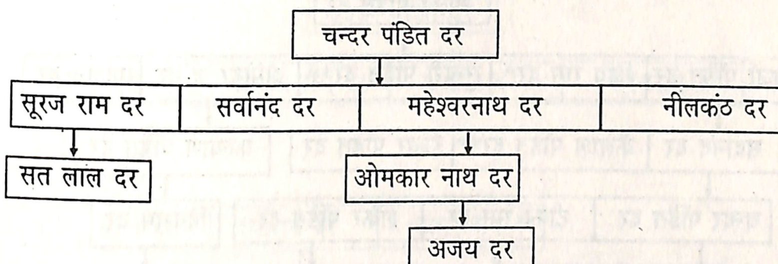
लालह दर की वंशावली...



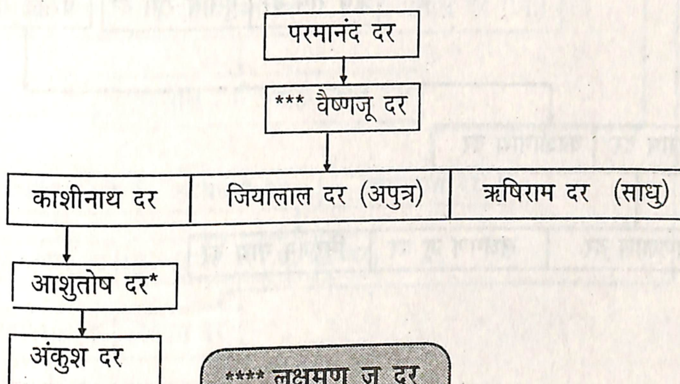
** चन्दर पंडित दर और वैष्णजू दर और लक्ष्मण जू दर की वंशावली पृष्ठ 115 पर है।

लालह दर की वंशावली....

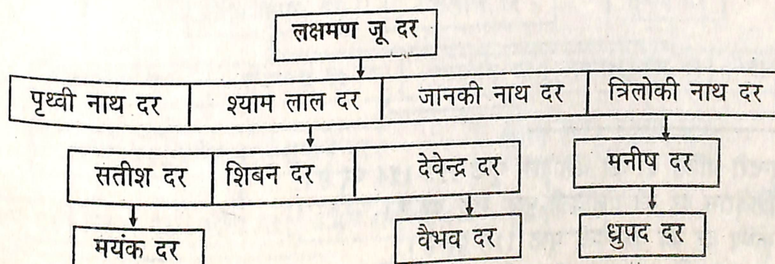
महानंद पंडित के पुत्र
गुलाब राम दर की वंशावली



सुखराम दर के पुत्र
परमानंद दर की वंशावली

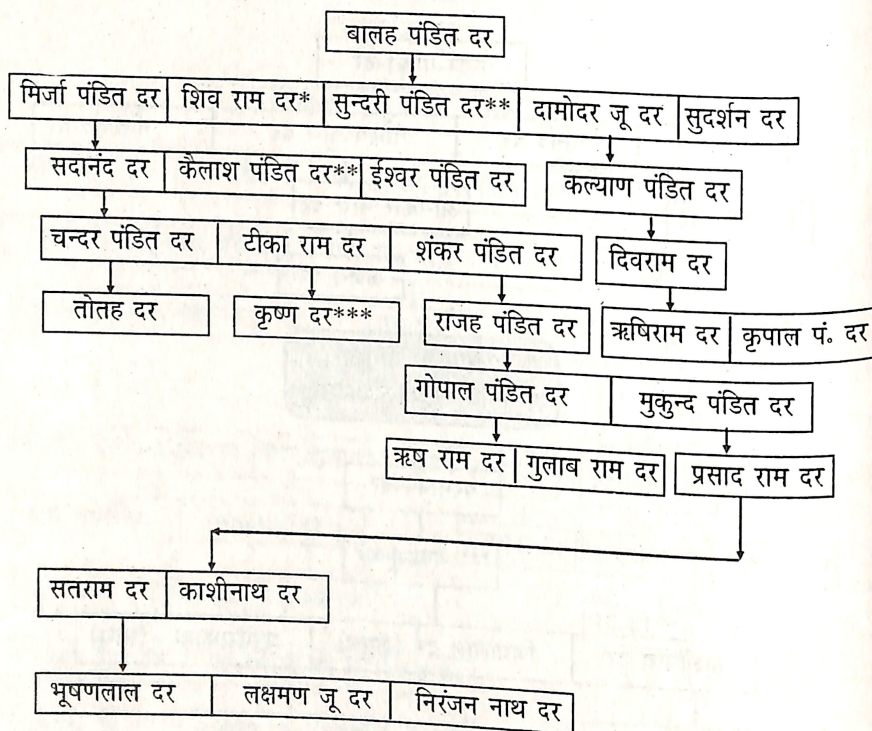


**** लक्षमण जू दर
की वंशावली



लालह दर की वंशावली...

लालह दर के पुत्र
बालह दर की वंशावली



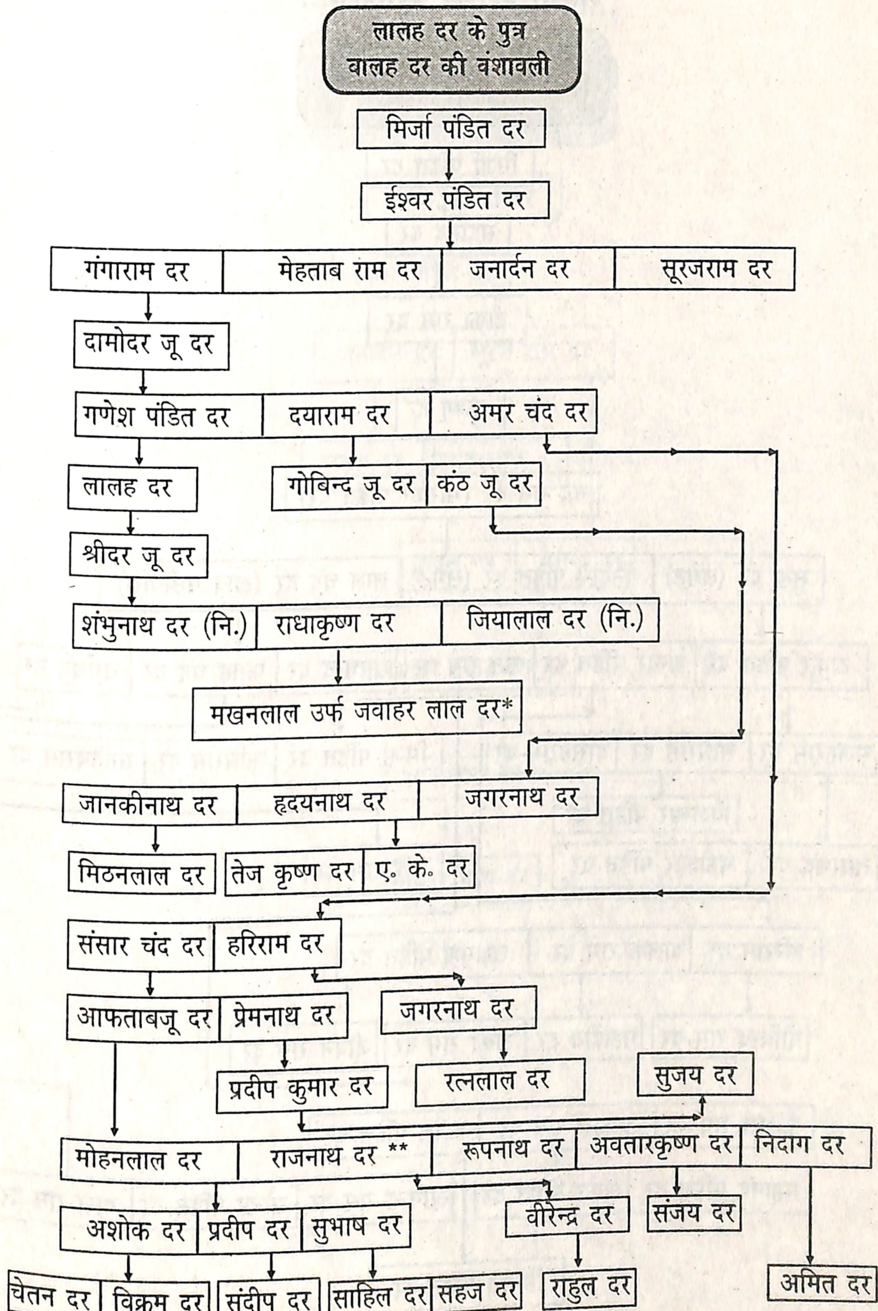
** सुन्दरी पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 123-124 पर है।

* शिवराम दर की वंशावली पृष्ठ 122 पर है।

*** कृष्ण दर की वंशावली पृष्ठ 118 पर है।

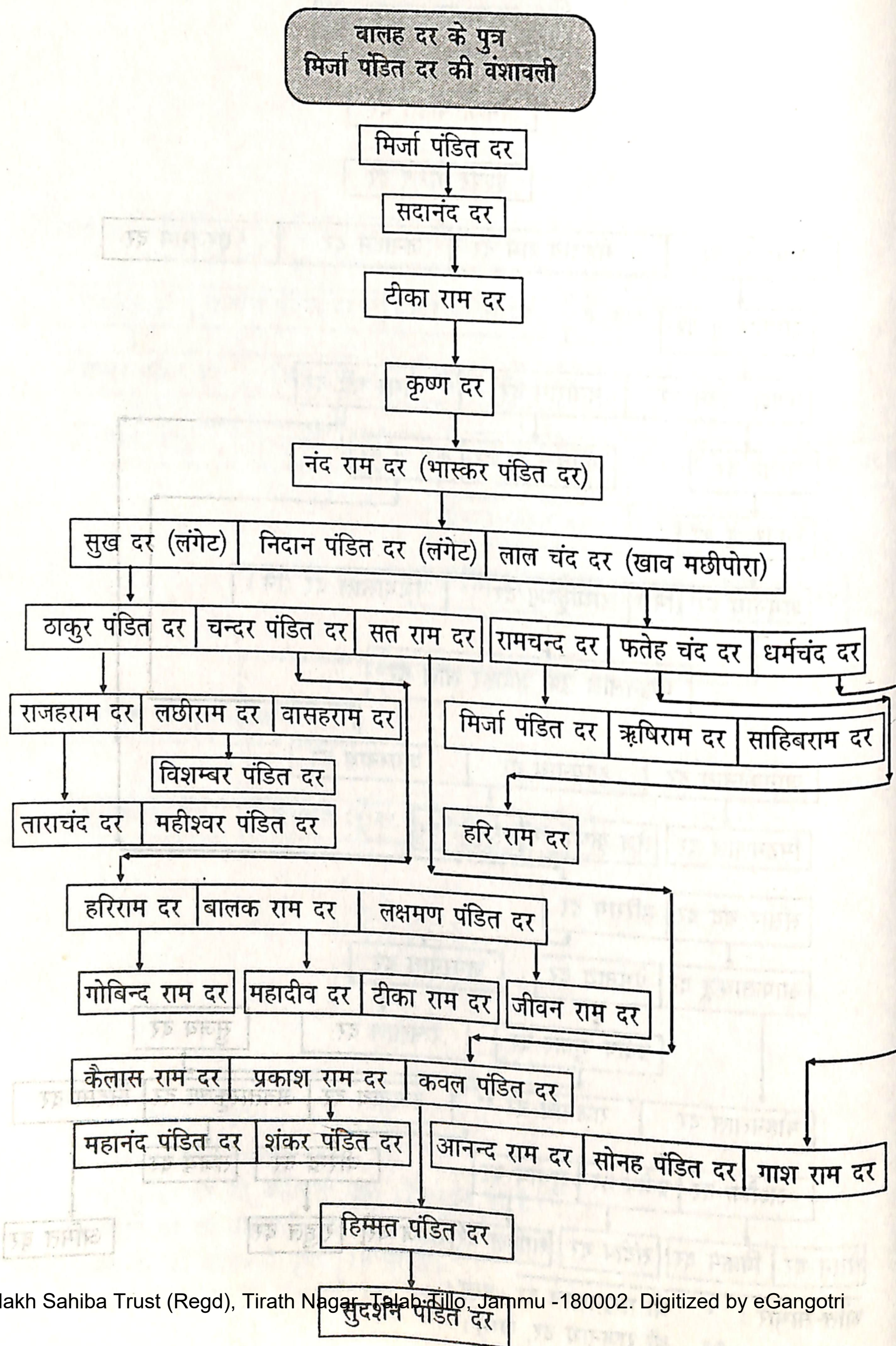
** कैलाश पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 120 पर है।

लालह दर की वंशावली...

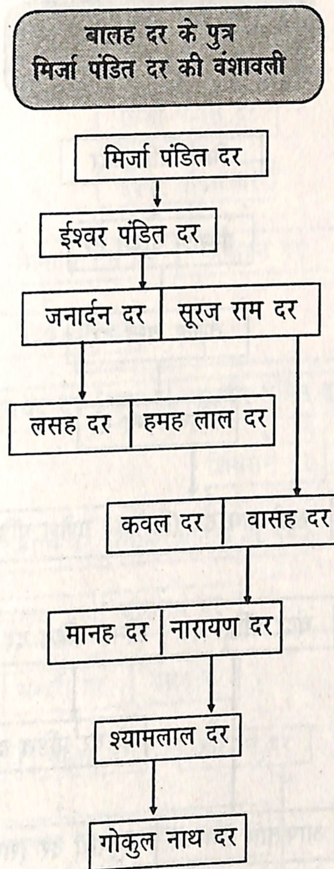


स्रोत-साभार : * श्री मखनलाल दर, जम्मू।
** श्री राजनाथ दर, जम्मू।

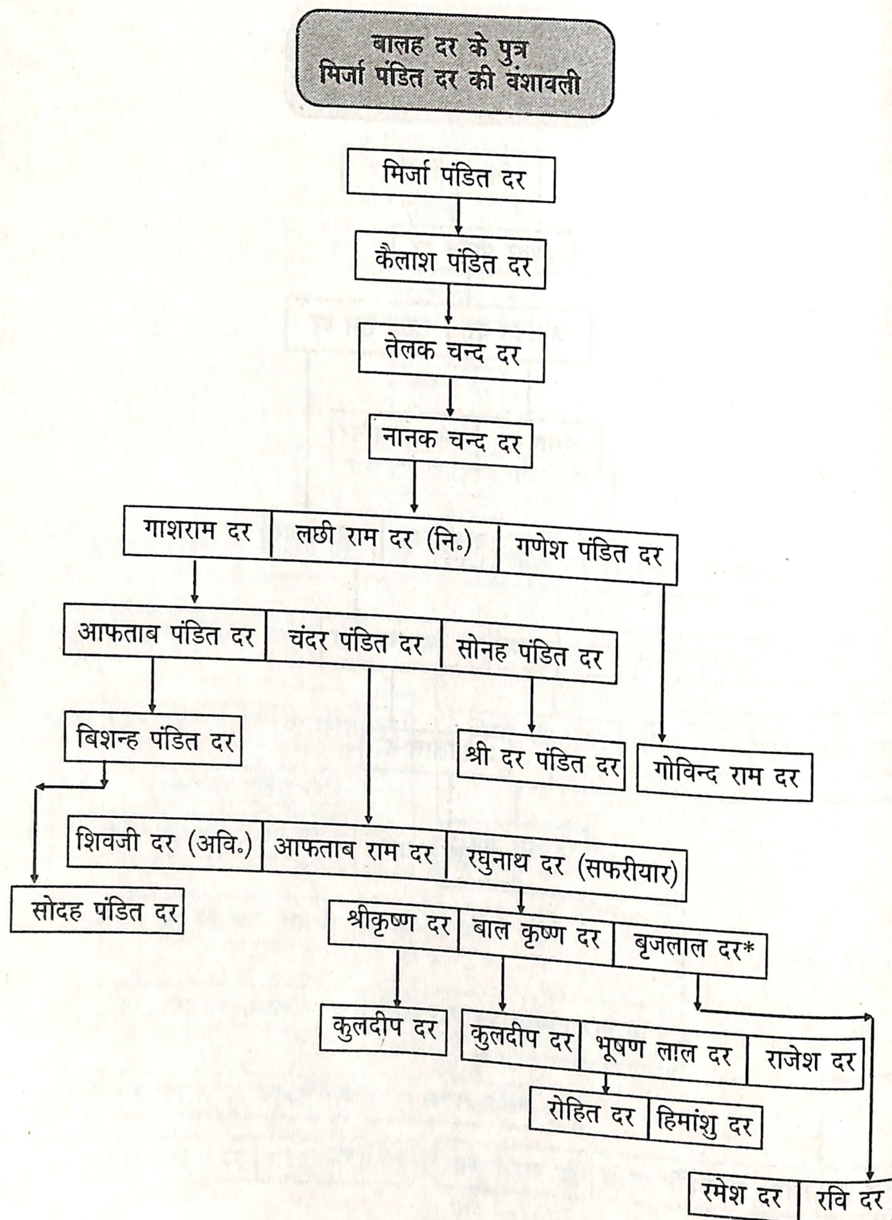
लालह दर की वंशावली...


लालह दर के पुत्र
मिर्जा पंडित दर की वंशावली
मिर्जा पंडित दर
सदानंद दर
टीका राम दर
कृष्ण दर
नंद राम दर (भास्कर पंडित दर)
सुख दर (लंगेट)
निदान पंडित दर (लंगेट)
लाल चंद दर (खाव मछीपोरा)
ठाकुर पंडित दर
चन्दर पंडित दर
सत राम दर
रामचन्द दर
फतेह चंद दर
धर्मचंद दर
राजहराम दर
लछीराम दर
वासहराम दर
मिर्जा पंडित दर
ऋषिराम दर
साहिबराम दर
विशम्बर पंडित दर
ताराचंद दर
महीश्वर पंडित दर
हरि राम दर
हरिराम दर
बालक राम दर
लक्ष्मण पंडित दर
गोबिन्द राम दर
महादीव दर
टीका राम दर
जीवन राम दर
कैलास राम दर
प्रकाश राम दर
कवल पंडित दर
महानंद पंडित दर
शंकर पंडित दर
आनन्द राम दर
सोनह पंडित दर
गाश राम दर
हिम्मत पंडित दर
सुदर्शन पंडित दर

लालह दर की वंशावली...

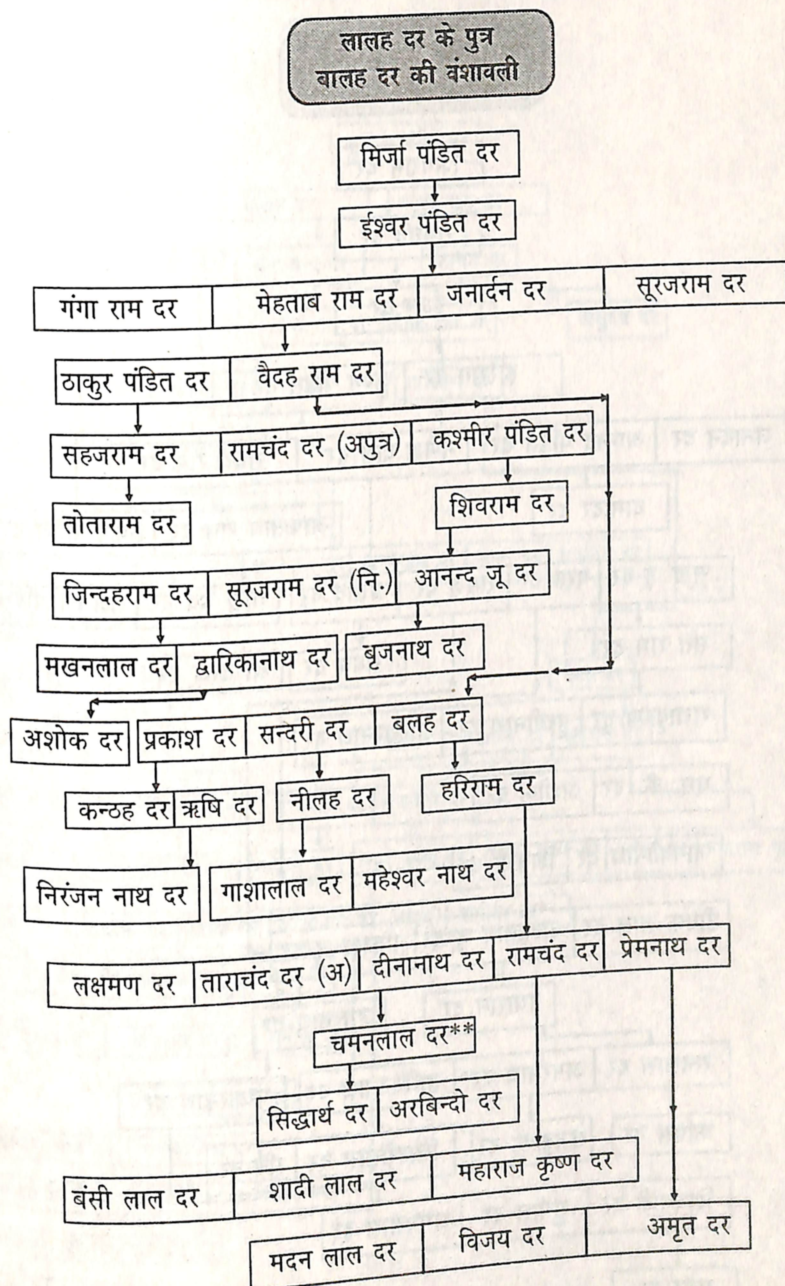

बालह दर के पुत्र
मिर्जा पंडित दर की वंशावली
मिर्जा पंडित दर
ईश्वर पंडित दर
जनार्दन दर
सूरज राम दर
लसह दर
हमह लाल दर
कवल दर
वासह दर
मानह दर
नारायण दर
श्यामलाल दर
गोकुल नाथ दर

लालह दर की वंशावली...



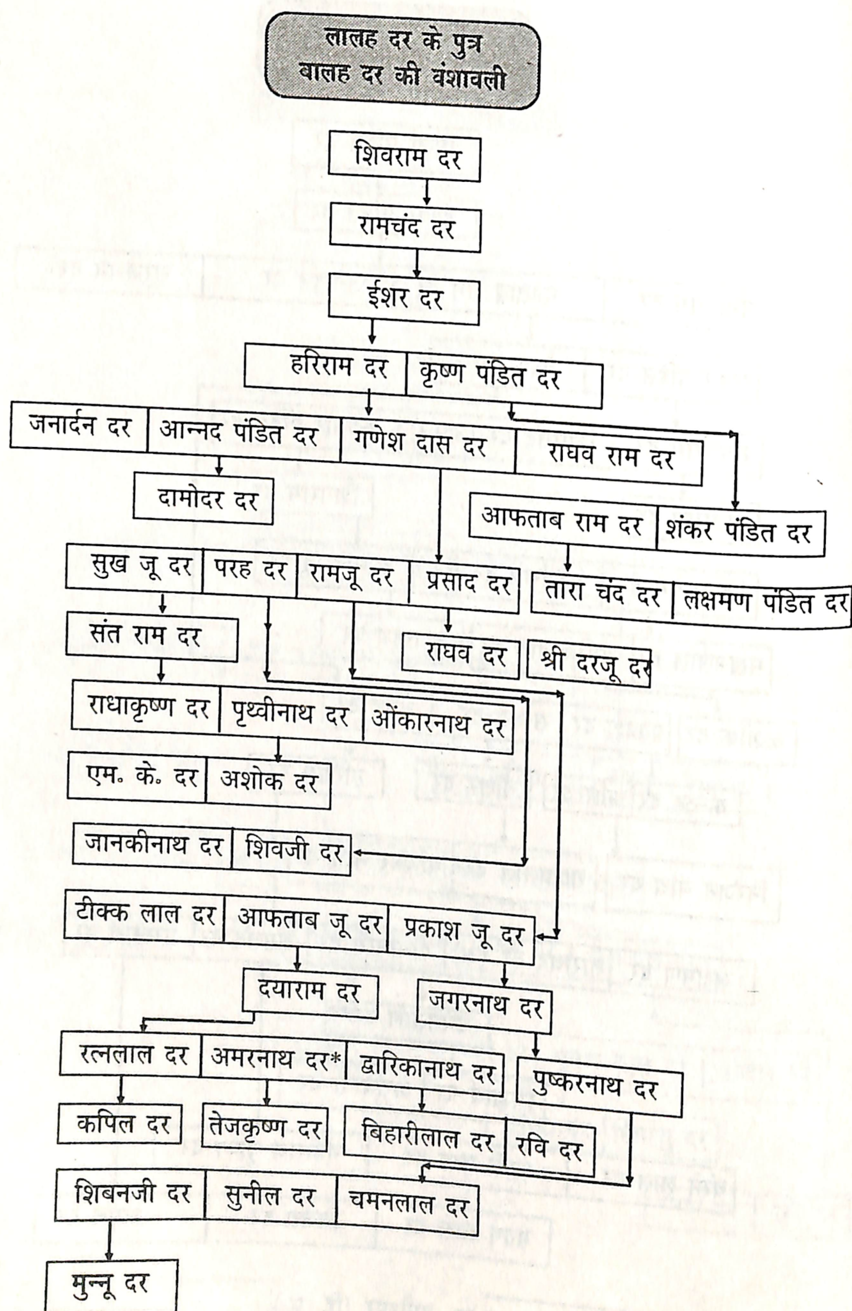
स्रोत-साभार : श्री बृजलाल दर, जम्मू।

लालह दर की वंशावली...



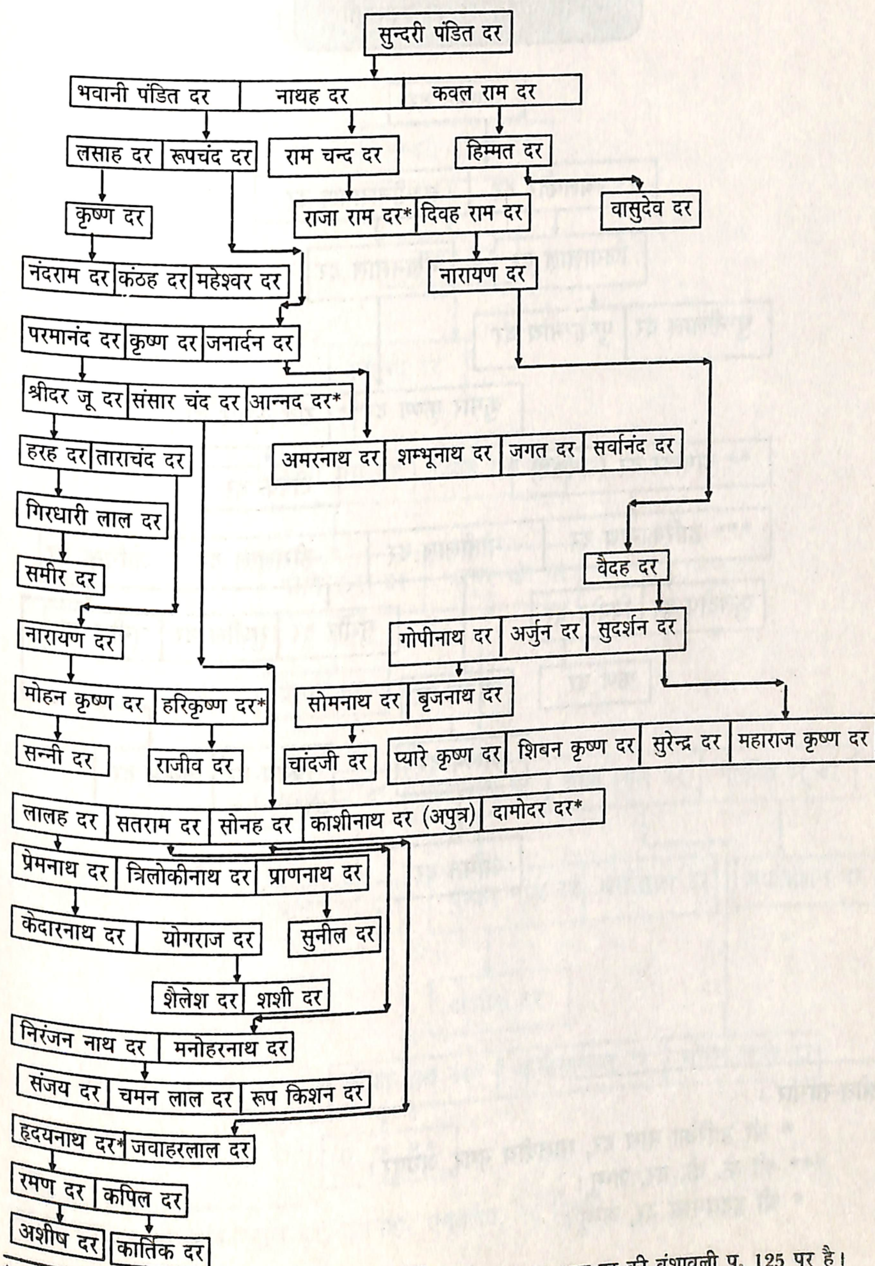
स्रोत साभार : ** श्री [illegible] लाल दर, हमीरपुर (हि॰ प्र॰)

लालह दर की वंशावली...



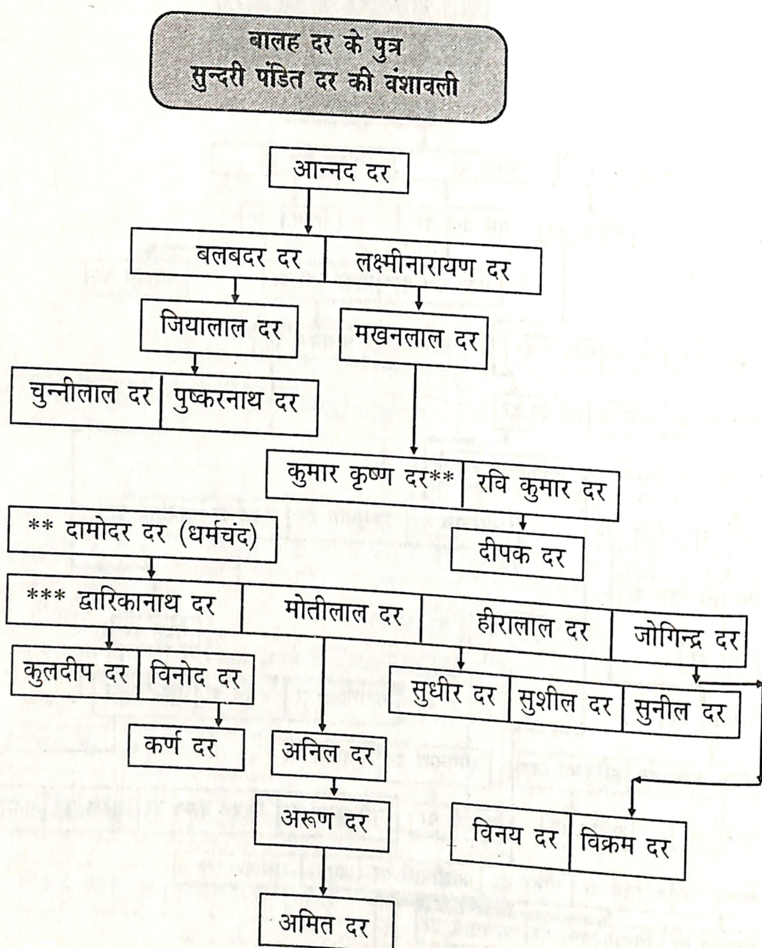
* स्रोत-साभार : श्री अमरनाथ दर, न्यू प्लाट, जम्मू।

लालह दर की वंशावली...



* आनन्द दर व दामोदर दर की वंशावली पृ. 124 पर है। * राम चन्द दर की वंशावली पृ. 125 पर है।
* स्रोत-साभार : श्री हरिकृष्ण दर, श्री हृदयनाथ दर दिल्ली।

लालह दर की वंशावली...



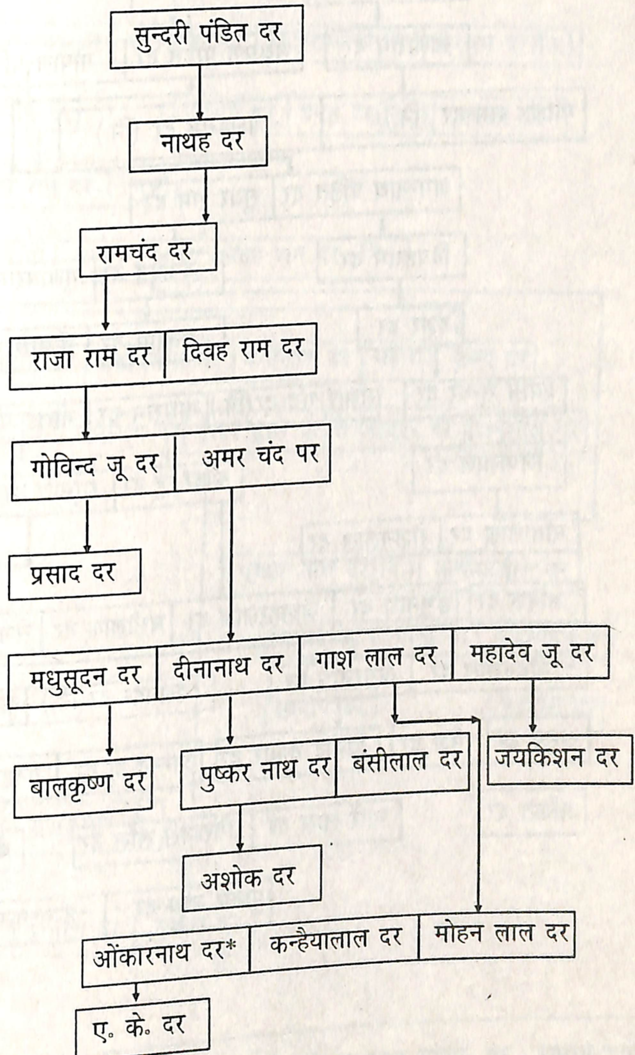
स्रोत-साभार :

* श्री द्वारिका नाथ दर, मालवीय नगर, जयपुर।

*** श्री के. के. दर, जम्मू।

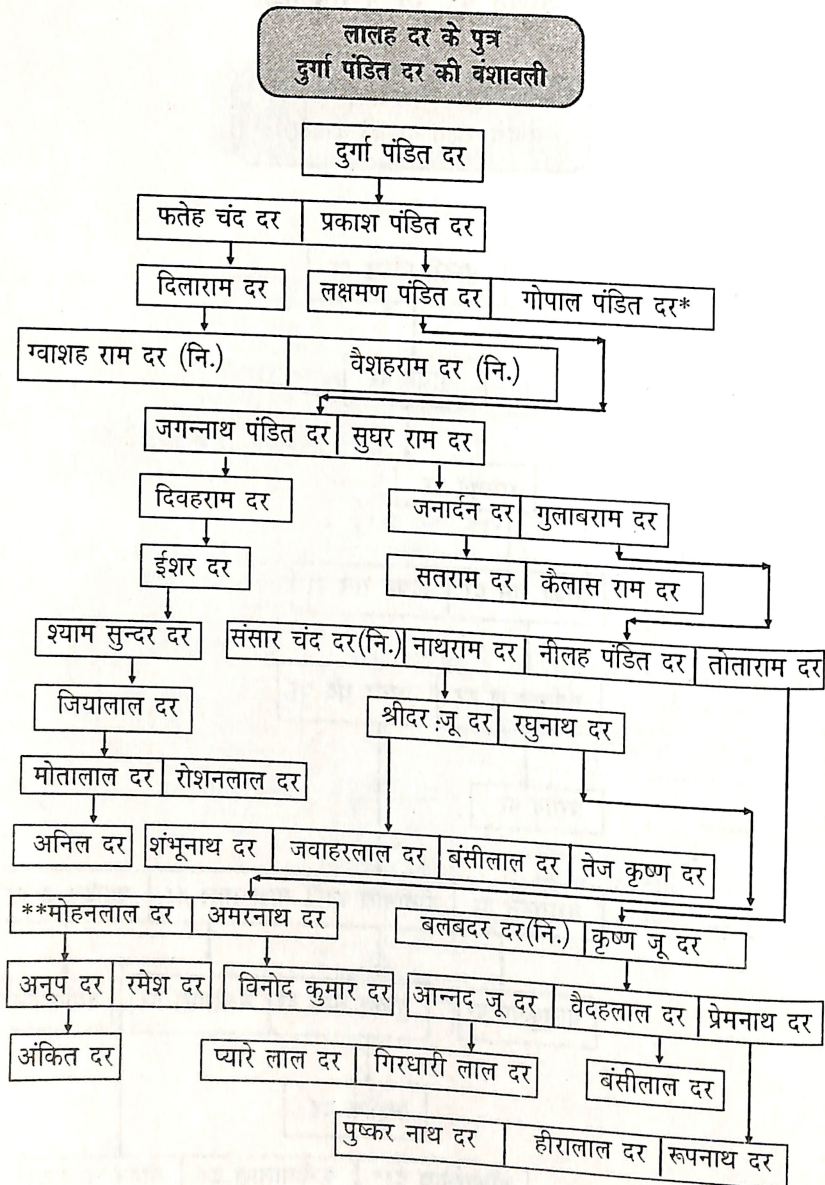
* श्री हृदयनाथ दर, जम्मू।

लालह दर की वंशावली...



स्रोत-साभार : श्री ओंकारनाथ दर, गुलमोहर एनक्लेव, नई दिल्ली।

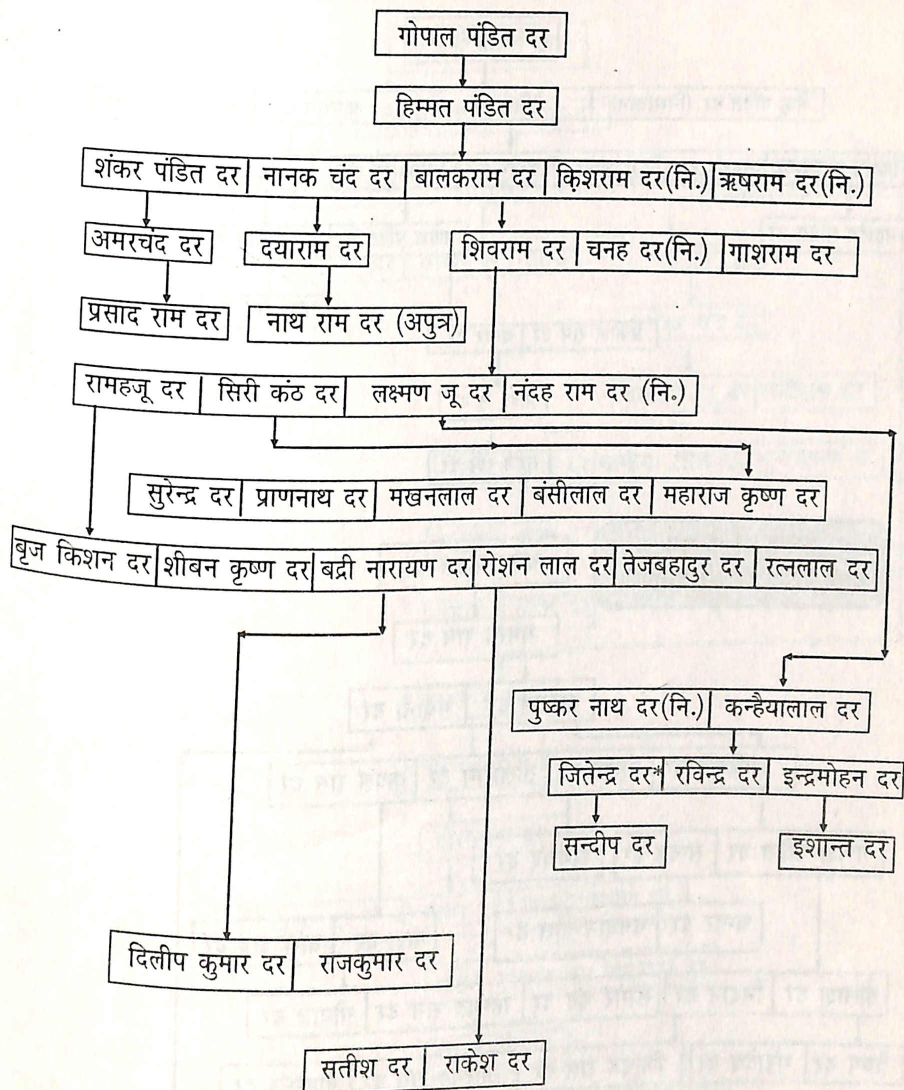
लालह दर की वंशावली...



स्रोत-साभार : स्व० मोहन लाल दर, दिल्ली

* गोपाल पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 127 पर है।

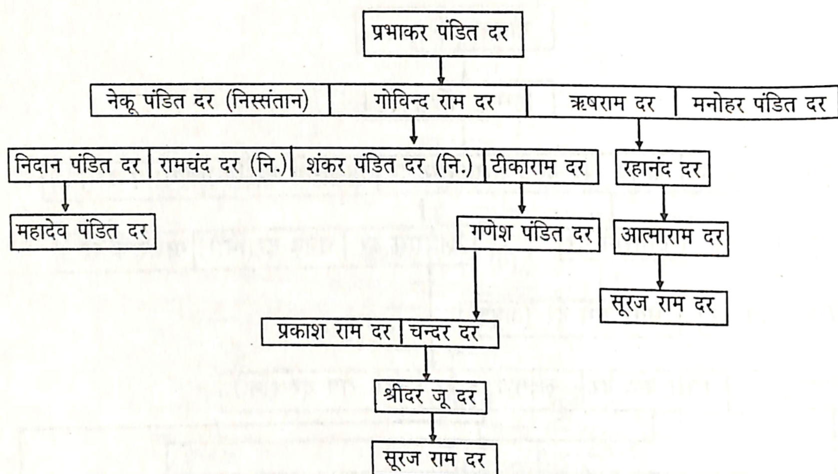
लालह दर की वंशावली...



स्रोत-साभार : * जितेन्द्र दर, जम्मू।

लालह दर की वंशावली...

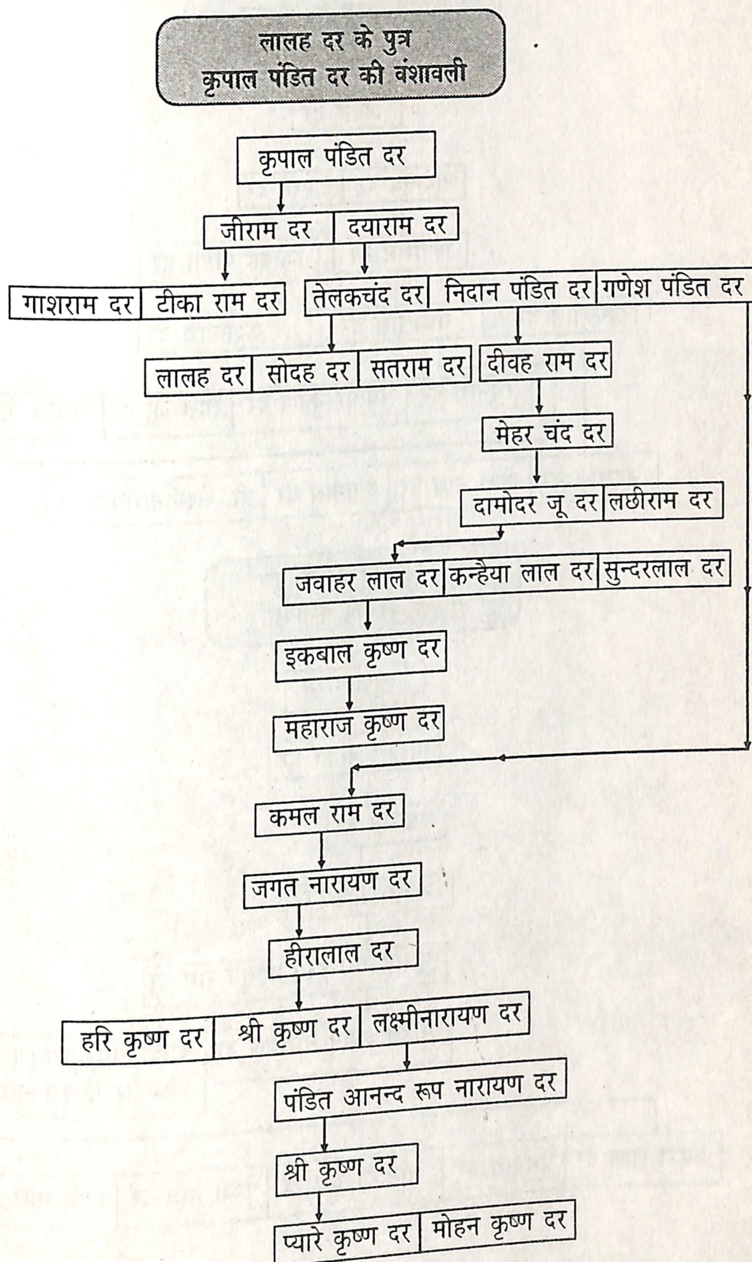
लालह दर के पुत्र प्रभाकर पंडित दर की वंशावली



लालह दर के पुत्र चत्तर पंडित दर की वंशावली

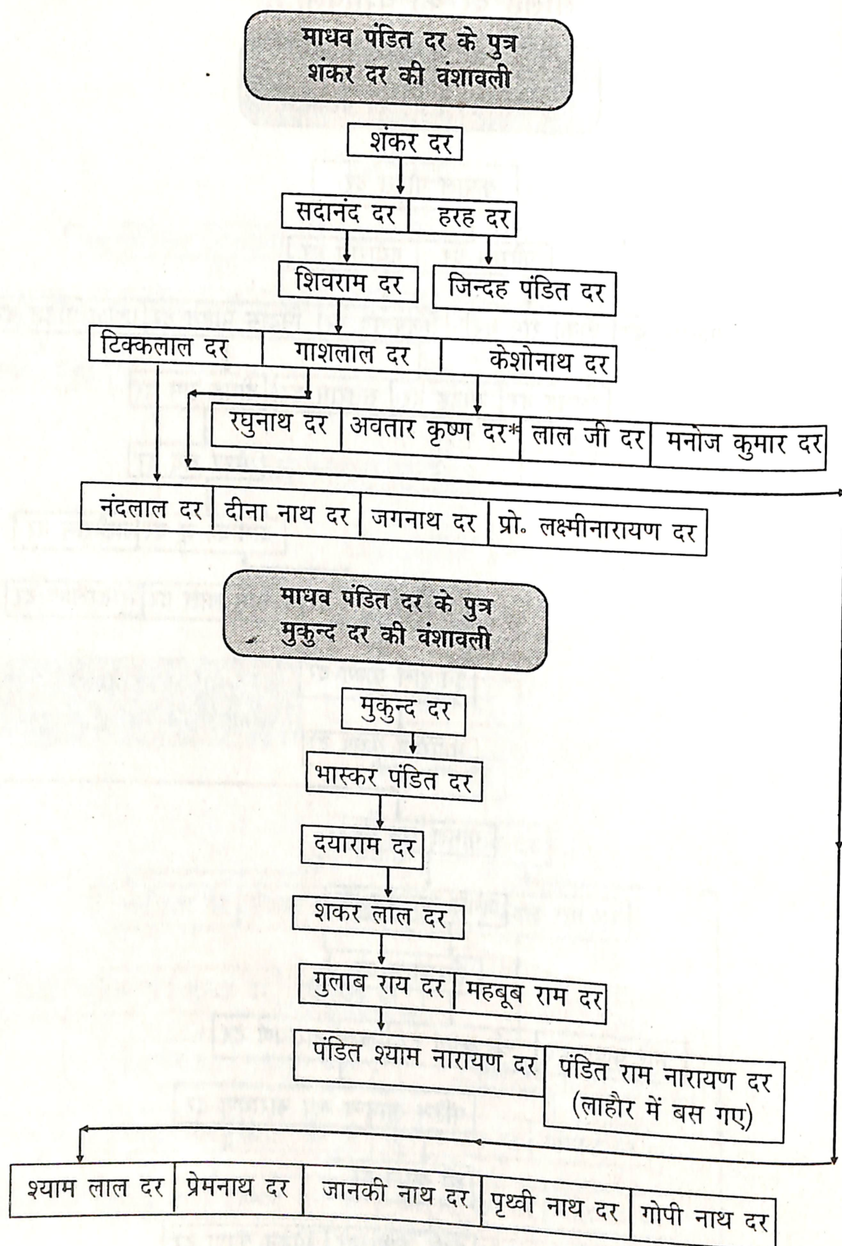
चत्तर पंडित दर
मनसा राम दर
हरिराम दर | भवानी दर
लछीराम दर | नीलह दर | तोलाराम दर | कवल राम दर
गणेश पंडित दर | सन्दह दर | धर्मचंद दर
चन्दर दर | भगवान दास दर
गाश दर | वास दीव दर
कैलाश दर | निदान दर | संसार चंद दर | हिम्मत राम दर | गोपाल दर
वैष्ण दर | महादेव दर | जिन्दह राम दर | आन्नद राम दर | नीलकंठ दर
सुख दर | गोवर्धन दर | सूरज राम दर | गोपाल पंडित दर (अपुत्र)
टिक्का राम दर | धर्मचंद दर | लाल चंद दर
शिव राम दर | शंकर पंडित दर

लालह दर की वंशावली...



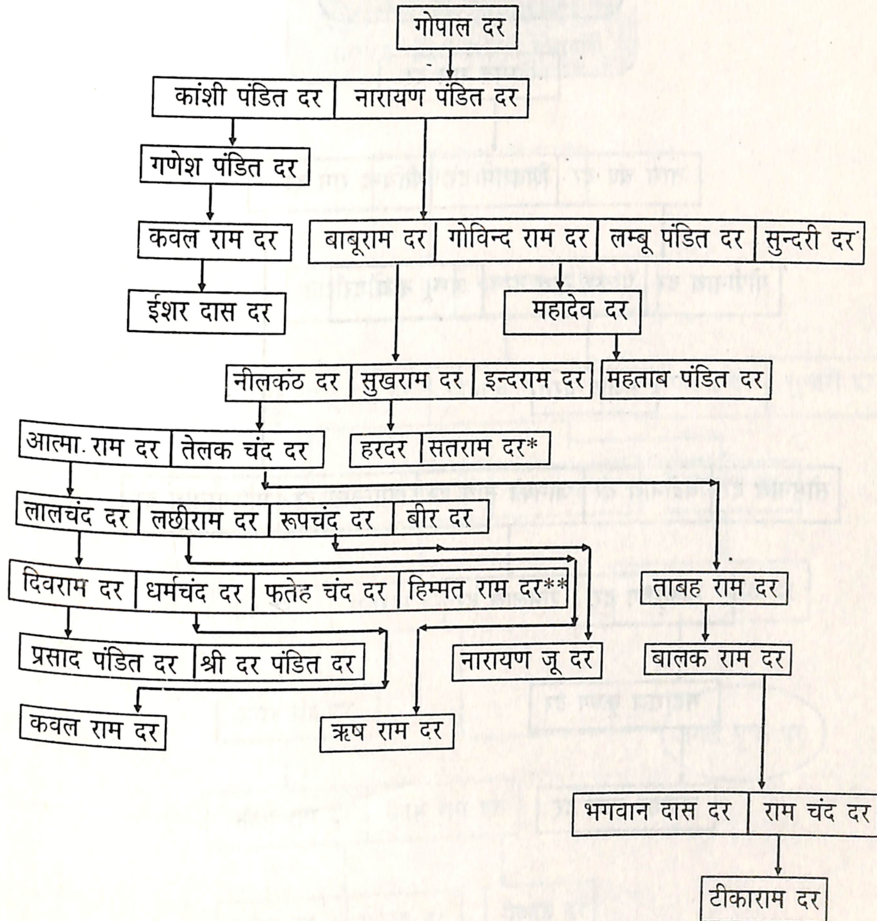
स्रोत साभार : सुश्री अपर्णा दर।

शंकर पंडित दर की वंशावली...



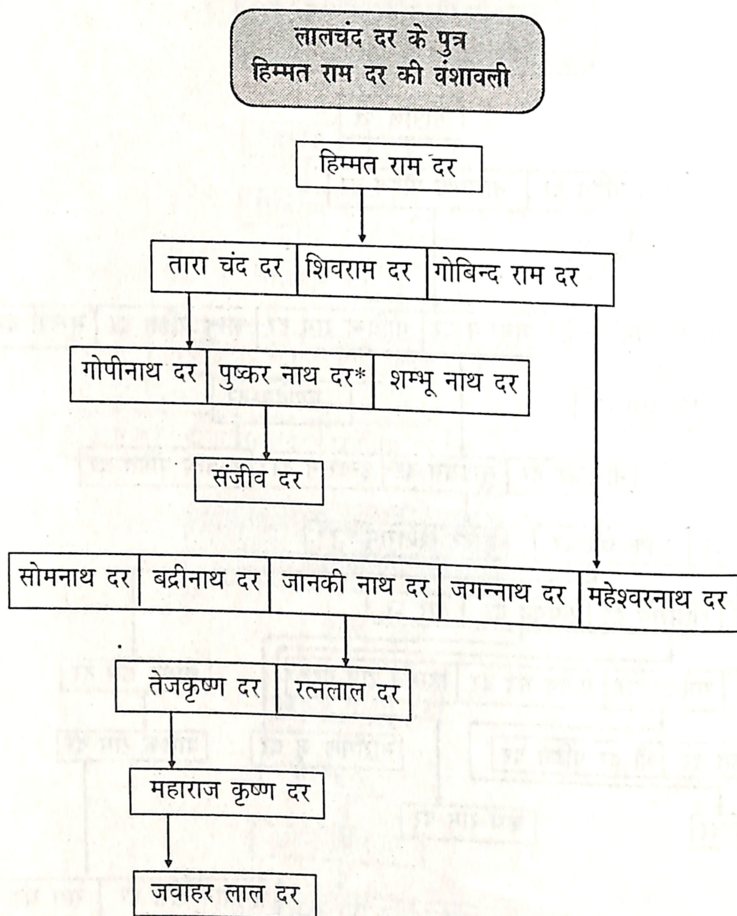
स्रोत-साभार : * अवतार कृष्ण दर, जम्मू।

गोपाल पंडित दर की वंशावली...



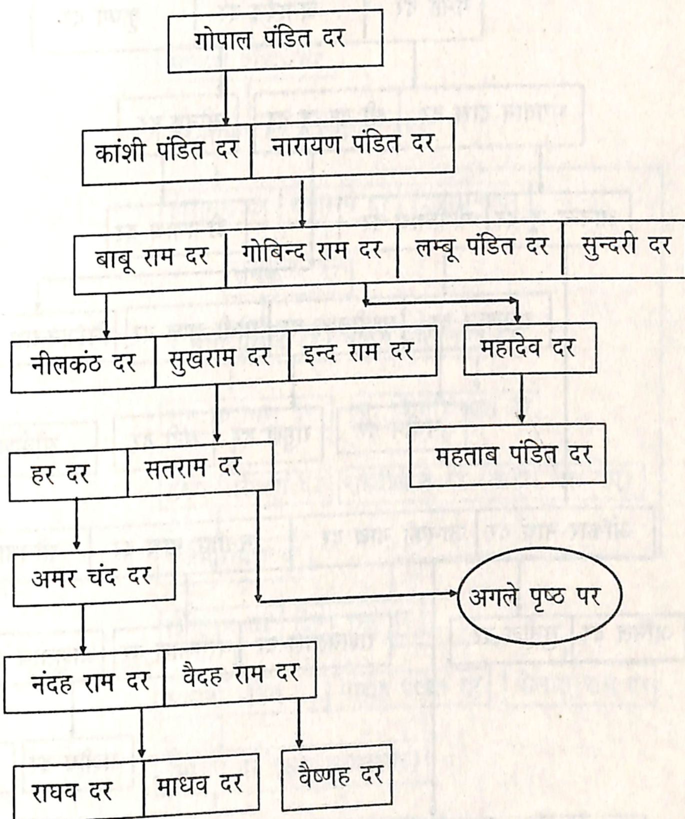
स्रोत-साभार : ** हिम्मत राम दर की वंशावली पृष्ठ 132 पर है।
* हर दर और सतराम दर की वंशावली पृष्ठ 133-134 पर है।

गोपाल पंडित दर की वंशावली....

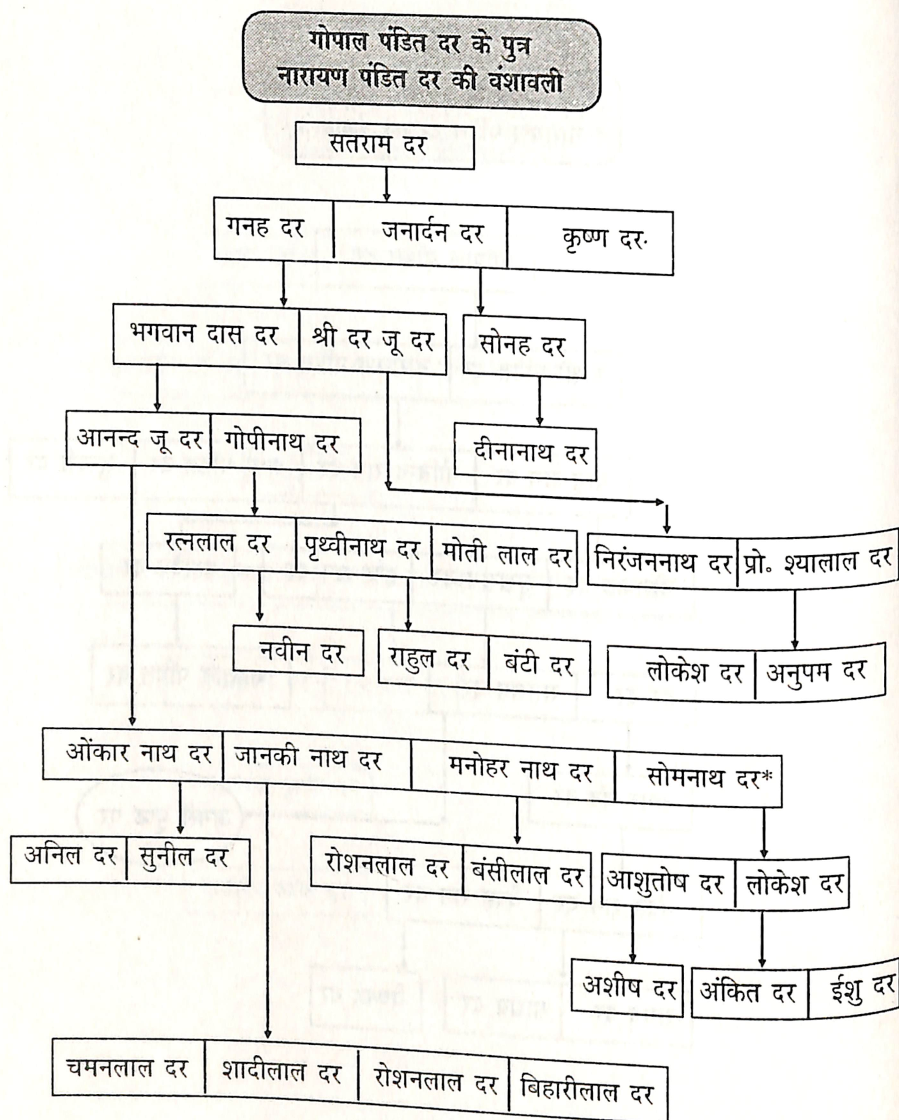


स्रोत-साभार : * पुष्करनाथ दर जनकपुरी, दिल्ली।

गोपाल पंडित दर की वंशावली...

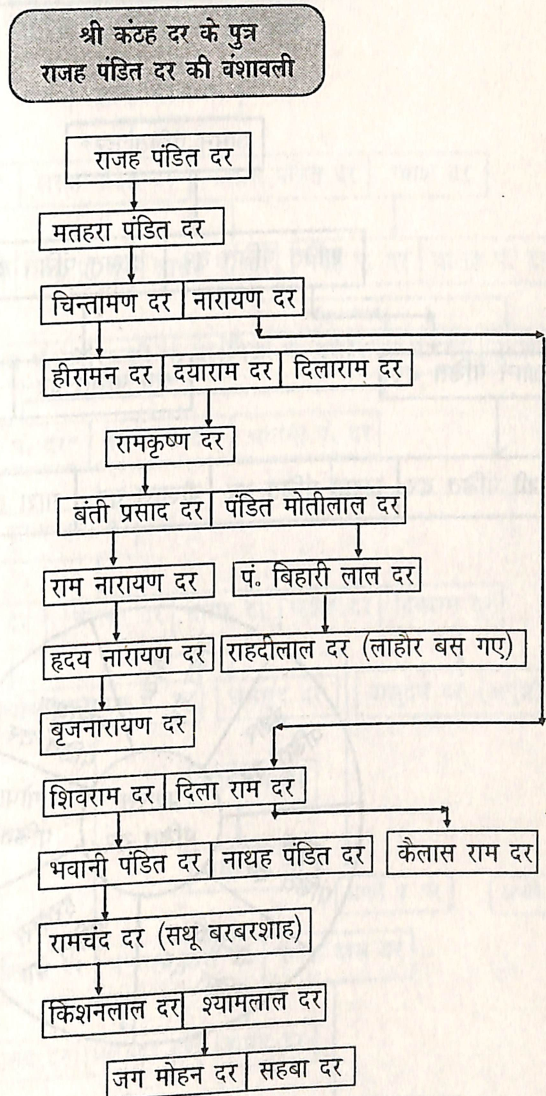


गोपाल पंडित दर की वंशावली...



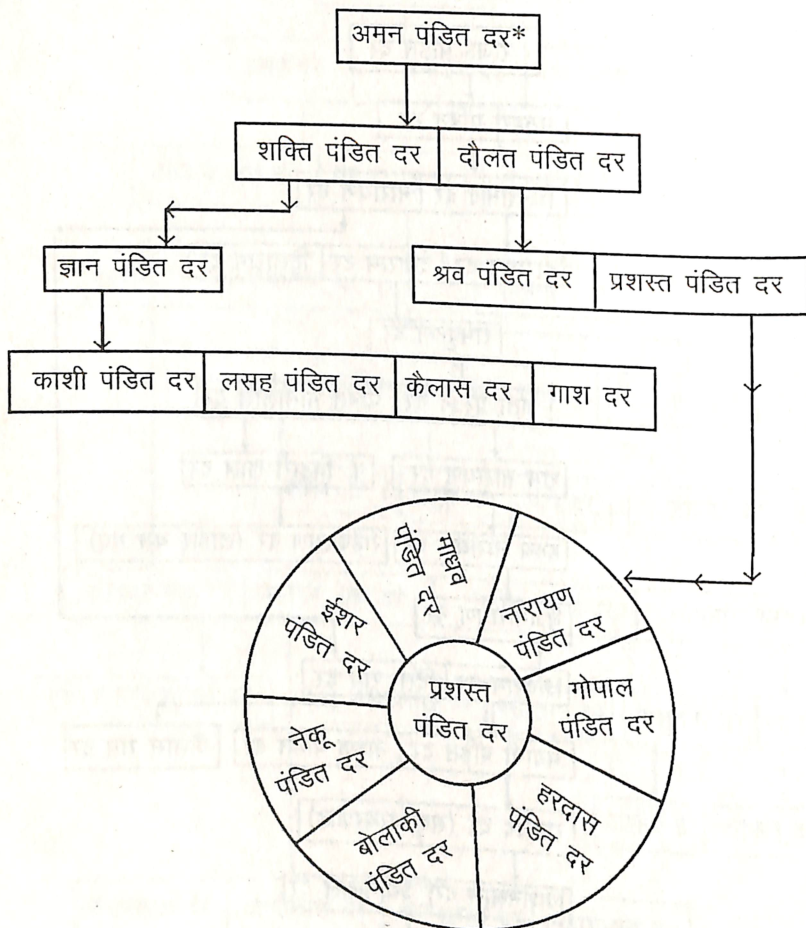
स्रोत-साभार : प्रो. सोमनाथ दर, लखनऊ।

राजह पंडित दर की वंशावली...



स्रोत-साभार : श्री बी. के. दर, नानक नगर, जम्मू।

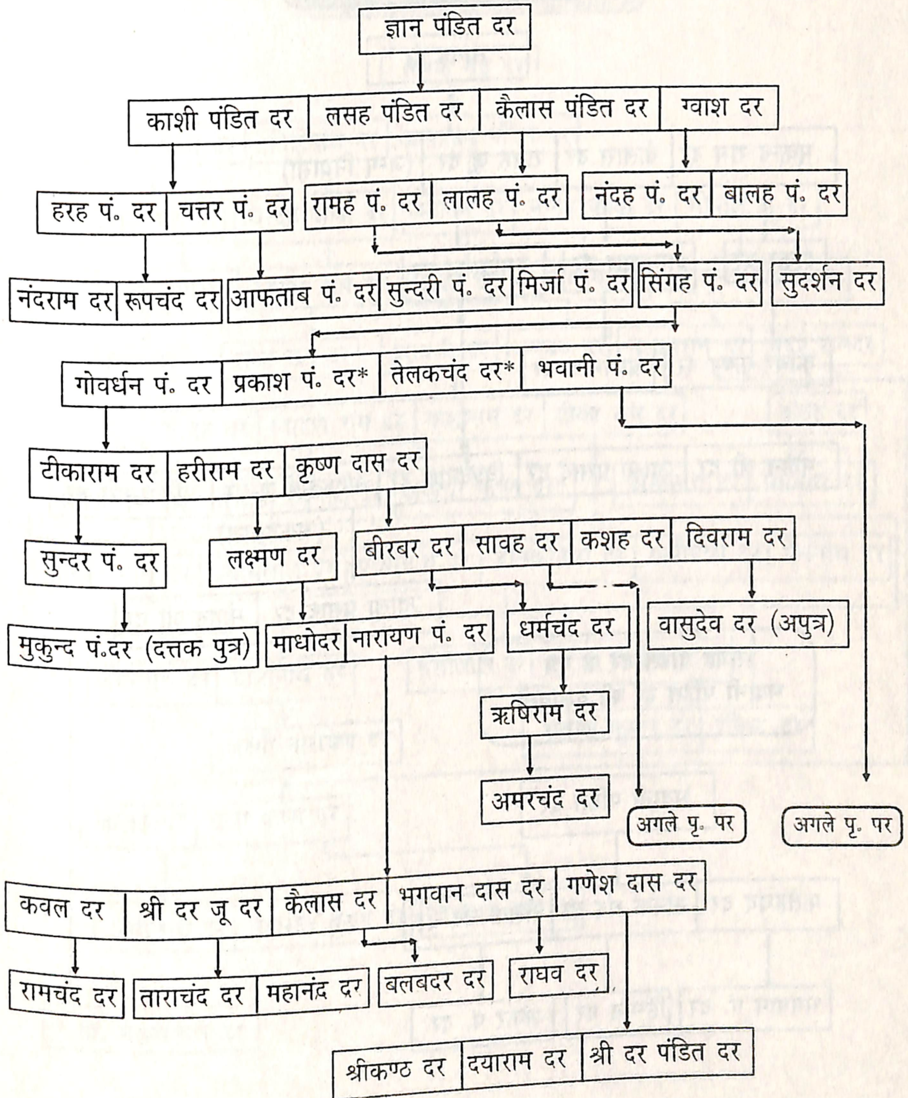
मीरू पंडित दर के पुत्र अमन पंडित दर की वंशावली



* अमन पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 136 पर है।

शक्ति पंडित दर की वंशावली...

शक्ति पंडित दर के पुत्र
ज्ञान पंडित दर की वंशावली



---

* तिलक चंद दर और पं. प्रकाश दर की वंशावली पृष्ठ 107 पर है।

शक्ति पंडित दर की वंशावली...

कृष्ण दर के पुत्र
सावह दर की वंशावली

सावह दर

मुकुन्द राम दर | कैलास दर | रामह जू दर (जम्मु निवासी)

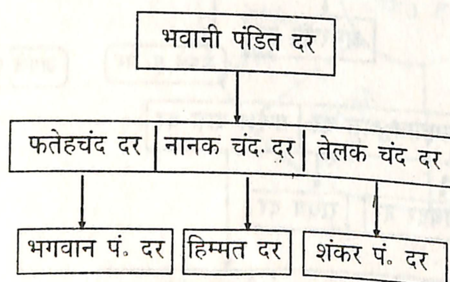
शंकर दर
शामलाल दर
दुर्गाप्रसाद दर

कोबर कृष्ण दर
प्राणनाथ दर

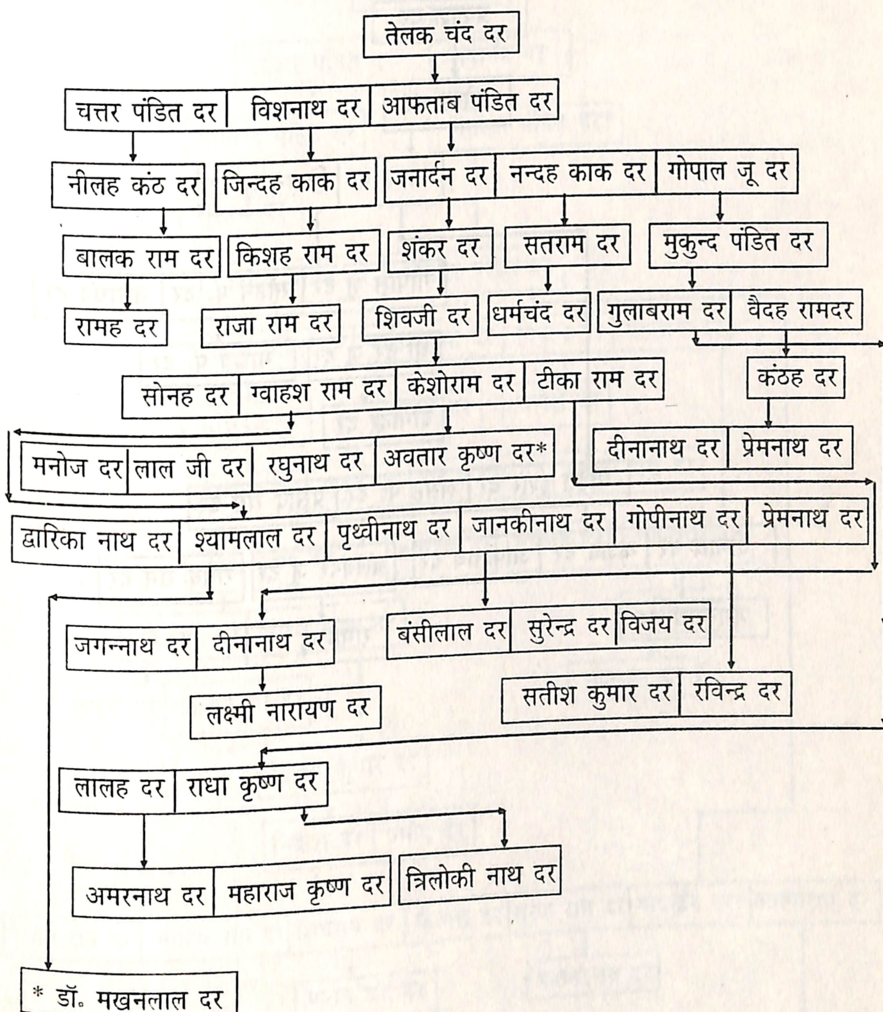
मोहन जी दर | ज्वाला प्रसाद दर | विश्वनाथ दर | आफताब जू दर (अकहलाल) | ओंकारनाथ दर

ज्वाला प्रसाद दर
मोहन जी दर

सिंगह पंडित दर के पुत्र
भवानी पंडित दर की वंशावली



शक्ति पंडित दर की वंशावली...



स्रोत-साभार : डॉ॰ मखनलाल दर, 24 कृष्णनगर, जम्मू।

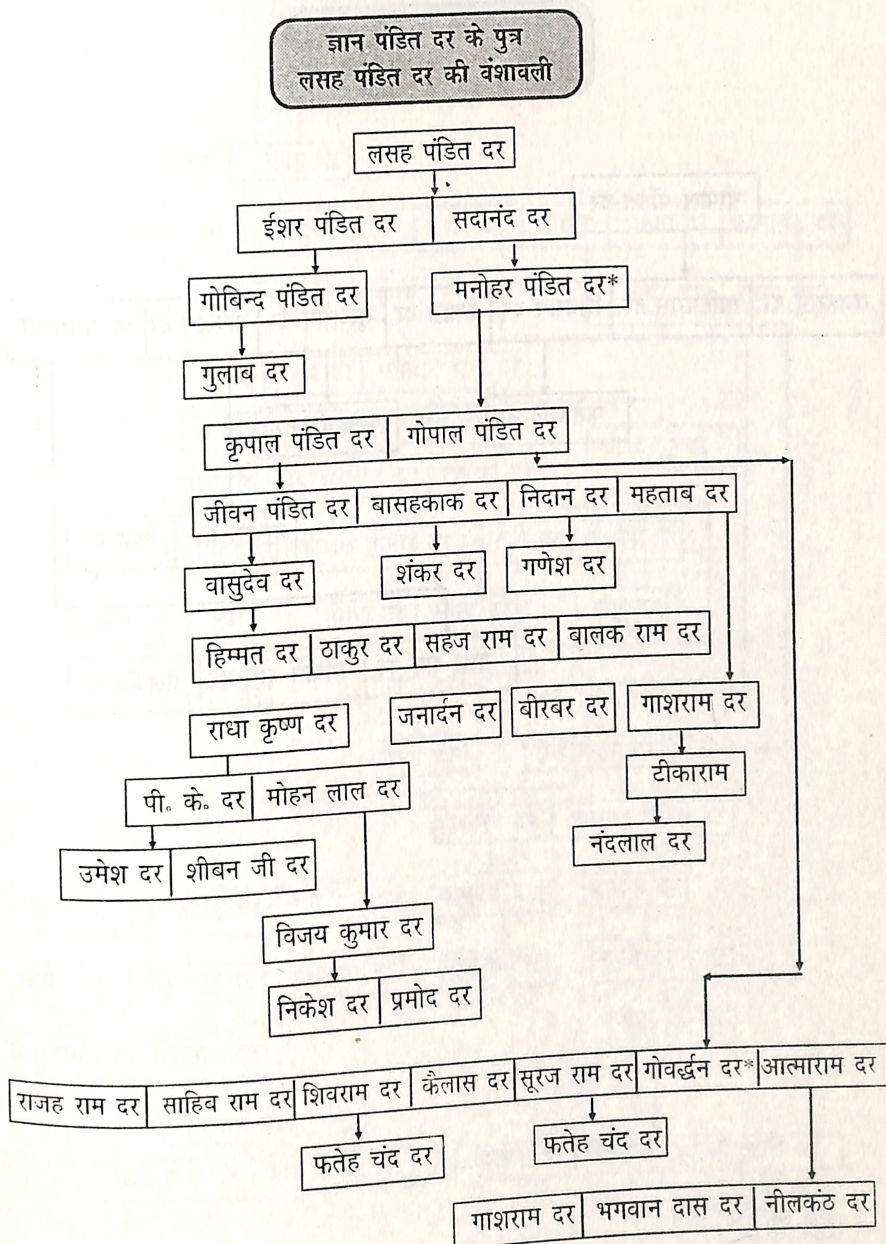
शक्ति पंडित दर की वंशावली...

सिंगह पंडित दर के पुत्र प्रकाश दर की वंशावली

- प्रकाश दर
  - सोदह दर
    - मानह दर
      - पंडित ईशर दर
        - दीनाथ दर
          - जगन्नाथ दर
        - केशव दर
        - आफताब दर
      - लसह पं. दर
        - बलबदर जू दर
          - रामह जू दर
      - प्रसाद राम दर
        - राघव राम दर
    - निदान जू दर
      - गोपाल जू दर
        - श्री दर जू दर
          - दामोदर दर
      - सोहन पं. दर
        - माधव पं. दर
      - ताराचंद दर

स्रोत/आभार : अवतार कृष्ण दर-द्वारा बी. एन. भट्ट, [illegible] कालोनी, जम्मू।

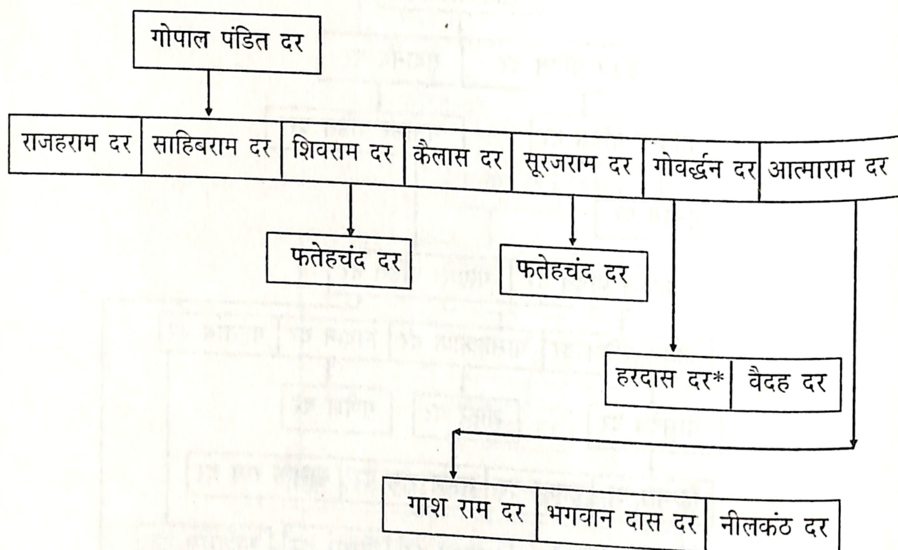
ज्ञान पंडित दर की वंशावली...



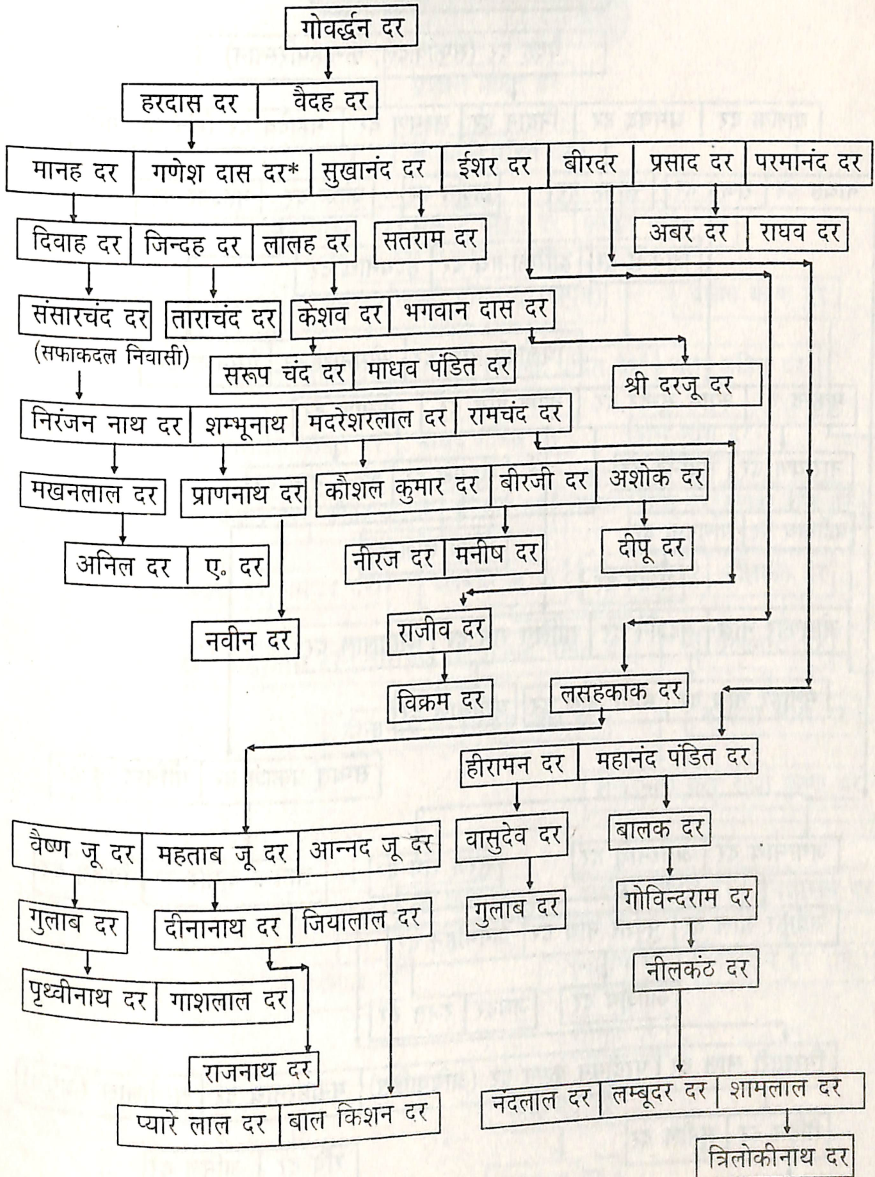
स्रोत-साभार : * गोपाल पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 161 पर है।
* श्री बी. के. दर, गांधी नगर, जम्मू।
* गोवर्द्धन दर की वंशावली पृष्ठ 175 व 176 पर है।

ज्ञान पंडित दर की वंशावली...

मनोहर पंडित दर के पुत्र
गोपाल पंडित दर की वंशावली

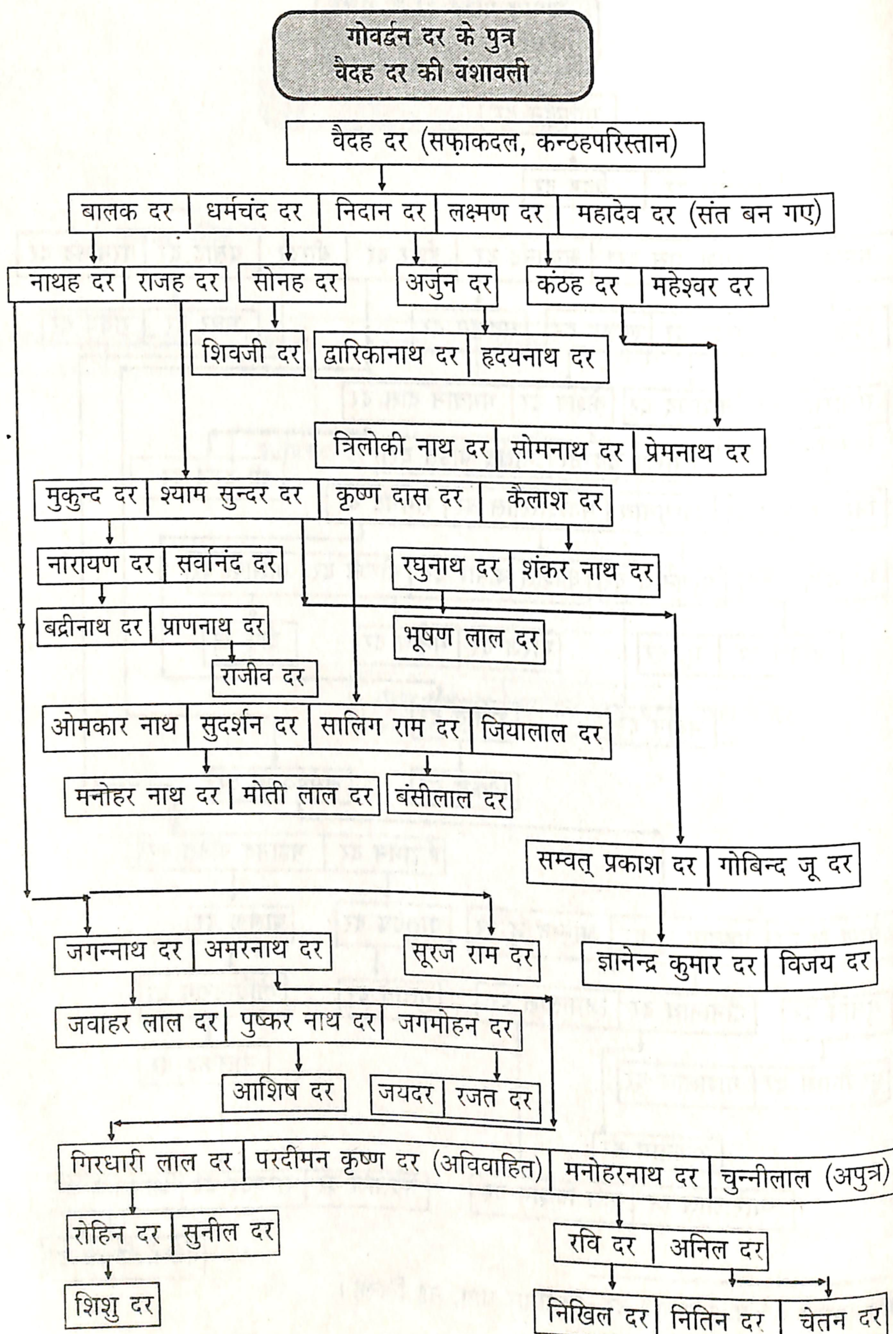


ज्ञान पंडित दर की वंशावली...



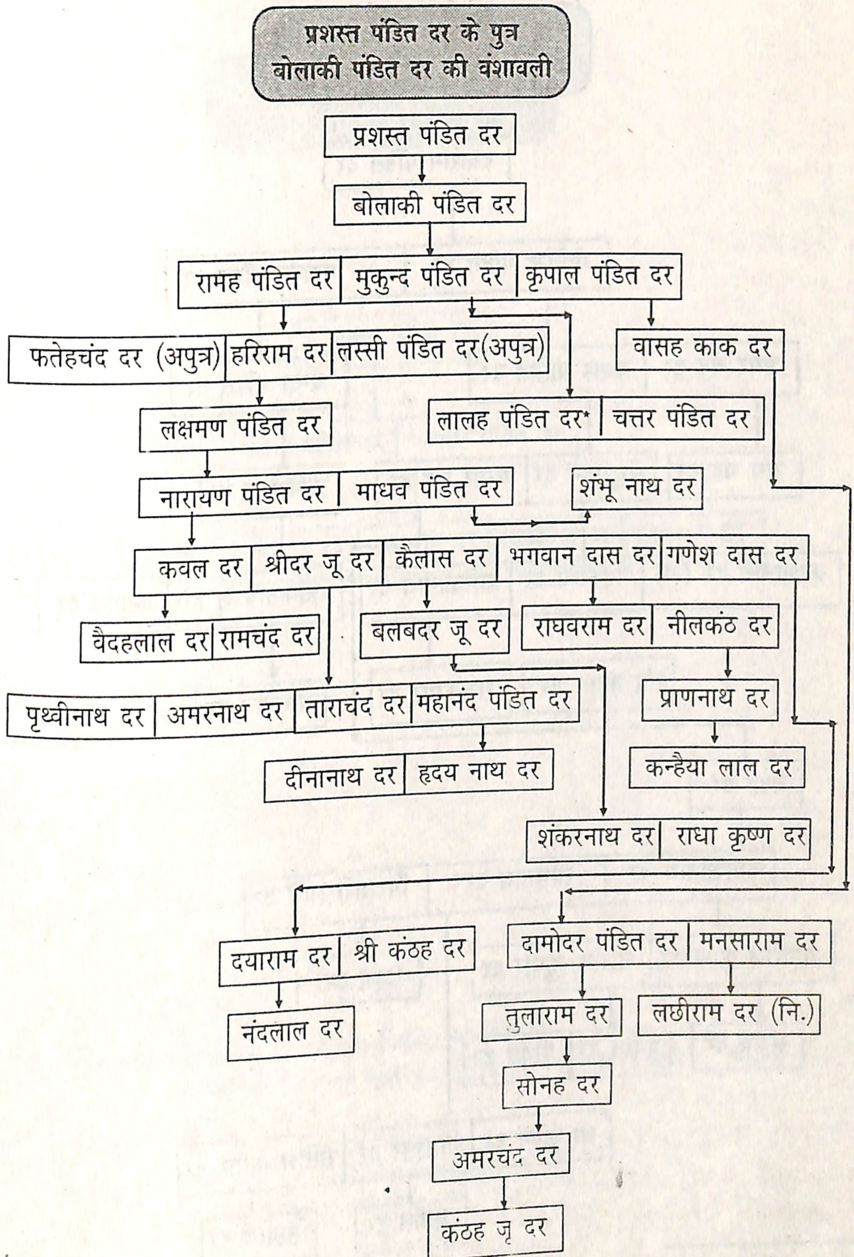
स्रोत-साभार : * पं. प्राणनाथ दर, शालीमार बाग, नई दिल्ली।

ज्ञान पंडित दर की वंशावली...



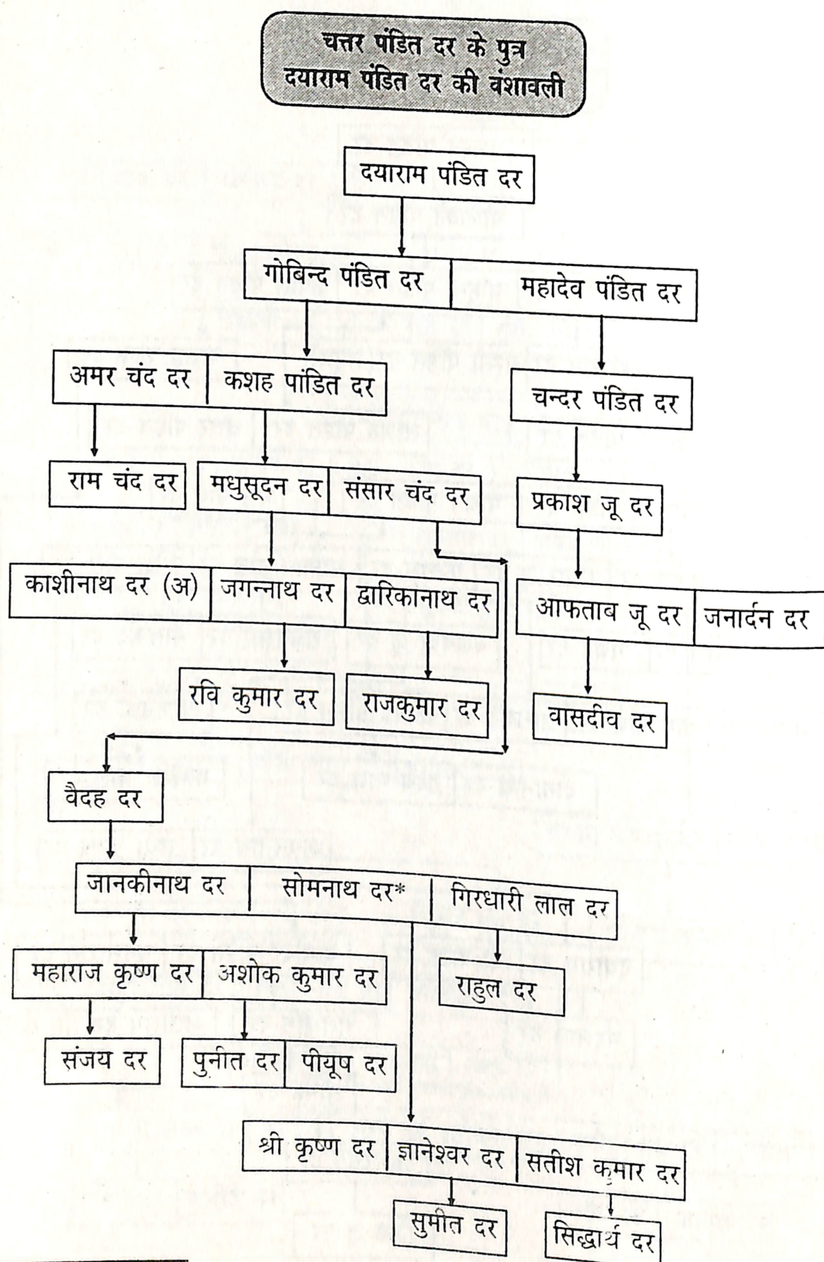
स्रोत-साभार : 1. श्री मनोहर नाथ दर, चण्डीगढ़, 2. श्री सम्वत् प्रकाश दर, दिल्ली।

प्रशस्त पंडित दर की वशांवली...



* लालह पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 160 पर है।

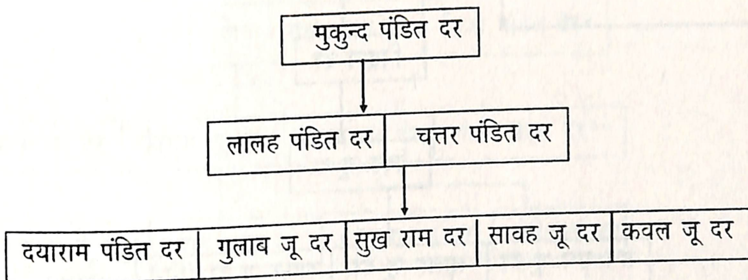
बोलाकी पंडित दर की वंशावली...



* **स्रोत-साभार :** श्री सोमनाथ दर, नारायणा विहार, नई दिल्ली।

बोलाकी पंडित दर की वंशावली...

मुकुन्द पंडित दर के पुत्र
चत्तर पंडित दर की वंशावली

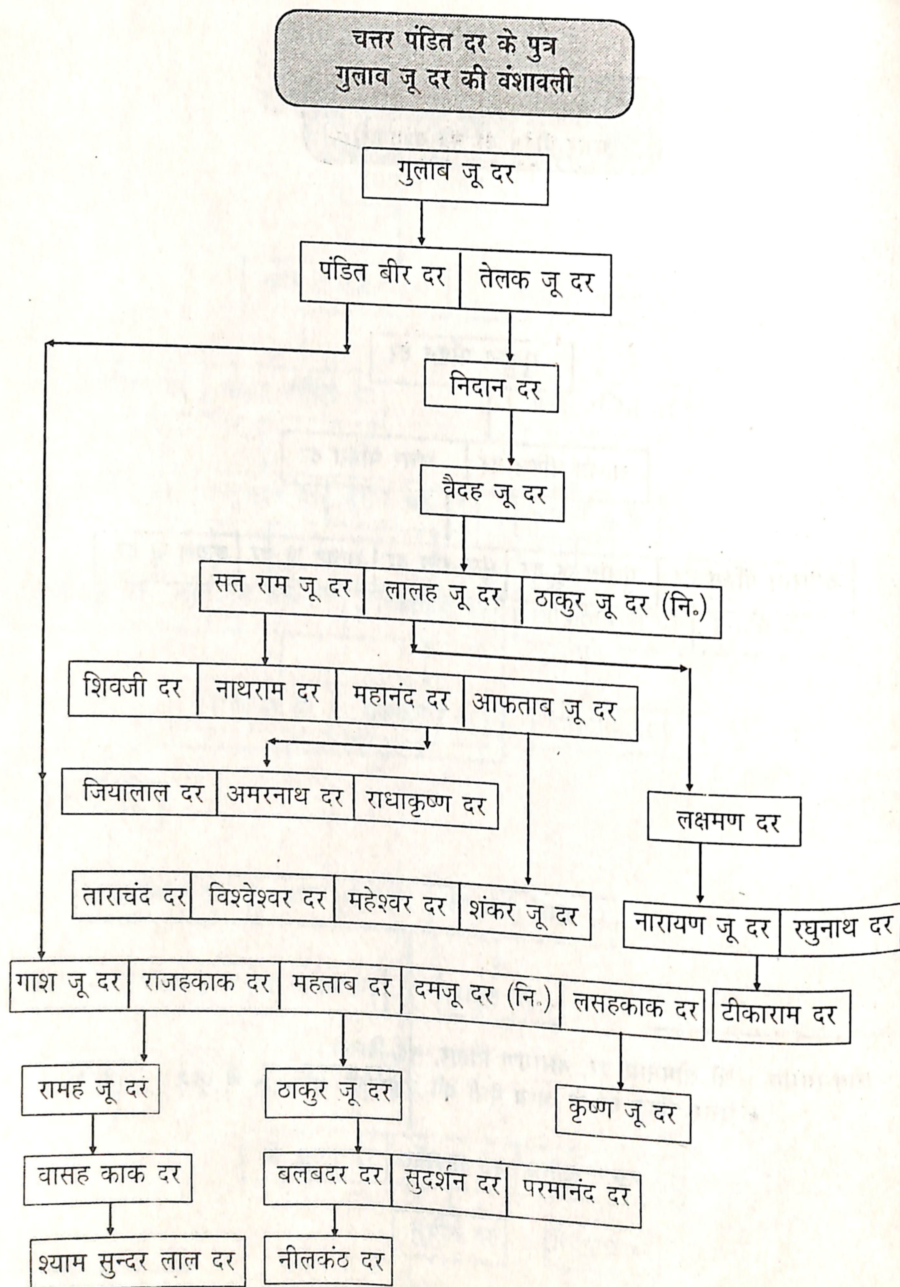


---

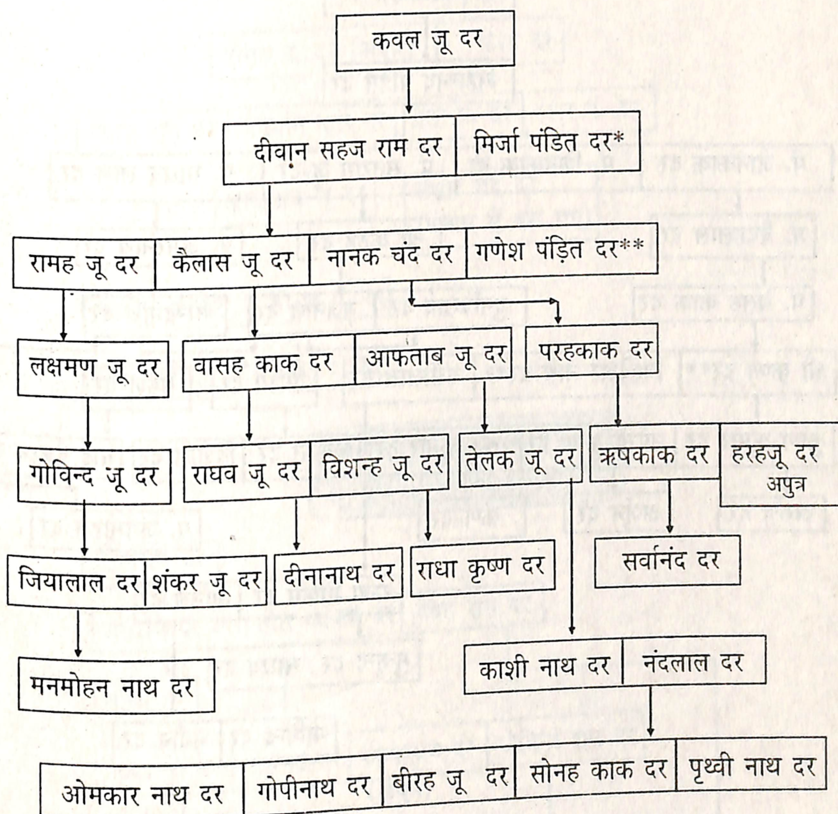
* स्रोत-साभार : श्री सोमनाथ दर, नारायण विहार, नई दिल्ली।

● चत्तर पंडित दर के अन्य पुत्रों की वंशावली, पृष्ठ 98 से पृष्ठ तक है।

बोलाकी पंडित दर की वंशावली...



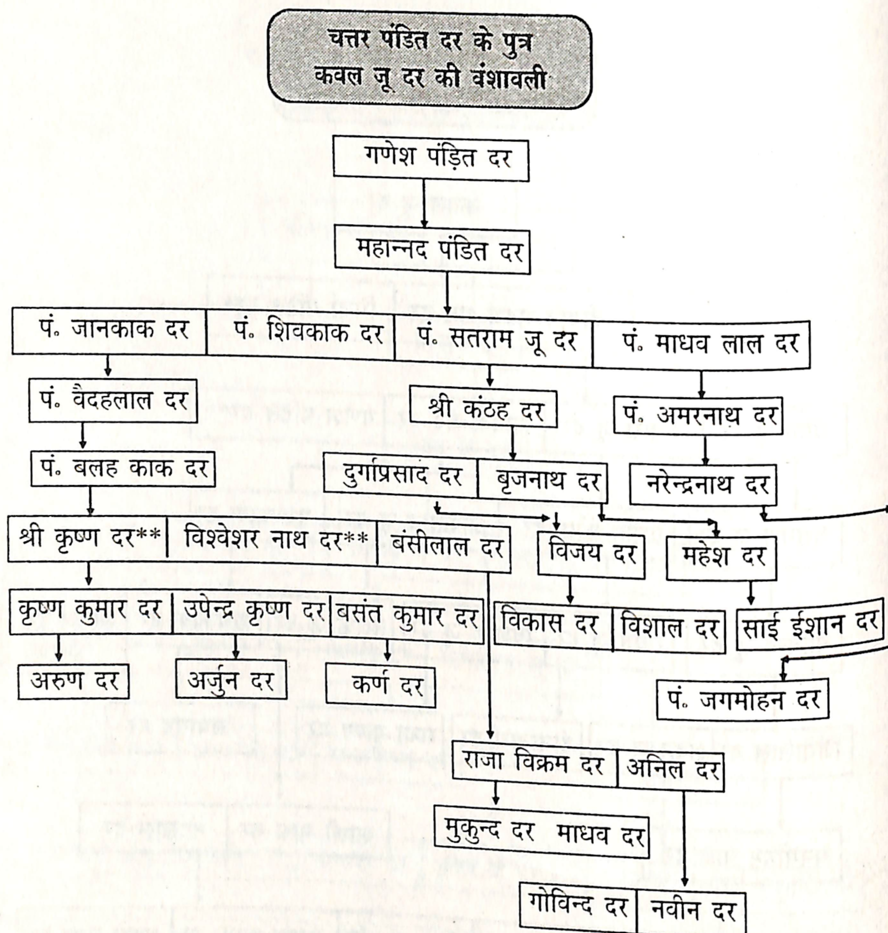
बोलाकी पंडित दर की वशांवली...



* मिर्जा पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 169 पर है।

** गणेश पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 167 पर है।

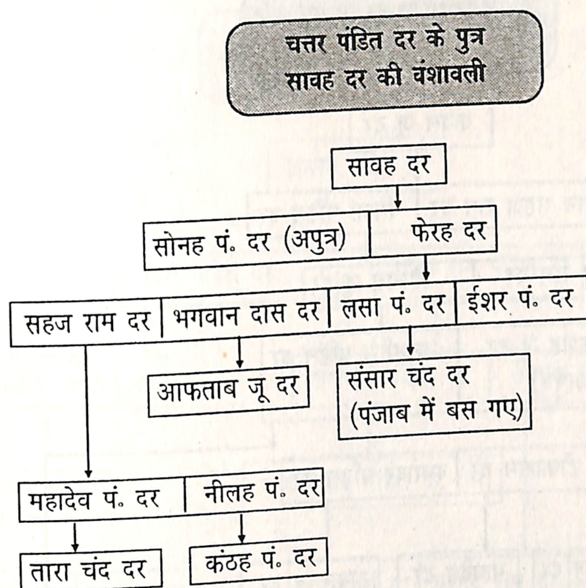
बोलाकी पंडित दर की वशांवली...

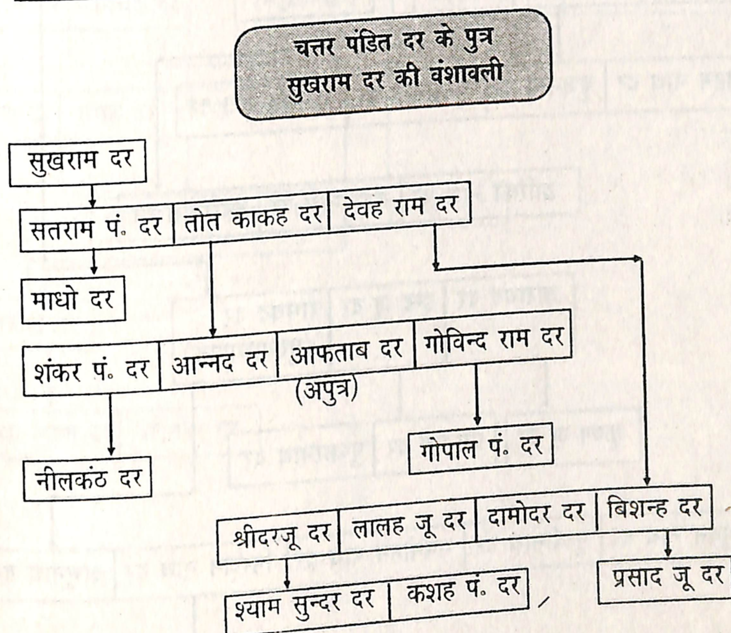


* स्रोत-साभार :

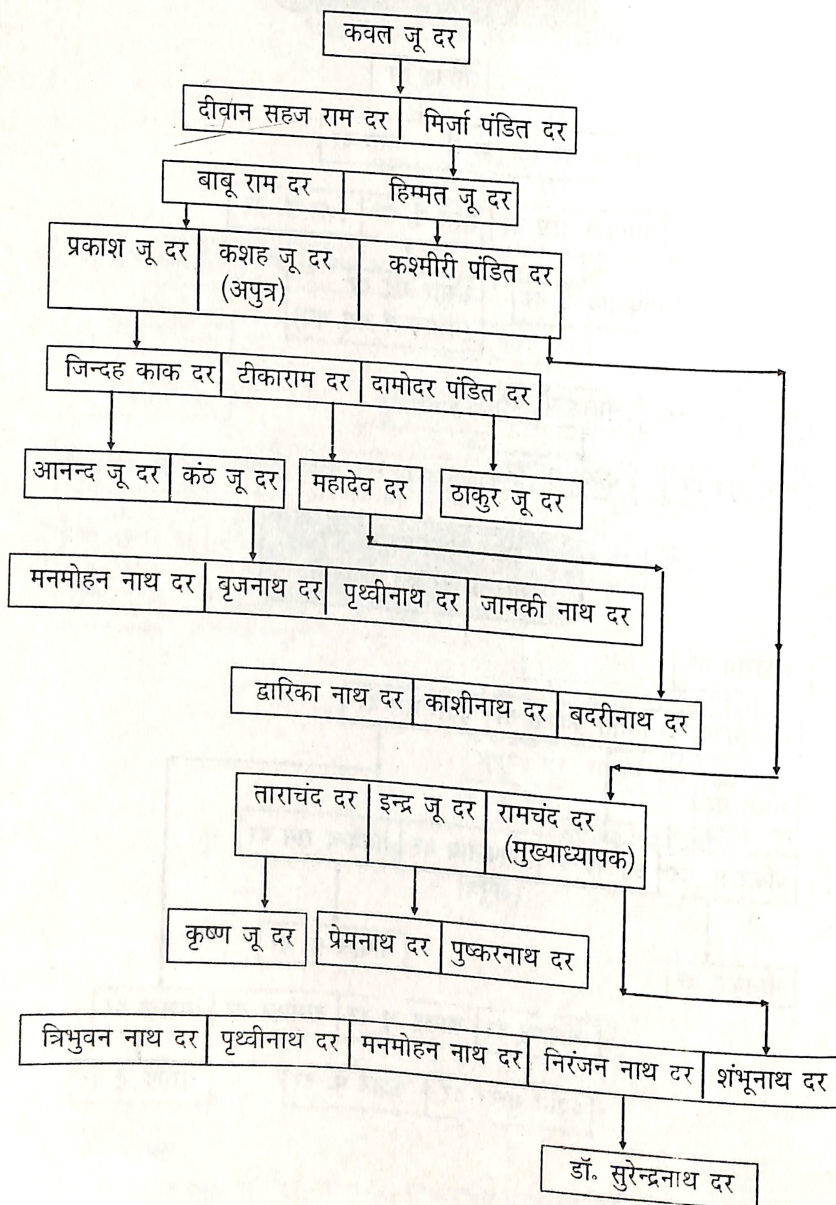
1. लै कर्नल एस॰ के॰ दर, बी 1/4, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली
2. लै. जनरल बृजनाथ दर, जम्मू।

बोलाकी पंडित दर की वंशावली...

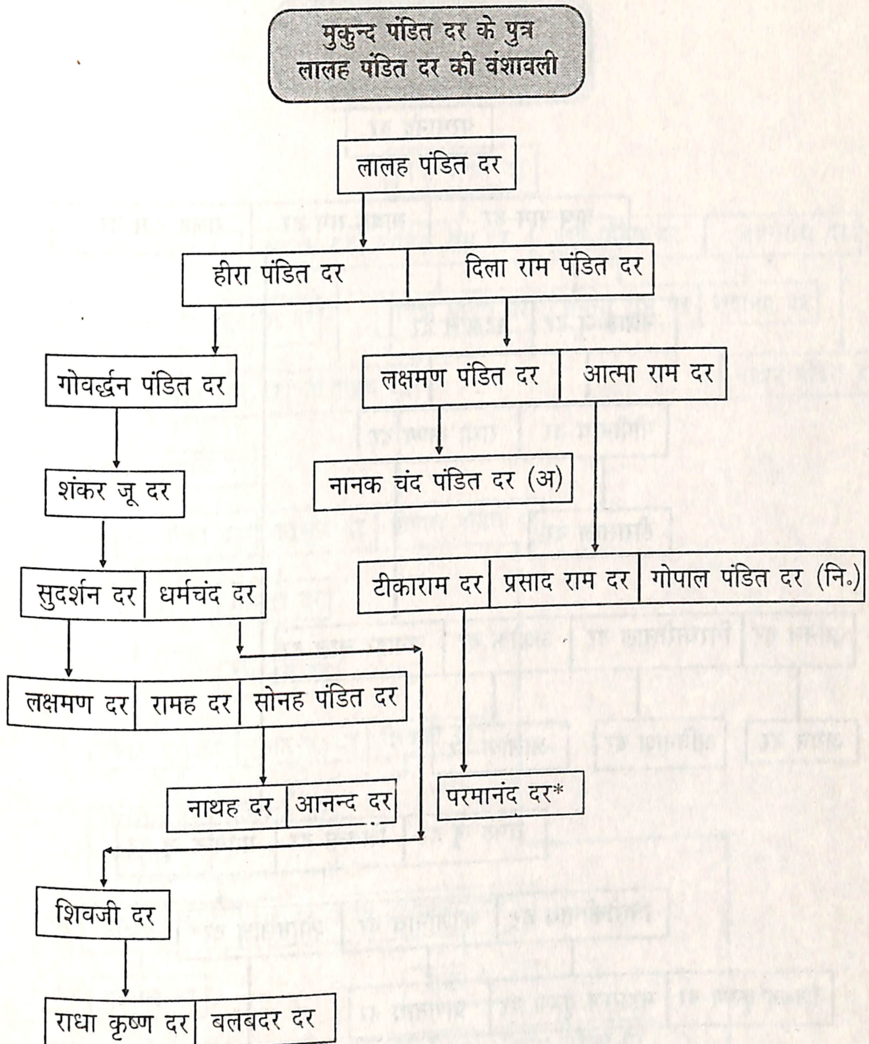




बोलाकी पंडित दर की वंशावली...

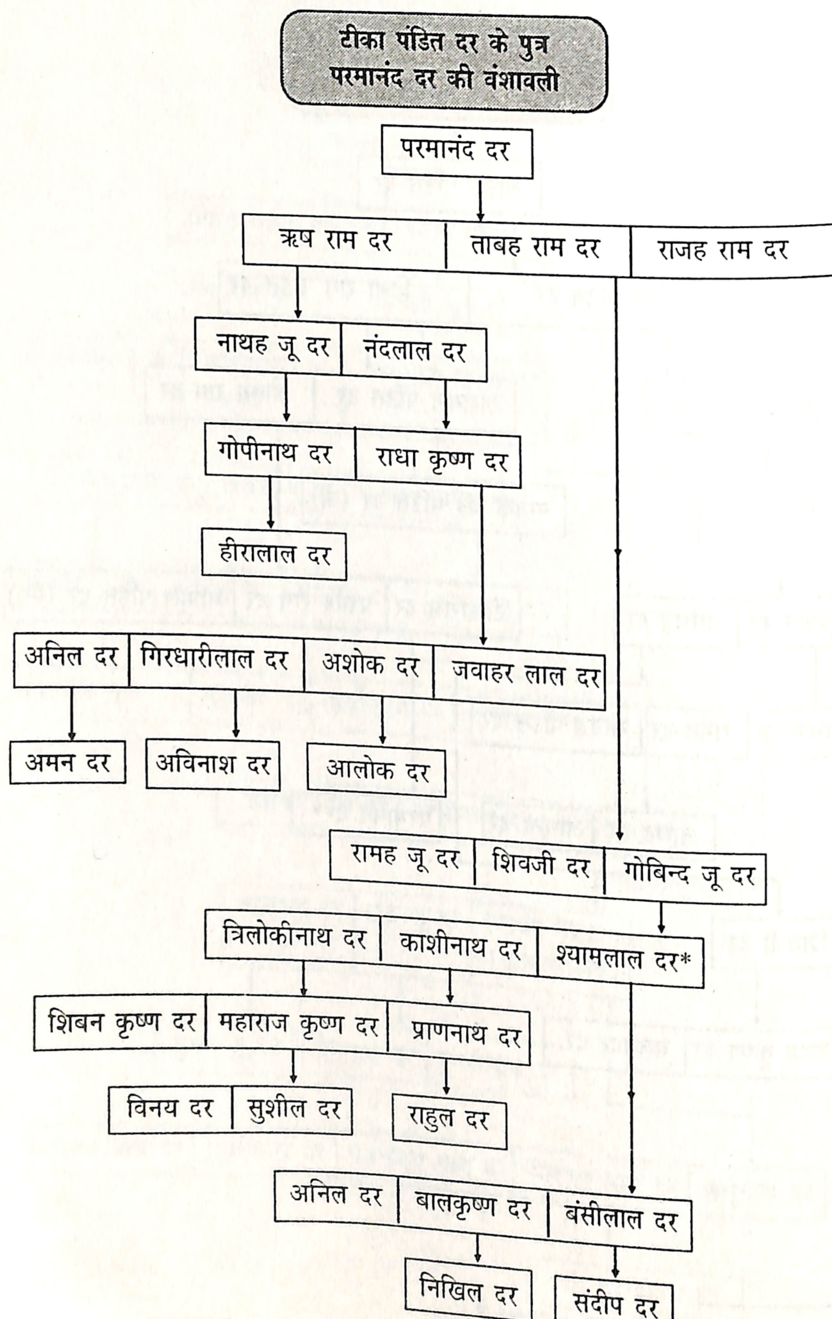


बोलाकी पंडित दर की वंशावली...



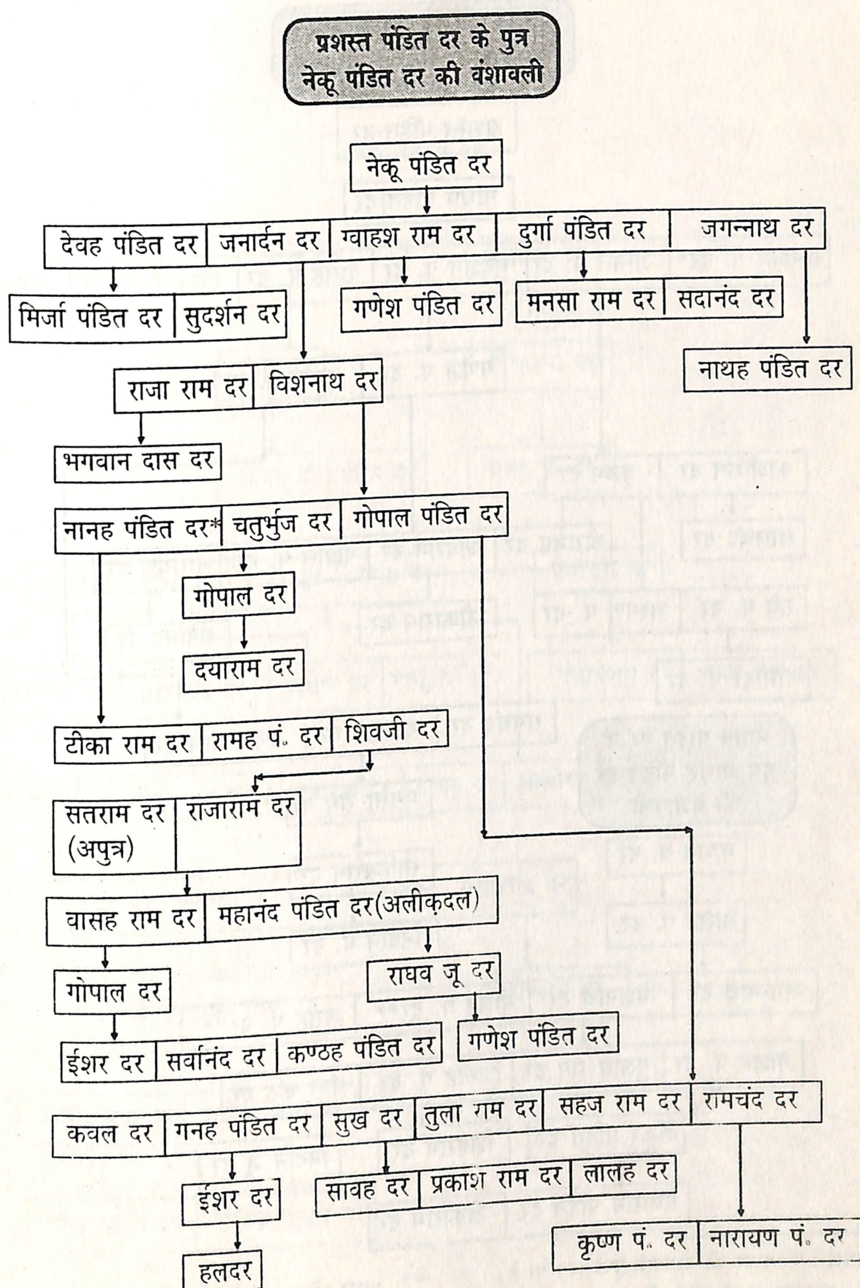
* परमानंद दर की वंशावली पृष्ठ 167 पर है।

बोलाकी पंडित दर की वंशावली...



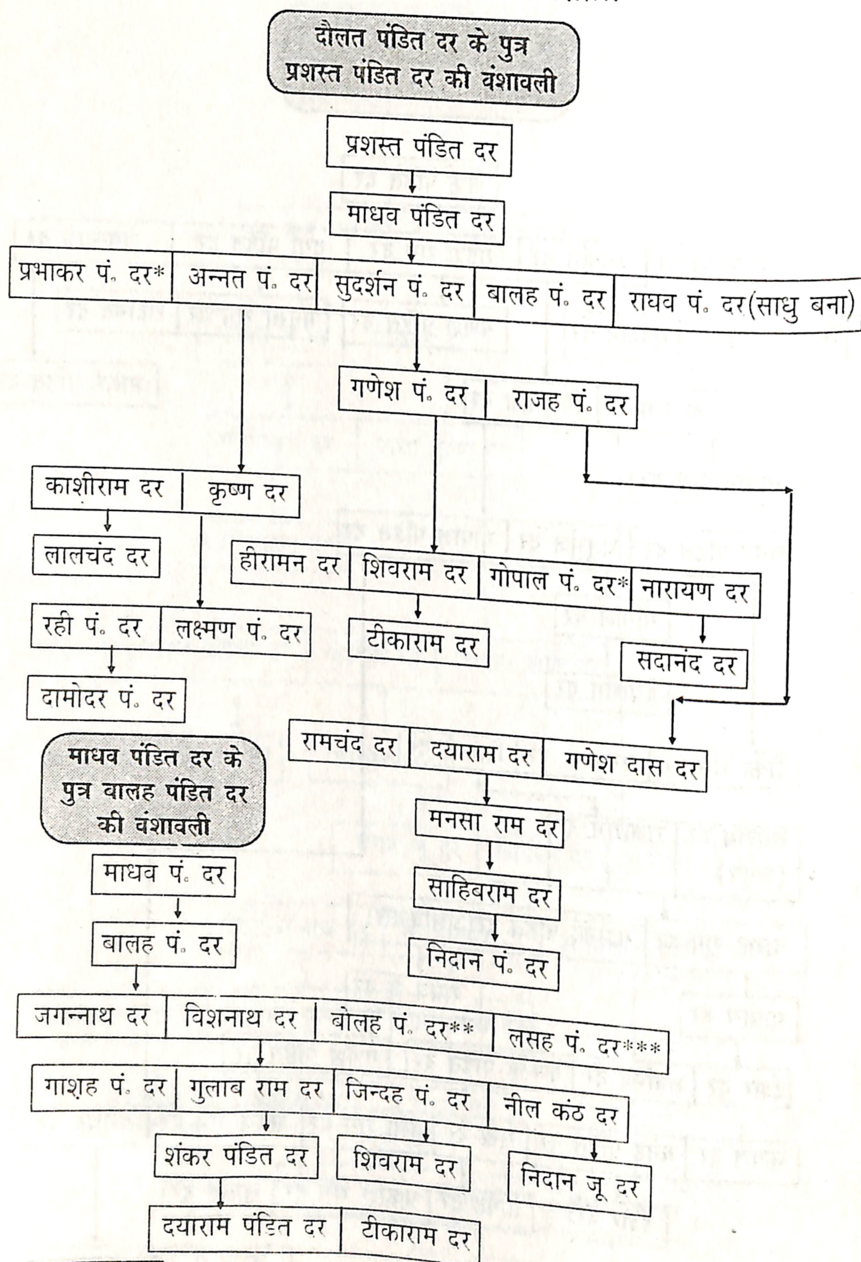
स्रोत-साभार : श्री श्यामलाल दर, कश्मीर अपार्टमैंट , प्रीतमपुरा, नई दिल्ली।

प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...



* टीका राम दर और रामह पं. दर की वंशावली पृष्ठ 102 पर है

प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...



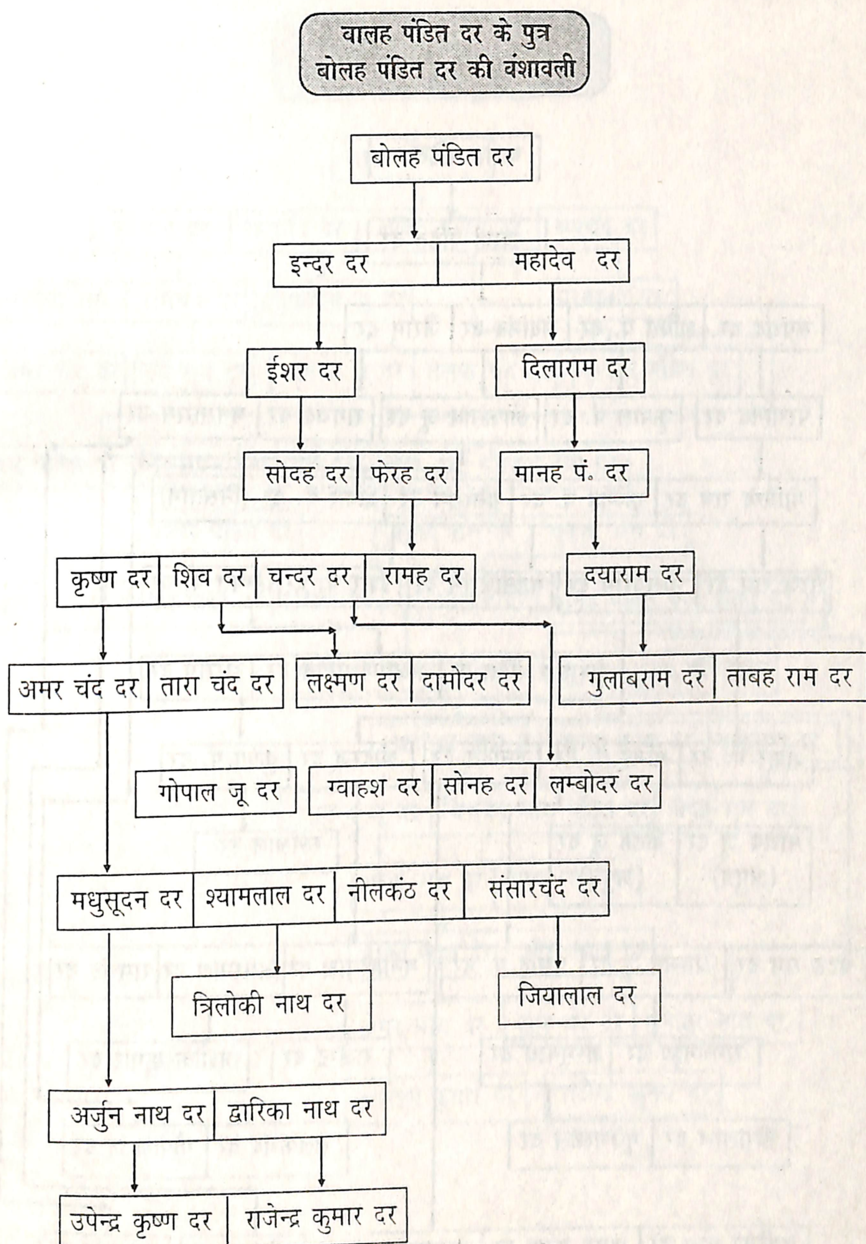
प्रभाकर पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 171 पर है।

* [illegible] की वंशावली [illegible] है।

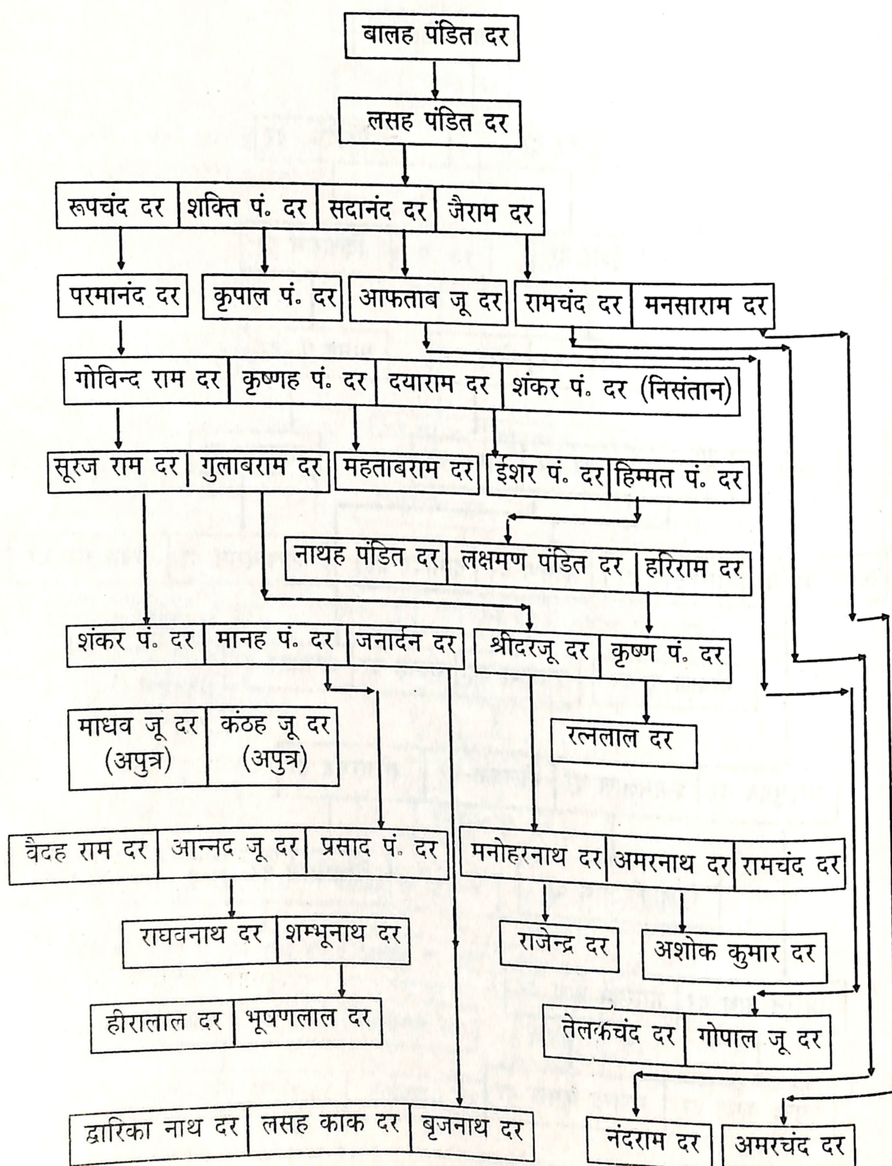
** बोलह पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 112 पर है।

*** लसह पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 112 पर है।

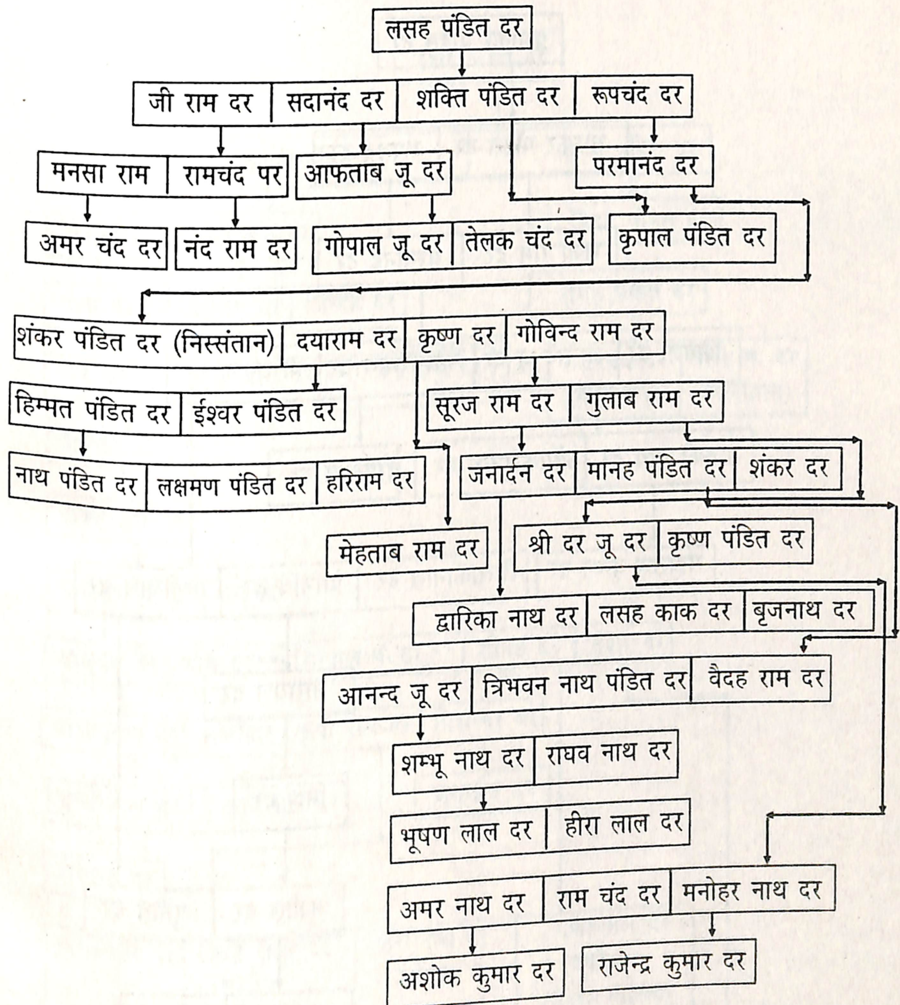
प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...



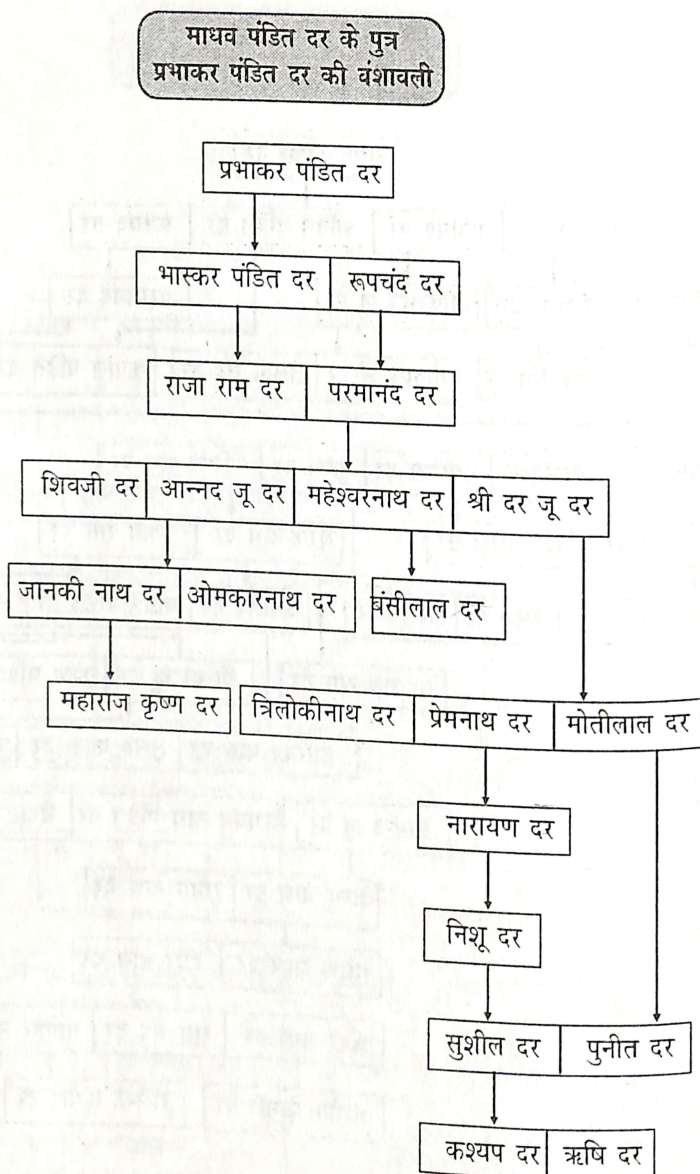
प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...



प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...

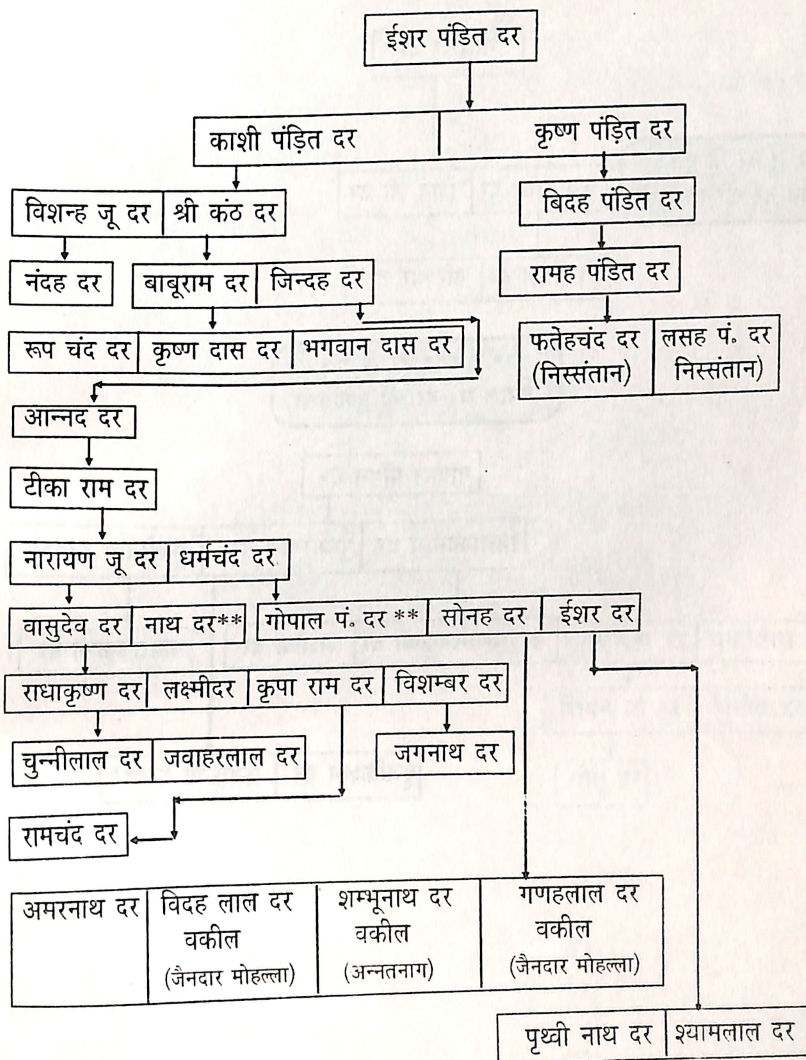


प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...



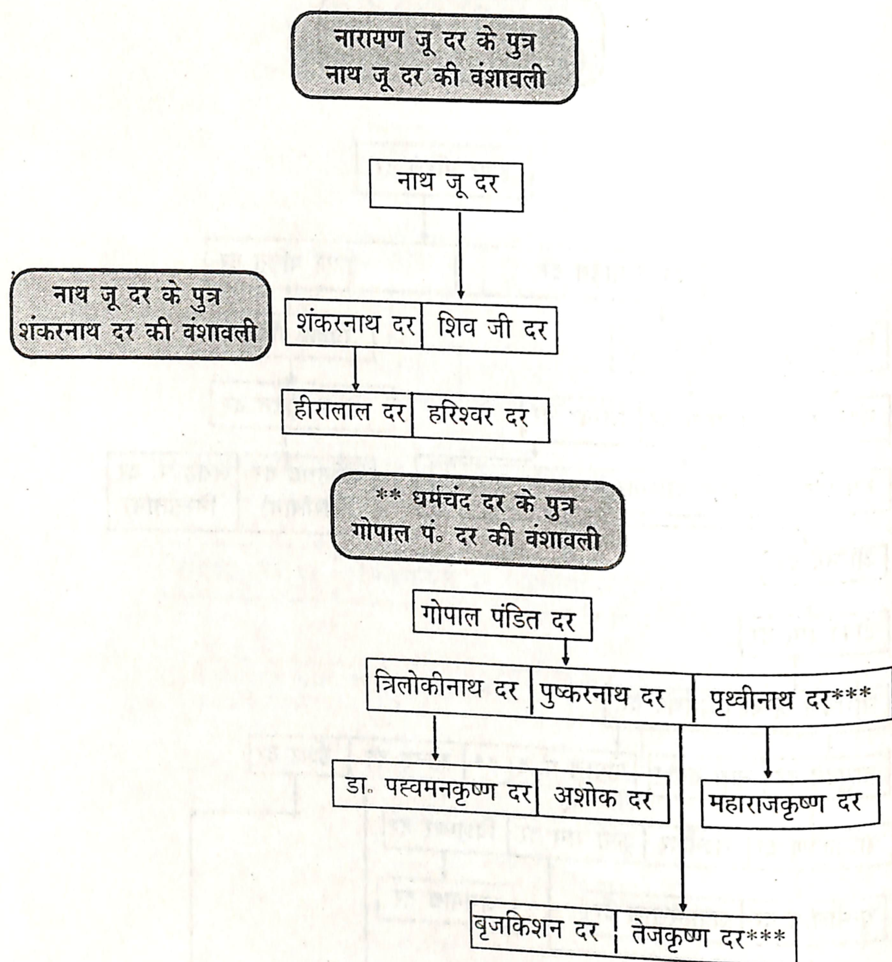
स्रोत-साभार : श्री राजनाथ दर, लोधी कालोनी, नई दिल्ली

प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...



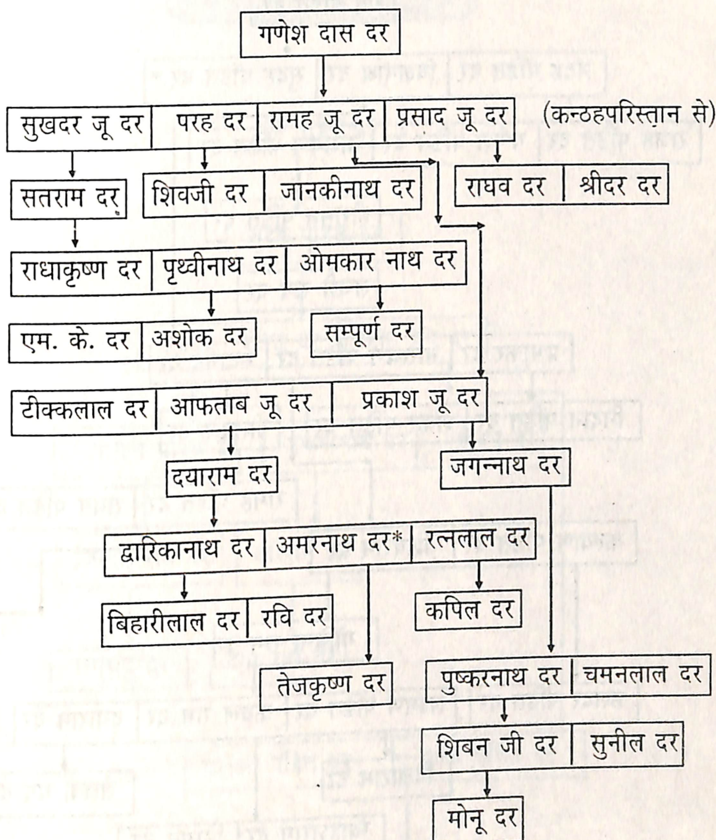
** नाथ दर और गोपाल पंडित दर की वंशावली पृष्ठ 170 पर है।

प्रशस्त पंडित दर की वंशावली...



स्रोत-साभार : *** श्री पृथ्वीनाथ दर, दिल्ली।

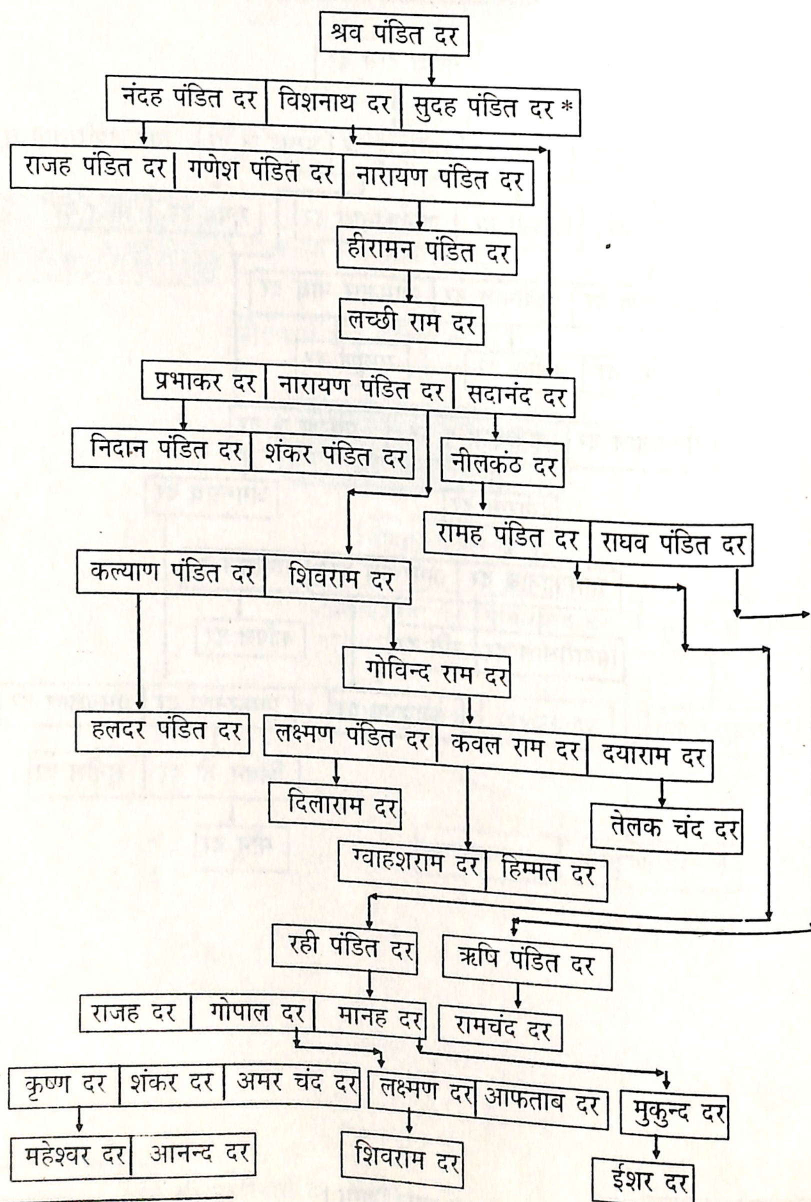
गोपाल पंडित दर की वंशावली...



* स्रोत-तालिका : 1. श्री [illegible]नाथ दर, न्यू प्लाट, जम्मू।

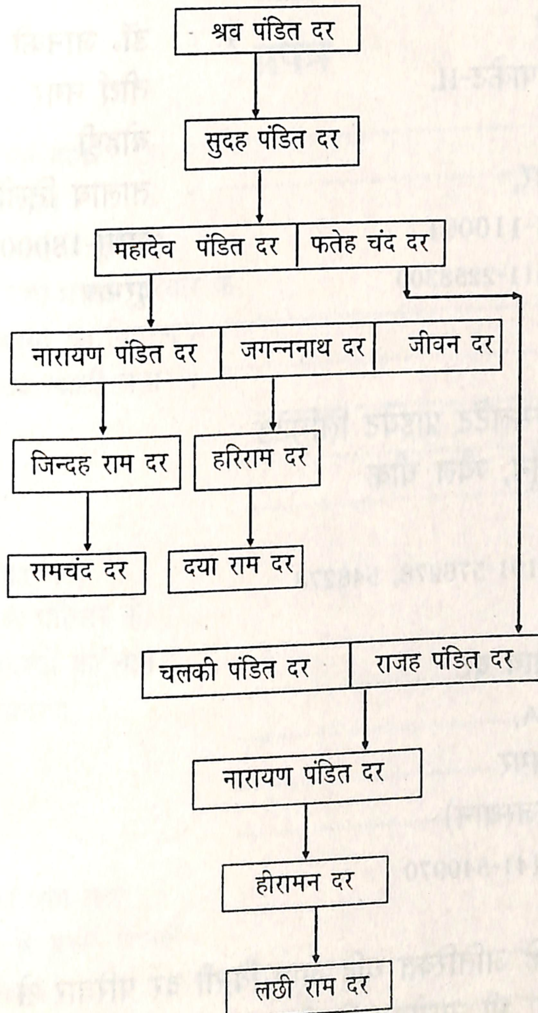
दौलत पंडित दर की वंशावली...

दौलत पंडित दर के पुत्र
श्रव पंडित दर की वंशावली



* सुदह पंडित दर की वंशावली पृ 165 पर है।

दौलत पंडित दर की वंशावली...



निवेदन

इस पुस्तक में सम्मिलित वंशावली संबंधी सूचना यदि अपुष्ट अथवा सही पृष्ठ पर अंकित नहीं है तो कृपया पृष्ठांकित प्रपत्र के निर्दिष्ट स्तम्भों में वांछित सूचना प्रदान कर निम्न पतों में से किसी एक पते पर प्रेषित कर कृतार्थ करें :

1. **सतीश दर**
282-सी, पाकेट-II,
फेज-I,
मयूर विहार,
नई दिल्ली-110091
दूरभाष : 011-2258300

2. **रवि दर**
अलख कन्सलटैंट प्राईवेट लिमिटेड
होटल अर्जुन, ज्वैल चौक
जम्मू
दूरभाष : 0191-576278, 548278

3. **त्रिलोकी नाथ दर**
353/VIII/A,
मालवीय नगर
जयपुर (राजस्थान)
दूरभाष : 0141-540970

4. **डॉ० जानकी नाथ दर**
तीर्थ नगर
बोहड़ी
तालाब तिलों,
जम्मू-180002
दूरभाष :

नोट : इसके अतिरिक्त यदि आप किसी दर परिवार से परिचित हों तो उसकी सूचना भी उपरोक्त किसी एक पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

8

प्रपत्र

1. पितामह का नाम : ....
2. पिता का नाम : ....
3. पिता के भाईयों (चाचा) के नाम तथा उनके परिवार के पुरुष सदस्यों का विवरण : ....
....
4. कश्मीर का स्थायी पता : ....
....
....
5. भाईयों का नाम एवं उनके परिवार के पुरुष सदस्यों का नाम सहित विवरण : ....
....
....
....
6. स्वयं का नाम तथा परिवार के पुरुष सदस्यों का विवरण : ....
....
....

7. पत्र-व्यवहार हेतु पता : ....
....
....

दूरभाष : ....

8. क्या पुस्तक में आपके
परिवार का विवरण दर्ज है : हां / नहीं

(अ) यदि हां तो किस पृष्ठ पर?

(ब) यदि नहीं तो आपके विचार
से यह विवरण किस पृष्ठ पर दर्ज होना चाहिए?

9. आप द्वारा प्रेषित वंशावली संबंधी सूचना का आधार क्या है?

10. क्या आप साहिब-दर हैं?

तिथि :

(हस्ताक्षर)

पूरा नाम

पता